दारोगा-दफ्तर सीरीजकी २२री पुस्तक।

सुन्दरी-डाकू

या

हीरेकी खान।

सचित्र जासूसी उपन्यास

अनुवादक

पण्डित ईश्वरीप्रसाद शर्मा।

प्रकाशक

रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर—

"वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०,"

३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

सं० १९७८ वि०

प्रथम संस्करण २०००]

[मूल्य १।।) रुपया।

सुनहरी रेशमी जिल्द २।) रुपया।

आज "दारोगा-दफ्तर-सीरीज़" का यह दूसरा ग्रन्थ भी आपकी सेवामें उपस्थित किया जाता है। पहले ग्रन्थमें जिस "साहसी-सुन्दरी अमेलिया" की कथा निकली थी, इसमें भी उसीकी लीलाओंका वर्णन है। मनोरञ्जकतामें यह पहले उपन्याससे कम नहीं; बल्कि घटना-वैचित्र्यमें उससे भी बढ़ा-चढ़ा है।

इसके बाद इस सीरीज़के तीसरे ग्रन्थ "टापूकी रानी या हवाई जहाज़" में भी इस ग्रन्थके आगेका अमेलियाकाही हाल लिखा जायेगा। मनोहरतामें वह उपन्यास भी इसीके जोड़का होगा। उसमें भी कई सुन्दर-सुन्दर चित्र दिये जायेंगे और वह भी शीघ्रही प्रकाशित होगा।

जो लोग मिस अमेलियाकी पूरी-पूरी क्रमबद्ध कथा पढ़नेकी इच्छा रखते हों, उन्हें इस सिलसिलेके अनुसार निम्नलिखित चारों ग्रन्थ अवश्य पढ़ने चाहियें :—

(१) साहसी सुन्दरी या समुद्री डाकू।

(२) गुलाबमें काँटा।

(३) सुन्दरी डाकू या हीरेकी खान।

(४) टापूकी रानी या हवाई जहाज़।

आशा है, कि इस सिलसिलेके अनुसार अमेलियाकी पूरी कथा पढ़नेसे पाठकोंको अधिक आनन्द आयेगा।

निवेदक,

ईश्वरीप्रसाद शर्मा।

सुन्दरी-डाकू

पूर्व-कथा

जाड़ेका मौसिम है। कैनेडा-राज्यके उत्तरी हिस्सेमें कैसी कड़ाकेकी सर्दी पड़ती है, वह इस गरम मुल्कके पहाड़ी हिस्सेमें रहनेवालोंको भी समझमें आना मुश्किल है।

ऐसेही कठिन जाड़ेके दिनोंमें, एक दिन एक युवक, सन्ध्याके समय, कैनेडा-राज्यके सीमान्तपर फैले हुए सुप्रसिद्ध रौकी-पर्वतकी तराईमें बसे हुए एडमन्टन-ज़िलेके उत्तरी हिस्सेके लम्बे-चौड़े जङ्गलके भीतर एक कुटियामें आगके पास बैठा हुआ, खानेकी तैयारी कर रहा था। रूखा-सूखा मांस आगमें झुलस कर, रोटी, मक्खन और टीनके बक्समें भरे हुए सूखे व्यञ्जनोंके साथ खानेके सिवा इस दुर्गम वनमें और कुछ नहीं मिल सकता था; क्योंकि बस्ती वहाँसे बहुत दूर थी—आस-पासमें कहीं आदमी या आदमज़ादकी सूरततक नहीं दिखाई देती थी। युवक अपने खाने-पीनेका सामान अपने साथही लेता आया था, नहीं तो इस निर्जन वनमें उसे भूखों मरनेकी नौबत आ जाती।

दो दिन पहले, वह युवक "पीस-रिवर" ज़िलेमें भटक रहा था। वहाँसे घूमता-घामता यहाँ आ पहुँचा था। वह कुछ पैदल नहीं आया था ; बल्कि कुछ दिनोंके लिये खाने-पीनेका सामान साथ ले, एक छोटीसी गाड़ीपर सवार होकर आया था ; परन्तु वह घोड़े, गधे या ऊँटकी गाड़ी न थी, बल्कि उस गाड़ीको कुछ कुत्ते यहाँतक घसीट लाये थे !

भूखसे व्याकुल हो वे कुत्ते, कुटियाके सामने बैठे हुए, जाड़ेके मारे काँप रहे थे। अपना पेट भरकर युवकने मांसके कुछ टुकड़े उन कुत्तोंको भी खानेके लिये दिये। जब वे खा चुके, तब युवक उन्हें वहाँसे लेजाकर पासहीकी एक कुटियामें बाँध आया। उस समय सन्ध्याकी अँधियारी बहुत बढ़ गयी थी।

युवकका नाम 'स्पाइक्स-कार्टर' है। उसकी उमर तेईस-चौबीस वर्षसे अधिक न होगी। वह अस्ट्रेलियासे चलकर अपने भाग्यकी परीक्षा करनेको लिये कैनेडा-राज्यमें आया था। वह कैनेडाके बहुतसे नगरोंमें घूम चुका है। सोनेकी खानोंकी तलाशमें कैनेडाके जो सब आदमी दल बाँधकर इधर-उधर घूमते-फिरते थे, उनके साथ-साथ स्पाइक्स-कार्टर भी बहुतेरे खानोंमें चक्कर लगा चुका है। कोई ऐसा दल नहीं, जिसके साथ वह एकबार न घूमा हो। इसीलिये 'चिली' तकके खान खोदने-वाले उसके नामसे परिचित होगये थे। इन खान खोदनेवालोंने किसी-किसी खानमें सोना पाया भी था और नियमके अनुसार स्पाइक्स-कार्टरको भी उसमें हिस्सा मिला था ; पर उसने जो कुछ पाया, सब बेंककर जुआ खेल डाला। अन्तमें वह अकेलाही

घूमता हुआ यहाँतक आ पहुँचा। उसे खबर मिली थी, कि यहाँ कहीं पासमेंही सोनेकी खान है। 'निकोलसन-पोस्ट' नामक स्थानकी सोनेकी खानका पता अबतक किसीको नहीं लगा है, यही सुनकर वह बहुत आशा करके यहाँ आया था। इस कुटियासे थोड़ीही दूरपर 'निकोलसन-पोस्ट' है।

खाने-पीनेके बाद, आगके पास बैठा हुआ स्पाइक्स-कार्टर चुरुट पीने और अपने भाग्यपर विचार करने लगा। सन्ध्या होनेके कुछ पहलेसेही आकाश मेघाच्छन्न होरहा था—अबके बड़े ज़ोरकी आँधी उठी।

एकाएक आँधीकी सनसनाहटके साथ-ही-साथ उसको किसी मनुष्यके कातर कण्ठका आर्त्तनाद सुनाई दिया। एक बार, दो बार नहीं, तीन बार वह शब्द उसके कानोंमें पड़ा। तब उसने सोचा, कि यह तो किसी राह भूले हुए पथिककी चिल्लाहट मालूम होती है, इसमें तनिक सन्देह नहीं। ऐसा विचार कर उसने तुरतही अपनी कुटियाका द्वार खोला और झटपट बाहर चला आया।

उस समय बाहर प्रकृति-देवीकी भयङ्कर लीला जारी थी! आँधीके साथ-साथ पानीही नहीं, पत्थर भी बरस रहे थे! बादलोंकी गरज-तड़कसे वसुधा काँप रही थी—बड़े-बड़े वृक्षोंकी लम्बी-लम्बी डालें बड़े ज़ोरसे हिल रही थीं। स्पाइक्स-कार्टर अपनी कुटियासे निकलकर कुछही गज़के फ़ासलेपर खड़ा हो गया और कान लगाकर उसी आवाज़को सुनने लगा। प्रायः दोही-तीन मिनट बाद उसे वैसाही आर्त्त नाद फिर सुनाई दिया।

अब उसे मालूम पड़ा, कि वह आवाज़ थोड़ीही दूरपरसे—जहाँसे घोर जङ्गल आरम्भ हुआ है, वहींसे—आरही है।

स्पाइक्सकी कुटीका द्वार खुला था, इसलिये भीतरकी आगकी रोशनी बहुत दूरतक प्रकाश फैला रही थी। उसी रोशनीके सहारे वह उस शब्दकी सीधपर चल पड़ा।

प्रायः सौ गज़ जानेपर उसने देखा, कि सामनेही विकट जङ्गल है। उस अन्धड़-तूफ़ानमें—रातकी अँधेरीमें—घोर वनमें प्रवेश करनेका उसे साहस न हुआ। तब उसने वहीं खड़े होकर चिल्लाना शुरू किया और बड़ी तेज़ निगाहोंसे चारों ओर देखने लगा। स्पाइक्स-कार्टरकी वह ज़ोरकी चिल्लाहट सुनतेही बायीं ओरसे एक पथिकने धीरेसे आर्त्तनाद किया। इससे उसने अनुमान किया, कि वहाँसे चारही-पाँच गज़की दूरीपर बायीं तरफ़ कोई आदमी, घायल हो, पृथ्वीमें पड़ा हुआ, कराह रहा है।

किसी तरह अँधेरेमें टटोलता हुआ स्पाइक्स-कार्टर उस आदमीके पास जा पहुँचा। कठिन शीतके मारे वह बेचारा पथिक एकदम जड़सा होरहा था—उसकी देहपर बरफ़का ढेर-सा लग गया था। स्पाइक्स-कार्टर बलवान् युवक था। उसने उस पथिककी देहपरसे बरफ़ हटाकर उसे गोदमें उठा लिया और उसे लिये हुए बड़े कष्टसे अपनी कुटियामें लौट आया। उसने कुटीका द्वार बन्दकर पथिकको उस कमरेमें एक छोटीसी चौकी-पर सुला दिया। इसके बाद वह एक बत्ती जलाकर उसे सिरसे पाँवतक अच्छी तरह देखने लगा।

उसने देखा, कि पथिक बूढ़ा हो चला है; परन्तु वह अपनी

उमरकी बनिस्बत बहुतही बूढ़ा और कमज़ोर होगया है। उसके बरफ़कैसे उजले बाल खूब लम्बे हैं और कन्धेतक लटक रहे हैं। उसके सिरपर चमड़ेकी टोपी है और एक बड़ेसे रोएँदार कोटसे उसकी पतली देह ढकी हुई है। उसके चेहरेका रङ्ग बिगड़ गया है, गाल पचक गये हैं, ललाटपर सिकुड़न पड़ आयी है, आँखोंकी ज्योति मारी गयी है और वे गड्ढेमें चली गयी हैं। उसके मुखड़ेपर जीवनके आनन्द, उत्साह और तेजस्विताका कोई चिह्न नहीं रह गया है। कनकनाती हुई शीतके मारे उसके होंठ काले पड़ गये हैं। दाढ़ी-मूँछोंमें कहीं-कहीं बरफ़ अबतक लगी हुई है।

उस समय पथिककी अवस्था बड़ीही शोचनीय थी। उसने कुटीके अन्दर आतेही मुँहसे दो-चार बार गों-गोंका शब्द किया; इसके बाद व्याकुल दृष्टिसे चारों ओर देखकर उसने आँखें बन्द करलीं। उसकी चेतना लुप्त हो गयी। स्पाइक्स-कार्टरके लगातार दो घण्टेतक सेवा-शुश्रूषा करनेपर उसकी मूर्च्छा टूटी। उसने आँखें खोलकर स्पाइक्स-कार्टरके चेहरेकी ओर देखते हुए बड़ीही धीमी आवाज़में कहा,—"मित्र! तुम्हें धन्यवाद है। तुमने मेरी जान बचानेके लिये बड़ा यत्न किया; पर यह सब व्यर्थ है; क्योंकि मेरा जीवन-दीप अब बुझनेपर आगया है—अब मैं कुछही क्षणोंका पाहुना हूँ।"

स्पाइक्स-कार्टरने प्रसन्न होकर कहा,—"बूढ़े बाबा! इस तरह निराश मत हो। तुम यहाँ दो-चार रोज़ आराम करो, अच्छे हो जाओगे। रहो, मैं तुम्हारे लिये थोड़ीसी कॉफी

तैयार करके ले आता हूँ। थोड़ीसी गरमा-गरम काफ़ी पी लो, तो तुम्हारा मन हरा हो जायेगा और शरीर भी चङ्गा मालूम पड़ने लगेगा। सहज रास्तेकी थकावट और कड़ाकेकी सर्दीके मारे तुम्हारी तबियत ऐसी होगयी है।"

बूढ़ेने कहा,—"भाई! रहने दो—मुझे काफ़ी नहीं चाहिये। मेरे दिन पूरे होनेको आ गये हैं। यही मेरे लिये कम सौभाग्य-की बात नहीं है, कि बाहर सर्दीमें तड़प-तड़पकर मरनेके बदले मैं अब तुम्हारे घरमें आरामसे मरूँगा।"

स्पाइक्स-कार्टरने बिना और कुछ कहे, चुपचाप वहाँसे जाकर बूढ़ेके लिये काफ़ी तैयार की और थोड़ीही देरमें एक प्याला लिये हुए आ पहुँचा। बूढ़ने बिना प्रतिवाद कियेही काफ़ी पी ली, जिससे उसे तुरतही नींद आ गयी।

बूढ़के सोजानेपर स्पाइक्स-कार्टरने अग्नि-कुण्डको प्रज्वलित रखनेके इरादेसे उसमें दो-चार लकड़ियाँ और डाल दीं तथा एक चौकीपर जाकर सो रहा; पर उसे अच्छी तरह नींद न आयी। उसका अतिथि जब बीच-बीचमें कराह उठता था, तब वह उसके पास जाकर उसकी देहपर हाथ फेर आता था। जब वह फिर सो जाता, तब वह भी अपनी चौकीपर आ रहता था। इसी तरह सारी रात बीत गयी।

प्रातःकाल स्पाइक्स-कार्टरने उसके शरीरकी परीक्षा कर देखा, तो मालूम हुआ, कि उसे बड़े ज़ोरका बुख़ार चढ़ आया है। यह देख, वह सब काम छोड़, उसीकी सेवा-शुश्रूषामें जी-जानसे लग गया। इसी तरह कई दिन बीत गये।

एक सप्ताहतक बूढ़ा बुखारमें बेहोश पड़ा रहा। इन कई दिनोंमें उसने एक बार भी आँखें खोलकर नहीं देखा। आठवें दिन, उसकी बेहोशी दूर हुई। उसकी हालत सुधरती देख, स्पाइक्स-कार्टरको बड़ा आनन्द हुआ।

उसी रातको फिर बड़े ज़ोरका अन्धड़-तूफ़ान जारी हुआ। सारा आकाश घने बादलोंसे घिर गया। बिजलीकी कड़कड़ाहटसे सारा जङ्गल कम्पित होने लगा। स्पाइक्स-कार्टर अग्नि-कुण्डके पास चुपचाप बैठा हुआ अपने 'बरफ़पर चलनेवाले' जूतोंकी (Snow-shoes) मरम्मत कर रहा था। थोड़ीही दूरपर वह बूढ़ा रोगी एक चौकीपर पड़ा सो रहा था।

एकाएक वह बूढ़ा उठ बैठा और धीरेसे स्पाइक्स-कार्टरको अपने पास बुलाया। वह जूतेको दूर फेंक, झट उसके पास चला आया। वृद्ध, अपनी ज्योति-हीन आँखोंसे स्पाइक्स-कार्टरके चेहरेकी ओर देखता हुआ, मृदु-स्वरमें बोला,—"भाई! तुम्हारा नाम क्या है?"

स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"दरअसल मेरा नाम राबर्ट-कार्टर है; परन्तु यहाँके सभी लोग मुझे स्पाइक्स-कार्टर कहा करते हैं। मेरा असल नाम यहाँ कोई नहीं जानता।"

वृद्धने कहा,—"मैंने पहले भी तुम्हारा नाम सुना था। जब तुम डौसन-ज़िलेमें थे, तब तुमने दुष्टोंकी सङ्गति और जुएमें बहुत रुपया बरबाद कर दिया था। क्यों, है न यही बात?"

वृद्धके मुँहसे अपनी बदनामीकी बात सुनकर स्पाइक्स-कार्टरका चेहरा शर्मसे सुर्ख हो आया, पर वह उसकी इस

बातको न काटते हुए बोला,—"हाँ, बूढ़े बाबा! मैंही वह अभागा हूँ। अपनी बदनसीबी और बदफेलीके कारण मैंने बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें भोगीं।"

वृद्धने कहा,—"अबभी सुधरे या नहीं?"

स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"अब तो मैंने उन सब बद-फ़ेलियोंसे किनारा कर लिया है और जिस उद्देश्यसे अपना देश छोड़कर यहाँ आया था, उसीको पूरा करनेकी चेष्टा कर रहा हूँ; किन्तु 'पीस-रिवर'-प्रदेशमें कुछ काम बनता न देख, घूमता-फिरता यहाँतक चला आया हूँ। सुननेमें आया है, कि इधर बहुतसी सोनेकी खानें हैं। 'तुम्हारी बातें सुननेसे तो मालूम होता है, कि तुम भी डौसन-ज़िलेमें रह चुके हो; पर मैंने तुम्हें कभी देखा है या नहीं, यह याद नहीं पड़ता।"

बूढ़ेने कहा,—"हाँ, मैं वहाँ रह चुका हूँ; पर मैं वहाँ तुम्हारे चले आनेके बाद पहुँचा था। उसी समय मैंने लोगोंसे तुम्हारे विषयमें बहुतसी बातें सुनी थीं।—ख़ैर, उन बातोंको जाने दो। देखो, स्पाइक्स! मैं तो अब मरता हूँ—अब मैं जल्दीही दुनिया छोड़ूँगा, मेरा कण्ठ बन्द हुआ जा रहा है—जितनी देर बोलनेकी शक्ति है, उतनेही समयके भीतर मैं तुमसे दो-चार बातें कह लेना चाहता हूँ। डौसन-ज़िलेमें मैंने तुम्हारे बारेमें जैसी-जैसी बातें सुनी थीं, उनसे मेरी धारणा तुम्हारे विषयमें बहुत बुरी हो गयी थी। अब भी मुझे सन्देह हो रहा है, कि तुमपर विश्वास करके कोई बात कही जा सकती है या नहीं। यह तो कहो, मैं यहाँ कबसे पड़ा हुआ हूँ?"

बूढ़ेकी बातसे मन-ही-मन कुढ़कर स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"एक सप्ताहसे भी अधिक हुआ।"

वृद्ध धीरे-धीरे कहने लगा,—"इन कई दिनोंमें तुमने मेरी खूब मन लगाकर सेवा की है। यदि उस दिन रातको पानीमें भींजकर तुम मुझे जङ्गलमेंसे न उठा लाते, तो मैं उसी दिन, वहीं मर जाता। तुमने कई दिनोंतक मेरी प्राण-रक्षा करनेकी जो चेष्टा की है, वैसी बेटा भी अपने बापके लिये नहीं करता। मैं मनुष्यको पहचाननेकी शक्ति रखता हूँ। मैं तुम्हारी आँखेंही देखकर समझ गया हूँ, कि तुम धोखेबाज़ नहीं हो, तुम्हारा हृदय सङ्कीर्ण नहीं है, तुम्हारे चरित्रमें बहुतसे अच्छे-अच्छे गुण हैं, पर उन्हें विकसित करनेका तुम्हें अवसर नहीं मिला। अस्तु, अब मेरी बातें खूब मन लगाकर सुनो। मैं यहाँ मैकेंज़ी-प्रान्तसे आया हूँ। गत वर्षका सारा ग्रीष्मकाल मैंने वहीं बिताया था। सोनेकी खान ढूँढ़नेकी मैंने बहुतेरे स्थानोंमें चेष्टा की थी और बहुत खोज-पड़तालके बाद मेरा श्रम सफल भी हुआ था। पर मैंने जो आविष्कार किया, वह एकबारगी आशासे बाहर, कल्पनासे अतीत और स्वप्नसे भी परे है। पर केवल आविष्कार करनाही मेरे भाग्यमें था—मैं उसका लाभ न उठा सका। मैं अब मौतके किनारे पहुँच गया हूँ। यदि मैं अपने देश जाकर अपने आविष्कारके सम्बन्धमें यथोचित प्रबन्ध कर सकता, तो मेरे मर-जानेपर भी मेरे अनाथ परिवारको कुछ-न-कुछ माल मिल ही जाता; पर वैसा न हो सका, तुम्हारी इसी कुटियामें मरना मेरे भाग्यमें लिखा था। भगवान्‌की जो इच्छा है, वह तो होकरही रहेगी।

परन्तु मरते समय अपना गुप्त भेद किसीसे कहे बिना मैं शान्तिसे न मर सकूँगा। यहाँ तुम्हारे सिवा और कोई नहीं है, इसलिये वह भेद तुम्हींसे कहना पड़ेगा। तुम शपथ खाकर कहो, मेरा कहा करोगे या नहीं? मैं तुम्हें जिस अतुल ऐश्वर्यका अधिकारी बना जाऊँगा, उसके व्यवहारके सम्बन्धमें तुम मेरी आज्ञाका पालन करोगे या नहीं?"

स्पाइक्स-कार्टरने अपने मनमें सोचा, कि बूढ़ा वायुके झोंकमें बक रहा है। बेचारेने जन्मभर सोनेकी तलाशमें वन-वनकी ख़ाक छानी है, इसीसे उसीका स्वप्न देख रहा है! परन्तु अपने मनका यह भाव छिपाकर उसने कहा,—"मैं तुम्हारा कहा ज़रूर करूँगा। तुम ज़रा सो रहो—बहुत बातें करते-करते तुम्हें थकावट आ गयी होगी। फिर नींद टूटनेपर मुझे जो कुछ कहोगे, वह मैं बड़े आनन्दसे सुनूँगा।"

उसके जीकी ताड़कर बूढ़ेने ज़रा ज़ोरसे कहा,—"मैं सोऊँगा तो ज़रूर; पर अबकी बार सोकर शायदही फिर उठूँ। तुम यह न सोचना, कि मैं योंही वायुके झोंकमें बड़बड़ कर रहा हूँ। बेटा! यह कोरी बड़ नहीं है। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह सोलहों आने सच है। सुननेपर विश्वास करनेका जी नहीं चाहता हो, तो-भी मैं कहता हूँ, कि मेरी बातें सच हैं। तुम्हें ईश्वरकी शपथ है, अभी मेरे सामने तुमने जो प्रतिज्ञा की है, उसे कभी न तोड़ना।"

स्पाइक्स-कार्टरने दृढ़तासे कहा,—"मैं प्राण-पणसे अपनी प्रतिज्ञाका पालन करूँगा।"

बूढ़ेने कहा,—"अच्छा, तो ज़रा और भी मेरे पास चले

आओ। बड़ीही गुप्त बात है। हाँ, मैं तुमसे कह चुका हूँ, कि मैकेंज़ी-प्रान्तमें मैंने सोनेकी खानकी खोज करते-करते जो आविष्कार किया, वह एकदम कल्पनातीत, स्वप्नातीत है! मेरी बात सुनकर तुमने शायद सोचा होगा, कि मैंने सोनेकी कोई बहुत बड़ी खान पायी होगी; पर नहीं, बेटा! सोना क्या चीज़ है? मैंने हीरेकी खान देखी है। मुझे हीरेकी पहचान है। किम्बारलीकी हीरेकी खानोंकी बात तुमने सुनी होगी; पर ठीक जानना, वहाँ भी वैसा क़ीमती हीरा आजतक किसीने नहीं पाया। क्यों? क्या तुम्हें मेरी बातका विश्वास नहीं होता? कुछ प्रमाण चाहिये? अच्छा, मेरी क़मीज़के पाकेटमें हाथ डालो—जो कुछ मिले, उसे बाहर निकालो।"

मारे कौतूहलके बेचैनसा होकर स्पाइक्स-कार्टर उठा और उस मरते हुए वृद्धकी चमड़ेकी बनी हुई क़मीज़की जेबमें हाथ डालकर एक छोटीसी थैली निकालकर देखने लगा, जिसका मुँह एक चमड़ेके फ़ीतेसे बँधा हुआ था।

बूढ़ेने कहा,—"थैली खोलकर उसके भीतरकी चीज़ देखो!"

थैलीका मुँह खोल, स्पाइक्स-कार्टरने ज्योंही उसे उलटा, त्योंही दस-बारह चमकते हुए हीरे उसके सामने गिर पड़े। वे हीरे अच्छी तरह खरादे और साफ़ किये नहीं होनेपर भी इस तरहकी उज्ज्वल आभा दिखा रहे थे, कि उनकी चमक देख, स्पाइक्स-कार्टरके विस्मयकी कोई सीमा न रही। उसने अस्फुट स्वरसे कहा,—"कैसे आश्चर्यकी बात है! यह क्या मैं सपना देख रहा हूँ?"

उसकी बात सुन, मरते हुए रोगी बूढ़ेने सिर ऊँचाकर उत्तेजित स्वरमें कहा,—"नहीं, नहीं,—यह न तो सपना है, न बाजीगरी। तुम हीरा पहचानते हो या नहीं? इन्हें अच्छी तरह देखो, तो तुम्हें मालूम हो जायेगा, कि मैं सचही कह रहा था। किम्बारली या ब्रेज़िलकी हीरेकी खानोंमें भी ऐसा बढ़िया, क़ीमती और बड़ा हीरा नहीं निकलता। युरोपके बड़े बड़े राजाओंके घरमें भी ऐसा हीरा शायदही कोई हो। पर यह हीरा किस खानमें पैदा होता है, यह बात मेरे अर्थात् जान-पैट्रिकके सिवा और कोई नहीं जानता। कहो, अब तो तुम्हें विश्वास हुआ न, कि मैं दिमाग़की खराबीसे नहीं बक रहा था!"

स्पाइक्स-कार्टर मुग्ध-दृष्टिसे उन हीरेके टुकड़ोंको देख रहा था। अबके बूढ़ेकी बात सुन, उसने सिर ऊपर उठाया।

बूढ़ा कहने लगा,—"इस साल मैं गरमीभर इन्हीं हीरोंका संग्रह करता रहा हूँ। जिस खानसे मैंने इन्हें पाया है, वैसी बड़ी खान इस दुनियामें शायदही और कोई हो। पर अफ़सोस, उसका पता लगाकर मैंने कुछ भी लाभ नहीं उठाया। मैं अब जिस अनजाने देशको जा रहा हूँ, वहाँ तक इस संसारकी कोई सम्पद् साथ नहीं जा सकती। परन्तु स्पाइक्स-कार्टर! तुम यदि मेरे साथ छल-कपट न करो, मेरे कहे अनुसार काम करो, तो मेरे आविष्कारका फल तुम भोग कर सकते हो। तुम ऐसे विपुल ऐश्वर्यके अधिकारी हो जाओगे, जिसकी तुमने कभी कल्पना भी न की होगी।"

स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"मुझे क्या करनेको कहते हो?"

वृद्ध धीरे-धीरे कहने लगा,—"मेरा घर मौन्ट-रियलमें हैं। मेरे घरमें केवल मेरी वृद्धा स्त्री और दो नादान पोता-पोती हैं। मेरे बेटे और उसकी बहूका देहान्त हुए,बहुत दिन हुए। उन बच्चों-का मैंही एकमात्र आधार था। मैं सदाका दरिद्र हूँ; पर मेरी स्त्री, लाख दुःख भोगती हुई भी, सदा हँसते-हँसते सब दुःख सह लेती थी। बेचारीको अन्न-वस्त्रका सदा कष्ट बना रहा; पर उसने किसी दिन मुझे उसके लिये कुछ न कहा, सदा सन्तोष धारण किये रही। अपने दरिद्र स्वामीके प्रति उसके मनमें गम्भीर श्रद्धा, अचल विश्वास था! मरते दम उसे सुखी करनेका यह मौका मिला था; पर हाय! मेरी सोची कुछ भी काम न आयी! मैं जीते-जी उसका अभाव न दूर कर सका! अब यह भार तुम्हें अपने ऊपर लेना होगा। मैंने जो खान ढूँढ़ निकाली है, उसके पास सिवा मेरे और कोई तुम्हें नहीं ले जा सकता; पर मेरा अन्त-काल उपस्थित है। हाँ, एक उपायसे तुम वहाँ पहुँच सकते हो। मैंने वहाँका एक नक़्शा तैयार कर रखा है, जिसमें वहाँके रास्ते वग़ैरहका हाल बताया गया है, पर जो कुछ लिखा है, वह बड़ी चालाकीसे। अगर मैं उसका भेद तुम्हें न बताऊँ, तो उस नक़्शेको पाकर भी तुम कोई फ़ायदा नहीं उठा सकते। बिना उस भेदको जाने वहाँतक पहुँचना असम्भव है। कहीं कोई नक़्शा न चुरा ले और मेरे-साथ दग़ा न कर बैठे, इसी डरसे मैंने इतनी चालाकी की थी। स्पाइक्स! वह भेद मैं तुम्हें बतला दूँगा; लेकिन देखो, तुम्हें इस बातकी प्रतिज्ञा करनी होगी, कि उस खानसे जो कुछ हीरा तुम्हें मिलेगा, उसका आधा तुम

आप लेलोगे और आधा मेरी अनाथा स्त्रीको दे दोगे। तुम उसके लिये इतना करना स्वीकार करो, तो मैं अभी तुम्हें वह नक्शा दे दूँ और सारा भेद भी बतला दूँ। तुम कह दो, कि इस प्रतिज्ञा-का मैं आजन्म पालन करूँगा, बस मैं शान्तिके साथ मृत्युकी गोदमें सो जाऊँ और तुम्हें जी खोलकर आशीर्वाद दूँ। इसके बाद, यदि तुम 'विश्वास-घात' करोगे, तो परमात्मा तुम्हें बड़ा भारी दण्ड देगा।"

स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"मैं ईश्वरके नामपर शपथ करके कहता हूँ, कि यदि मैं कृत-कार्य हुआ, तो किसी कारणसे अपनी की हुई प्रतिज्ञा भङ्ग न करूँगा।"

स्पाइक्स-कार्टरकी बात सुन, आशा और आनन्दसे वृद्धका चेहरा खिल उठा। उसने काँपते हुए हाथसे अपने कोटकी एक छिपी हुई जेबसे एक बड़ासा लिफ़ाफ़ा बाहर निकाला। उसीमें वह नक्शा था। नक्शेको बाहर निकाल, स्पाइक्स-कार्टरके सामने फैलाते हुए बूढ़ेने कहा,—"देखो, इसका भेद यह है, कि इसमें जो उत्तर-दिशा बतायी गयी है, वह उत्तर न होकर दक्षिण है। इसी तरह पूरबको पच्छिम और पच्छिमको पूरब जानना। दूरत्व-निर्देश करनेके लिये मीलोंकी जो संख्या दी हुई है, उसमेंसे १० घटा देनेपर असली संख्या निकलेगी। जैसे, १० को ०, २० को १० और ३० को २० मील समझना। आयी मेरी बात समझमें?"

स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"हाँ, मैं समझ गया। अब मैं ठीक जगहपर पहुँच सकता हूँ।" यह कह, वह उस नक्शेमें

बनाये हुए नदी, झील, मैदान, और बस्ती आदिके निशान बड़े ध्यानसे देखने लगा।

वृद्धने कहा,—"मेरी जेबमें एक नोट-बुक है। उसीमें मेरे घरका पता लिखा हुआ है। तदनुसार मेरे घर जाकर मेरी स्त्रीसे मिलना, उसे मेरी मृत्युका समाचार सुना देना और जितने हीरे तुम्हें मिलें, उनका आधा हिस्सा उस बेचारीको पहुँचा दिया करना। समझे?"

स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"हाँ, समझा। मुझे जो कुछ प्राप्त होगा, उसका आधा मैं तुम्हारी स्त्रीको दे आया करूँगा। तुम पूरी तरह मेरी प्रतिज्ञापर भरोसा कर सकते हो।"

"ईश्वर तुम्हारी चेष्टा सफल करें—अब मैं शान्तिसे देह-त्याग करूँगा।" यह कह, वह बूढ़ा आँखें मूँदकर सेजपर सो रहा। पाँचही मिनट बाद उसे गहरी नींद आ गयी। उसे सोते देख, स्पाइक्स-कार्टर लैम्पके सहारे उसी नक़शेको खूब ग़ौरसे देखने लगा। प्रायः घण्टे-भरतक देखनेके बाद वह आपही-आप बोल उठा,—"बुड्ढेने बड़ी उस्तादीसे यह नक़शा तैयार किया है। नक़शेका भेद जाने बिना देखनेवाला यही समझेगा, कि मैकेंज़ी-नदीके किनारे-किनारे उत्तरसे दक्खिनकी ओर जाना होगा; पर बात ठीक उलटी है। इसी लिये टासी-झीलका मुक़ाम रास्तेके दाहिने किनारेकी जगह बायें किनारेकी ओर दिखलाया गया है। यह बूढ़ा मैकेंज़ी-नदीके दक्खिनी किनारेसे चलकर क्रमशः उत्तरकी ओर चला गया था। वहाँ जानेके लिये ग्रेविल-नदीको भी बायीं ओर रखना पड़ेगा। "यह खान ग्रेविल-नदीके

ठीक उत्तरमें है। वहाँतक पहुँचनेके लिये मुझे ग्रेविल-नदीसे उत्तरकी ओर और भी ३० मीलतक जाना होगा। यहींसे पहाड़ोंका सिलसिला शुरू हुआ है। इसीसे पाच मील पूरबकी ओर वह खान है। अब नक्शेका भेद मुझे मालूम होगया। अब मैं ठीक रास्तेपर चलकर उस खानका पता लगा सकूँगा। अगर भेद न मालूम होता और मैं अन्धेकी तरह इस नक़्शेकी बतलायी हुई राहपर चलता, तो झूठ-मूठ हैरानी उठानी पड़ती और मुमकिन है, कि जानसे भी हाथ धो बैठना पड़ता। अगर सचमुच बूढ़े को वहाँ हीरा मिला हो, तो मेरा परिश्रम भी कभी व्यर्थ न जायेगा। वहाँ मुझे जितने हीरे मिलेंगे, उनका आधा मैं इस बूढ़े की स्त्रीको दे दूँगा। मालूम होता है, कि परमेश्वरने इतने दिनों बाद इस अभागेकी ओर कृपा-दृष्टि फेरी है। ख़ैर, देखा जायेगा।"

स्पाइक्स-कार्टरने यही सब सोचते-विचारते हुए उस नक़्शेको मोड़-माड़कर उसी लिफ़ाफ़ेमें रख दिया, जिसमें वह पहले रखा हुआ था। इसके बाद उसने उसे अपने कोटकी जेबमें रख लिया और सोने चला। परन्तु उसे यह नहीं मालूम होने पाया, कि जिस समय वह लैम्पके सहारे उस नक़्शेको देख और ऊपर लिखी हुई बातें कह रहा था, उसी समय एक लम्बी दाढ़ीवाला आदमी उसके सिरके पासहीवाली खिड़कीके नज़दीक छिपा हुआ, बाहरसेही उस नक़्शेको देख और उसकी सब बातें बड़े ध्यानसे सुन रहा था। स्पाइक्स-कार्टर जब उसे नक़्शेको जेबमें छिपाकर सोने चला, तब वह आदमी भी

एक लम्बी दाढ़ीवाला मनुष्य चुपचाप खिड़कीसे झांक रहा है।

खिड़कीके पाससे हट गया और रातके अँधेरेमें न जाने कहाँ ग़ायब हो गया।

२

फिर उस बूढ़ेकी निद्रा नहीं टूटी—वही निद्रा उसकी महानिद्रामें परिणत हो गयी। भोर होते-होते उसका दम निकल गया। तड़केही उठकर स्पाइक्स-कार्टरने बृद्धके पास जाकर देखा, कि उसकी समस्त यातनाओंका अन्त हो गया है!

स्पाइक्स-कार्टरने बृद्धके सिरके पास बैठे-बैठे बाक़ी रात बिता दी। क्रमशः सवेरा हुआ—चारों दिशाओंमें प्रकाश फैल गया। अब उसे बृद्धकी लाश दफ़नानेकी फ़िक्र पड़ी। उसे कोई उपाय न सूझा। कुटीके चारों ओर बरफ़से ढँका हुआ पहाड़ी प्रदेश था, मिट्टीका कहीं नामों निशा न था—केवल पत्थरही पत्थर दिखाई देता था। लाश अगर योंही फेंक दी जाये, तो स्यार और भेड़िये आकर उसका मांस नोच-नोचकर खायेंगे, यह भी ठीक नहीं। बहुत कुछ सोचने-विचारनेके बाद वह उस लाशको लिये हुए पहाड़पर चढ़ गया और उसे एक गुफामें बन्दकर उसके दरवाज़ेको पत्थरकी चट्टानोंसे अच्छी तरह ढक दिया। इसके बाद उसने एक लकड़ीका टुकड़ा ले, बड़े कष्टसे एक अस्त्र द्वारा नीचे लिखी बातें उसपर खोद डालीं और उस लकड़ीको उस पहाड़ी समाधिके ऊपर रख दिया उसमें लिखा था

"जान पैट्रिककी क़ब्र !

रास्तेकी थकावटसे ज्वरके कारण बेचारेकी मृत्यु हो गयी।

तारीख १८ नवम्बर, १८———।"

लाशको पहाड़ी क़ब्रमें रखकर स्पाइक्स अपनी कुटीमें चला आया और कोटसे उस नक्शेको निकालकर इसी बातका विचार करने लगा, कि अब किधरको जाना चाहिये।

सोचते-सोचते उसने एक लम्बी साँस लेकर कहा,—रास्तेका तो पता लग गया, पर कहीं हैरानीही हाथ न रह जाये। अगर बूढ़ेके पास ये हीरे न होते, तो मैं उसकी बातोंको पागलका प्रलापही समझता; पर ये हीरे उसकी बातोंकी सचाईके अकाट्य प्रमाण हैं। इनके दामही न मालूम कितने लाख होंगे। नहीं, अब इधर-उधर करनेका कुछ काम नहीं है—पर पहले कहाँ जाऊँ? अगर रास्तेमें खाने-पीनेके लिये सामान जुटानेके वास्ते एडमण्ट जाऊँगा, तो फिर मैकेंज़ी पहुँचनेमें बहुत दिन लग जायेंगे। फ़िलहाल मेरे पास जितना सामान है, उसीसे कुछ दिनोंतक काम चल जायेगा। आजही उस खानकी ओर यात्रा कर देनी चाहिये—राम निबाहनेवाला है। यदि सौभाग्यसे कुछ हीरे हाथ लग गये, तो फिर जन्मभरके लिये दरिद्रतासे

छुटकारा मिल जायेगा और बेचारे बूढ़के घरवालोंके भी सब अभाव दूर हो जायेंगे।"

कुछ और दिन चढ़ आनेपर स्पाइक्स-कार्टर यात्राकी तैयारी करने लगा। पहले तो उसने अपनी गाड़ीमें खाने, पीने आदिके सामान भर लिये; पर तैयारीही करते-करते दिन मुँद गया। उस देशमें दिनके चार बजेही शाम हो जाती है। अँधेरी रातमें ऐसा बीहड़ रास्ता तै करना असम्भव समझकर उसने दूसरे दिन भोरको यात्रा करना निश्चय किया। सारा दिन परिश्रम करते बीता था, इसलिये उसे बड़ी थकावट मालूम हो रही थी। इसीसे शामको भोजन कर, अपने कुत्तोंको खिला, अग्निकुण्डमें लकड़ीके दो-चार कुन्दे डाल, वह सोने चला गया। कुछही मिनटमें उसे गाढ़ी नींदने धर दबाया।

उस दिन रातको अन्धड़-पानी कुछ भी न था। प्रकृति स्थिर और आकाश निर्मल था। बाहर भयानक सरदी थी बरफ़से सारा प्रान्त ढकसा गया था। ऊपर आकाशमें टिके हुए नक्षत्रोंकी चमकीली किरणें बरफ़में अपनी परछाईं डाल रही थीं, जिससे अनुपम सौन्दर्यका विकाश हो रहा था।

रातकी गम्भीरता क्रमशः बढ़ती चली गयी। बहुत दूर उत्तरकी ओर 'केन्द्रीय उषाके' आलोकसे उत्तराकाश बहुत दूरतक आलोकित हो रहा था। उसकी क्षीण प्रभासे कुटीर, प्रान्तर और अरण्यका अन्धकार कुछ-कुछ फट चला था और सब चीज़ें साफ़ दिखलाई दे रही थीं। उसी हलकी रोशनीमें अनेक जन्तु आहारकी खोजमें इधर उधर घूम रहे थे। कुत्ते

और-सन्नाटेका आलम था—केवल रह-रहकर घूमते हुए भेड़िये का गम्भीर गर्जन उस बरफ़ीली शीतकी गाढ़ी निस्तब्धताको भङ्ग कर रहा था।

बड़ी रात गये, एक आदमी स्पाइक्स-कार्टरकी कुटीके पास आ पहुँचा। आदमी लम्बे क़दका था, दाढ़ी-मूँछोंसे चेहरा छिपा हुआ था, सारी देहमें चमड़ेकी पोशाक पहने था, पैरोंमें बरफ़पर चलनेवाले जूते और हाथमें बन्दूक थी। यही आदमी अगले दिन स्पाइक्स-कार्टरकी कुटीकी खिड़कीके पास छिपा हुआ उसकी बातें सुन और ललचायी दृष्टिसे उसके हाथके नक्शोंको देख रहा था।

आज भी वह आतेही खिड़कीके पास खड़ा हुआ। भीतरका धुँआ बाहर निकलनेके लिये स्पाइक्स-कार्टरने खिड़कीका दरवाज़ा बन्द नहीं किया था। आनेवालेने पहले तो खिड़कीके पास खड़े होकर भीतर नज़र दौड़ायी। उस समय भी अग्नि-कुण्डमें डाले हुए लकड़ीके कुन्दे जल रहे थे। आगके धुँधले और हिलते हुए प्रकाशमें आगन्तुकने देखा, कि स्पाइक्स-कार्टर अपनी सारी देह कम्बलसे छिपाये, पलँगपर सो रहा है।

आगन्तुकका नाम लौंग-डिलन था। उसने बड़ी देरतक वहीं खड़े-खड़े कम्बलमें छिपे हुए स्पाइक्स-कार्टरकी देहकी परीक्षा की। इसके बाद एक पैर पीछेकर उसने बन्दूक साधी और उसका मुँह खिड़कीके भीतर कर बड़ी सावधानीसे स्पाइक्स-कार्टरके कलेजेका निशाना किया। पलक मारते-भरमें उसने बन्दूकका घोड़ा दबा दिया एकसे गोली छूट गयी।

उसकी आवाज़से सारी कुटी गूँज गयी। कुटीके भीतर सीकड़में बँधे हुए पालतू कुत्ते डरकर एक-साथही चिल्ला उठे।

मुहूर्त्त भरमें लौंग डिलनने देखा, कि उसने जिसके कलेजे-पर निशाना साधकर गोली छोड़ी थी, उसका कलेजा न छिदा और वह तुरतही कम्बल फेंक पलँगपरसे उठ खड़ा हुआ। उसके बायें कानके नीचे गोली लगी थी, इसीसे वहाँसे ख़ून जारी था।

वहीं खड़ा-खड़ा लौंग-डिलन कुछ देर सोचता रहा। इसके बाद छिपकर हत्या करनेका विचार त्याग, प्रत्यक्ष रूपसे स्पाइ-क्स-कार्टरकी हत्या करनेके विचारसे वह उसके सामने आ खड़ा हुआ। स्पाइक्स-कार्टरके बाहर आनेके पहलेही लौंग-डिलन कुटीके अन्दर दाखिल होगया। गोली लगनेसे स्पाइक्स-कार्टर मारे दर्दके बेचैन हो रहा था—उसकी सारी देह काँप रही थी। वह अपने उस हत्याकारीको भली भाँति देखने भी न पाया था, कि लौंग-डिलनने बन्दूक़का कुन्दा उसके सिरपर बड़े ज़ोरसे दे मारा। यह चोट स्पाइक्स-कार्टर न सह सका और तत्काल मूर्च्छित हो ज़मीनमें गिर पड़ा।

लौंग-डिलन, स्पाइक्स-कार्टरको मुर्देकी तरह अचल हो पड़ा देख, उसकी जेब टटोलने लगा। खोजते-खोजते उसके पाकेटमें वही नक़्शा और हीरोंवाली थैली मिली। अब तो उसके आनन्दकी कोई सीमा न रही; परन्तु शत्रुको जीते-जी छोड़ना ठीक नहीं, यही सोचकर वह स्पाइक्स-कार्टरके शरीरकी परीक्षा करने लगा। परीक्षा करनेसे उसे मालूम हुआ, कि

उसका दम नहीं निकला है

यह देख, लौंग-डिलनने धीरे-धीरे कहा,—“छोकरा बड़ा कठ-जीव है! अबतक मरा नहीं! भलेही न मरा हो; पर अब बचता थोड़ेही है? आजही रातको ज़रूर मर जायेगा। पर इसे यहाँ छोड़ जाना ठीक नहीं। अपनी करनीके इस सबूतको यहाँसे अलग करना चाहिये।”

ऐसा विचारकर वह स्पाइक्स-कार्टरकी अचल देहको कन्धे-पर उठाये हुए कुटीके बाहर आया और कुटीसे थोड़ीही दूरपर घने जङ्गलमें उसे ला पटका। इसके बाद उसकी ओर देखता हुआ बोला,—“बेटे! अब यहीं मज़ेसे पड़ा रह। यहाँसे बढ़कर अच्छी जगह नींद लेनेके लिये और कहाँ मिलेगी? घंटे, आध-घंटेमें कोई-न-कोई भेड़िया तुझे आकर सफ़ाचट करही जायेगा। अब किसी आदमज़ादको तेरा हाल न मालूम होने पायेगा। अगर ईश्वर नामके कोई जीव हों और यदि वे सचमुच छिपे-छिपे यह सब हाल देख रहे हों, तो शायद वही बाइबिल हाथमें लेकर लौंग-डिलनके विरुद्ध गवाही देनेके लिये अदालतमें आसकते हैं, और तो कोई ऐसा नहीं दिखाई देता।”

लौंग-डिलन, स्पाइक्स-कार्टरको वहीं फेंककर निश्चिन्त मनसे, उसकी कुटीमें चला आया और उसके व्यवहार करने योग्य सब सम्मानोंको इकट्ठा कर, रोशनी लेकर आँगनमें रखी हुई गाड़ीको देखने लगा। उसने देखा, कि स्पाइक्स-कार्टरने तो मेरी यात्राके लिये पहलेसे ही बहुत कुछ प्रबन्ध कर रखा है। इसके बाद कुत्तोंकी कोठरीमें गया और उन्हें बाहर लाकर गाड़ीमें जोता। इसके बाद गाड़ीपर सवार हो, वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

लौंग-डिलन वहांसे चलकर पहले तो अपने अड्डे पर आया। उसका अड्डा अभागे स्पाइक्स-कार्टरकी कुटीसे प्रायः एक मील दूर, पहाड़की तराईमें था। उसने बरफ़से ढँके हुए एक पहाड़की कन्दरामें आश्रय लिया था। कन्दरा बरफ़से ढकी हुई होनेके कारण खूब गरम थी, इस लिये रातको वहाँ विश्राम करनेमें उसे कोई कष्ट न हुआ। वृद्ध-पैद्रिकका अनुसरण करते-करते वह यहांतक आया था और दोही दिन पहले इस कन्दरामें अपना अड्डा जमाया था।

गुहामें जा, खा-पीकर वह गाड़ीमें सवार हो, फिर बाहर निकला। इस बार उसने गाड़ीका रुख दूसरी ओर कर दिया और निश्चिन्त मनसे अपने गन्तव्य पथमें जाने लगा। भगवान्‌की माया भी बड़ी विचित्र होती है। लौंग-डिलन स्पाइक्स-कार्टरको अधमरी हालतमें उस जङ्गलमें छोड़कर चलागया। उसी समय सवारोंका एक क़ाफ़ला उसी जङ्गलमें आ पहुँचा और उसने वहीं अपने डेरे डाले। उस दलके एक आदमीने दूरसे ही छिपकर लौंग-डिलनका वह निष्ठुर कार्य देखलिया था। लौंग-डिलनके वहांसे जाते ही वह अपनी छिपी हुई जगहसे बाहर आया और स्पाइक्स-कार्टरकी अचल देहके पास आ बैठा। कुछ मिनटोंतक उसकी भली भाँति परीक्षा कर वह उसे उठाकर अपने डेरेमें ले आया।

पहला परिच्छेद ।

पहले हम जो घटना लिख आये हैं, उसके ठीक दो वर्ष बाद, इङ्गलैण्डके धनकुबेरोंमें अन्यतम, सुप्रसिद्ध जौहरी, मिस्टर जे० कर्नेलियस डिलन, लण्डनमें अपनी राजमहलसी अटारीके एक खूब सजे-सजाये पुस्तकालयमें चमड़ेकी गद्दी लगी एक कुरसीपर बैठा हुआ कुछ लिख रहा था, सामनेही मेहागनी-काठका बना हुआ डेस्क था, जिसमें बहुतसी छोटी-बड़ी बहियाँ, दावात, क़लम और काग़ज़ आदि चीज़ें रखी हुई थीं। कमरा एकदम सूनसान था, केवल 'मैन्टिलपीस'पर रखी हुई घड़ी टिक टिक कर रही थी। कुछ ही मिनट बाद, रातके कोई पौने दस बजे, आरगनकी वाद्य—ध्वनि मोठे सुरमें बज उठी।

उसकी मीठी बन्द होनेके कुछ ही देर बाद एक

नौकरने आकर मि० डिलनको सलाम किया और कहा,—"एक आदमी हुज़ूरसे मिलने आया है।"

क़लम हाथमें ले, डिलनने नौकरकी ओर मुँह कर कहा,—"रातके दस बजे कौन मिलने आया वह कैसा; आदमी है? उसने तुमसे अपना नाम भी बतलाया है या नहीं?"

नौकर,—"नहीं उसने अपना नाम तो नहीं, बतलाया।"

डिलन,—"अच्छा! उसका डीलडौल कैसा है? मैंने तो तुमसे कह रखा था, कि आज रातको मुझे न छेड़ना; फिर क्यों आये?"

मालिकको नाराज़ होते देख, नौकरने बड़ी विनयके साथ कहा,—"हुज़ूर मैंने उस आदमीसे कहा था, कि आज रातको हुज़ूरसे मिलना न हो सकेगा, वे काममें लगे हुए हैं; पर वह मेरी बात अनसुनी कर एक कुरसीपर बैठ गया और बोला, कि बिना उनसे मिले तो मैं आज टलनेका नहीं। उसने यह भी कहा, कि मुझे बहुत ही ज़रूरी काम है—ऐसा ज़रूरी, कि इसी वक़् रातको ही मिले बिना चलेगाही नहीं। उस आदमीकी पहनाव-पोशाक तो मामूली हैसियतवाले आदमीकीसी मालूम होती है।"

डिलनने भौंहें सिकोड़कर बहुत देरतक न जाने क्या-क्या सोचा। इसके बाद उसने नौकरसे कहा,—"अच्छा, उसे यहाँ भेज दो और तुम खुद हालमें आ बैठो। जब मैं बुलाऊँ, तभी झट हाज़िर हो जाना।"

यह सुन, नौकर सलाम कर वहाँसे चला गया। डिलन

आगन्तुकको देखनेके लिये बेचैनसा हो रहा था। उसने बड़ी बेसब्रीके साथ उसकी प्रतीक्षा करनी शुरू की। वह रह-रहकर यही सोचने लगता था, कि आदमी बड़ा बेहूदा मालूम होता है, रातके दस बजे मिलने आया है! यही सोचते-सोचते उसका मिज़ाज गरम हो गया। बड़े आदमियोंके मिज़ाज क्षरे ज़रा-ज़रासी बातमें गरम हो जाते हैं।

तिसपर कर्नेलियस-डिलन मामूली बड़ा आदमी नहीं है, लाखों रुपयेको भी वह कोई चीज़ नहीं समझता। उसकी सी सजी-सजायी सुन्दर लाइब्रेरी भला लण्डनके किस बड़े आदमीकी है? उसकी लाइब्रेरीमें बड़ी-बड़ी आलमारियोंके अन्दर खूब बढ़िया-बढ़िया असंख्य मूल्यवान् पुस्तकें भरी हैं। पर डिलनने शायद ही इन किताबोंमेंसे एकके भी हाथ लगाया हो। सभी बड़े आदमियोंके घरमें लाइब्रेरी होती है—यह भी बड़े-आदमीपनका एक आवश्यक अङ्ग है इसी लिये उसे भी अपने यहाँ एक लाइब्रेरी बना लेनी पड़ी। उसकी विद्या-बुद्धि तो इस-प-रीतिकी कहानियों तक ही खतम है; पर व्यवसायमें वह बड़ा काइयाँ है।

यद्यपि उसके पूर्व-चरित्रोंको कोई नहीं जानता, तथापि वह लण्डनमें आतेही थोड़ेही दिनोंके अन्दर रुपयेके ज़ोरसे बड़ा आदमी होगया और भले लोगोंके समाजमें बड़ी प्रतिष्ठा भी पायी। लण्डनके जिस मुहल्लेमें बड़े आदमियोंके सिवा और कोई नहीं रहता, उसीमें उसने राजमहलसी अटारी बनवा ली है। कुछ ही दिनोंके अन्दर वह लण्डनका सबसे बड़ा जौहरी गिना जाने

लया। सर्वसाधारण उसे 'हीरेवाला डिलन' कहा करते हैं। यह स्वयं "कैनेडियन नार्दर्न डायमन्ड माइन कम्पनी" नामक एक कम्पनी-खोले हुए है और उसका प्रधान हिस्सेदार और डाइरेक्टर है। इस कम्पनीकी पूँजी करोड़ों रुपयेकी है। इंग्लैण्डके प्राय: बहुतसे बड़े आदमी इस कम्पनीके हिस्सेदार हैं। अध्यक्ष-सभाके सदस्य दिक्पालोंसे कम नहीं हैं; पर डिलनका जादू उनपर भी चलता है। डिलनकी बहुत दिनोंकी उच्चाभिलाषा पूर्ण होगयी है—उसे इस समय धन, मान, सुख, सम्पद्का कुछ भी अभाव नहीं है। बड़े घरानोंकी अनेक उच्चाभिलाषिणी युवतियोंको यह शिकायत है, कि इतने बड़े आदमी होनेपर भी डिलनने अबतक शादी क्यों नहीं की?—आगन्तुकके आनेकी बात सुन, उसके आनेकी प्रतीक्षा करता हुआ। डिलन अपने पूर्व-जीवनकी बातें याद करने लगा। कैसी हीन अवस्थासे भाग्यलक्ष्मीने दया कर उसे इस तरहके अतुल ऐश्वर्यका अधिकारी बना दिया, यह स्मरणकर उसके चेहरेपर हँसी आ गयी। किन्तु ज्योंही हालसे निकलकर चुपचाप दबे पाँव वह आगन्तुक लाइब्रेरीमें डिलनके सामने आ खड़ा हुआ; त्योंही उसकी सूरत देख, डिलनका चेहरा सूख गया और उसका कलेजा काँप उठा। उसने कुरसीपरसे उठनेकी चेष्टा की, पर तुरतही बैठ गया और सूखे चेहरे तथा कम्पित कण्ठसे आगन्तुकसे पूछा,—"सर्वनाश! यह क्या! तुम कौन हो?"

आगन्तुक डिलनके और भी पास आ, बड़ी दृढ़ताके साथ

क्या तुमने मुझे देखतेही नहीं पहचाना ? दोही वर्षोंमें अपनी पूर्व-कथा एकबारगी भूल गये ? क्या ऐसा कभी होसकता है ?"

डिलनने भग्न-स्वरसे कहा,—"तुम स्प्राइक्स-कार्टर तो नहीं हो ? मैं उसको ज़रूर पहचानता था ; पर वह तो बहुत दिन हुए, कि———"

आगन्तुकने डिलनकी बात बीचसेही काटकर कहा,—"डिलन ! क्या तुम यह कहना चाहते हो, कि बहुत दिन हुए, वह तो 'पीस रिवर' प्रान्तमें मारा जा चुका है ! मैं समझता हूँ, कि तुम्हारे मनमें यह धारणा क्योंकर पैदा हुई ; पर आज मुझे अपने सामने सशरीर खड़ा देखकर भी तो समझो, कि तुम्हारी वह धारणा ग़लत थी ! तुम्हें तो यादही होगा, कि मेरा सर्वस्व लूटकर तुमने मुझे मार डालनेमें कोई कसर नहीं रहने दी थी ; परन्तु परमेश्वर जिसको बचाना चाहता है, उसका लौंग-डिलन जैसे नर-पिशाचसे बाल भी बाँका नहीं हो सकता। उसी दुष्ट लौंग-डिलनका यह आज कैसा सुन्दर वेश है, कैसा विचित्र ठाट-बाट है ! इस समय तुम्हारे पास राजाकासा महल, कुबेरकासा धन, बड़ा भारी जवाहरातका कारबार है ! नाम भी बड़ा रोबीला—कर्नेलियस डिलन—रख लिया है। अब भला कौन इस बातका विश्वास करेगा, कि तुम वही खूनी लौंग-डिलन हो ? मैं देखता हूँ, कि अवस्थामें परिवर्त्तन होतेही आदमीकी चाल भी बदल जाती है !"

डिलनने कहा,—"ईश्वरके नामपर इन गड़े मुर्दोंको अब न

उखाड़ो। यह कहो, कि तुम इस समय किस मतलबसे मुझसे मिलने आये हो?"

स्पाइक्स-कार्टरने जेबसे एक चुरुट निकाल, उसे जलाकर पीते-पीते कहा,—"क्या तुम जानना चाहते हो, कि मैं किस मतलबसे तुमसे मिलने आया हूँ? मुझे तुमसे बहुतसी बातें कहनी हैं, वही कहने आया हूँ।"

स्पाइक्स-कार्टरकी बात पूरी होते-न-होतेही डिलनने अपनी जेबमें हाथ डालकर पिस्तौल बाहर निकालनी चाही; पर उसका मतलब ताड़कर स्पाइक्स-कार्टरने अपनी जेबसे एक छोटीसी पिस्तौल निकाल, पलक मारते उसको डिलनकी खोपड़ीके पास ले जाकर दृढ़ स्वरमें कहा,—"जेबसे हाथ निकालकर अभी डेस्कपर रखो, नहीं तो अभी खोपड़ी चूर कर दूँगा।"

डिलन पिस्तौलको जेबसे बाहर कर चुका था; पर स्पाइक्स-कार्टरको खोपड़ीपर निशाना साधे देख, उसका सिर चकरा गया और काँपते हाथसे छूटकर पिस्तौल ज़मीनके फ़र्श पर गिर पड़ी। उसके ललाटपर पसीनेकी बड़ी-बड़ी बूँदें नज़र आने लगीं।

उसका यह हाल देख, स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"खून उठाते-उठाते इस समय जीवनके प्रति तुम्हारे मनमें ममता उत्पन्न हो गयी है। तुम बड़े आदमी हो गये हो, इसी लिये नसोंमें कमज़ोरी आ गयी है। पर मुझे तो बड़े आदमी होनेका अभी-तक मौक़ाही न मिला—जो पहले था, वही आज भी हूँ। अच्छा, यह देखो, तुम मेरे इस ज़ख्मको पहचान सकते हो या नहीं?"

यह कहकर [illegible] अपनी पतलोनको [illegible]

कालर हटाकर कानके नीचेसे लेकर गालोंके ऊपरतक फैले हुए ज़ख्मका दाग़ दिखला दिया !

इसके बाद डिलनके चेहरेकी ओर देखते हुए स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"यह तुम्हारीही करतूत थी ! तुमने निकोल्सन-प्रान्तमें मेरी कुटियाके पास छिपे-छिपे मेरे ऊपर जो गोली छोड़ी थी, यह दाग़ उसी ज़ख्मका है। मुझे मार डालनेके लिये तुमने दूसरी दफ़े मेरे सिरपर बन्दूकका कुन्दा भी पटक दिया और जब मैं बेहोश हो गया, तब मुझे जंगलमें फेंक आये। तुम तो यह सोचकर निश्चिन्त हो गये, कि रात-भरमें इसे कोई भालू या भेड़िया आकर चट कर जायेगा ; पर मेरे सौभाग्यसे सौदागरोंका एक क़ाफ़ला आ पहुँचा और उसीने बड़ी सेवा-शुश्रूषा कर मेरी जान बचा दी। ज़ख्म आराम हो जानेपर मैं अनेक पहाड़ों, जङ्गलों और नदियोंको पार करता हुआ 'प्रिन्स रूपर्ट' नामक स्थानमें आया। उस समय मैं पैसे-पैसेके लिये मुहताज हो रहा था—विना नौकरी किये गुज़र होनी मुश्किल दिखाई देने लगी। लाचार होकर मैंने 'ह्वेल' नामक मछलीका शिकार करनेवालोंके जहाज़में नौकरी कर ली। इसी बहाने मुझे साल-भरतक इस समुद्रसे उस समुद्रमें आना-जाना पड़ा। उसके बाद मैंने 'वैंकोवरमें' आकर तुम्हारा पता लगाना चाहा ; पर कहीं कुछ पता न चला। तब मैं 'एडमन्टन ज़िले' में लौट आया। वहाँ आनेपर मैंने सुना, कि तुमने मैकेंज़ी-प्रान्तकी वह हीरेकी खान ढूँढ़ निकाली है और हीरेका व्यापार कर अब कुबेर बन बैठे हो। मैंने यह भी सुना, कि तुमने

तरह आलीशान महल उठा रखा है और उसीमें बड़ी मौजसे दुनियाके मज़े ले रहे हो।—परन्तु उस समय मेरे पास इतने पैसे न थे, कि मैं जहाज़का भाड़ा देकर इंग्लैण्ड आ सकूँ। इसी लिये मैं दूसरी नौकरीकी तलाशमें चला।"

इतना कह, क्षणभर चुप रहनेके बाद स्पाइक्स-कार्टर फिर कहने लगा,—"इधर आनेके पहले मैं 'मौण्टरियल' आकर जौन-पैद्रिककी विधवा पत्नीसे भेंट कर आया हूँ और उससे शपथ करके कह आया हूँ, कि चाहे जैसे हो, मैं तुम्हें तुम्हारे स्वामीकी सम्पत्तिका आधा हिस्सा दिलवा दूँगा। तो तुम अब समझही गये होगे, कि मैं यहाँ किस लिये आया हूँ? बड़ी मिहनतके बाद मैंने आज तुम्हें पकड़ पाया है। आज मैं जान-पैद्रिककी विधवा पत्नीका प्राप्य धन और अपना हिस्सा लिये बिना हरगिज़ यहाँसे न जाऊँगा।"

यह कह, स्पाइक्स-कार्टर चुप हो गया। डिलनने मन्त्र-मुग्धकी तरह चुपचाप, बिना कुछ बोलचाल किये, उसकी सारी बातें सुनीं। उसका चेहरा सूखा था, आँखें भयसे भरी थीं और छाती धड़क रही थी! वह ठीक समझ गया, कि स्पाइक्स-कार्टर अपना सङ्कल्प स्थिर करके यहाँ आ पहुँचा है। डिलनको साहस न हुआ, कि उसके दावेको नाजायज़ बतलाये; पर उसने यह ज़रूर सोचा, कि इसे अभी यहाँसे निकलवाकर बाहर कर दूँ। उसने सोचा, कि चिल्लाकर नौकर को पुकारूँ; परन्तु वह ऐसा [illegible] करते [illegible] उठते देख,

कहा,—"देखो, मुझे अपने मरने-जीनेकी कोई परवा नहीं है—मैं जान हथेलीपर रखकरही यहाँ आया हूँ। यदि तुम ज़रा भी हिले-डुले या तनिक भी चूँ की, तो मैं झट गोली मार दूँगा।"

डिलनने काँपते कण्ठसे कहा,—"तुम कहते हो, कि जान-पैद्रिककी पत्नीका प्राप्य धन और अपना हिस्सा लिये बिना यहाँसे न जाऊँगा—इसका क्या मतलब है?"

स्फाइक्स-कार्टरने कहा,—"क्या सब बातें खोलकर कहनी पड़ेंगी? अच्छा, सुनो। तुमने जान-पैद्रिककी आविष्कार की हुई हीरेकी खानको हथियाकर आजतक जो नफ़ा उठाया है, उसकी एक-एक पाई मैं तुमसे वसूल करूँगा। तुम चोर और ख़ूनी हो,—तुमने मेरे साथ जैसा सलूक किया है, उसका पूरा-पूरा बदला, चाबुककी मारसे तुम्हारी पीठका चमड़ा उधेड़ डालनेपर भी नहीं हो सकता। मैं जिस तरह एक फटासा कपड़ा पहने, असहाय-अवस्थामें लण्डन आया हूँ, तुम्हें भी उसी तरह नंगा बनकर लण्डन छोड़ना पड़ेगा, यही मेरा सङ्कल्प है। तुम यही सोच-सोचकर अबतक निश्चिन्त थे, कि तुमने मेरी हत्या कर डाली; पर तुम्हारी आशा पूरी न हुई। दूसरोंके मालपर बहुत दिनोंतक मज़े उड़ा चुके, अब अपने कर्म्मोंका फल भोगो। इस समय मैं तुमसे जो कुछ कहता हूँ, वह अभी कागज़, क़लम लेकर लिख दो। इन्कार करनेसे तुम्हारी ख़ैरियत नहीं है। तुम्हारी करनीसे मैंने जैसा असह्य कष्ट पाया है, जो यन्त्रणा भोगी है, उससे मेरा धीरज छूट गया है। मैं अब ज़रा भी देर करना नहीं चाहता।"

डिलन, स्पाइक्स-कार्टरकी बातें सुन, क्रोधसे उन्मत हो, स्पाइक्सके ऊपर टूट पड़ा और उसने दोनों हाथोंसे उसे बेतरह जकड़ लिया। इसी झपटा-झपटीमें स्पाइक्सके हाथसे छूटकर पिस्तौल नीचे गिर पड़ी। स्पाइक्स-कार्टर उसे उठा न सका। दोनों कुश्ती लड़ते हुए ज़मीनपर गिर पड़े। कहीं डिलन चिल्लाकर अपने नौकरोंको न पुकारे, इसी डरसे स्पाइक्सने उसका गला दोनों हाथोंसे बड़े ज़ोरसे दबा दिया। बड़ी चेष्टा करके भी डिलन अपना गला न छुड़ा सका। वह दोनों हाथोंसे उसे घूँसे मारने और उसे अपने ऊपरसे हटा देनेकी कोशिश करने लगा; पर उसकी एक भी न चलने पायी। स्पाइक्स-कार्टर बड़ा साहसी, परिश्रमी और दुःख सहते-सहते मज़बूत हो गया था। दूसरे वह नौजवान भी था। पर डिलन बूढ़ा हो चला था और इधर दो वर्षोंसे इमारतकी गोदमें पड़ा-पड़ा नाजुक भी हो गया था। इसीलिये वह स्पाइक्सको परास्त न कर सका। तब डिलनने सोचा, कि यदि किसी प्रकार इसे घसीटकर बिजलीके घंटेके पास ले जा सकूँ, तो जान बच सकती है। यही सोच-कर वह स्पाइक्स-कार्टरको दीवारकी ओर वहाँका ले चला; पर उसका मतलब समझकर स्पाइक्स-कार्टर उसे दूसरीही तरफ़ ले गया। मारे जोशके उसकी छाती फल उठी, देहकी सारी नसें फूलकर मोटी रस्सीकी तरह दिखाई देने लगीं। उसने डिलनका गला नहीं छोड़ा; पर ऐसा भी नहीं दबाया, कि उसकी वहीं मृत्युही हो जाये। वास्तवमें वह डिलनकी जान लेना नहीं चाहता था। डिलन लड़ता-भिड़ता स्पाइक्सको इस

बार अँगीठीके पास खींच लाया और ज़मीनपर लम्बा पड़ गया। उसका इरादा किसी तरह स्पाइक्सको नीचे लाकर आप उसकी छातीपर चढ़ बैठनेका था, पर उसका यह मतलब भाँपकर स्पाइक्सने उसे गला दबायेही हुए बड़े ज़ोरसे खींचा। इसी खैंचा-तानीमें डिलनका सिर जलती हुई अँगीठीके ऊपर आ गया। मुहूर्त भरमें क्या से क्या हो गया, यह स्पाइक्सकी समझमें न आया। उसने देखा, कि डिलनके हाथ-पैर अचल होकर पड़ गये, साँस बन्द हो गयी। डिलनकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी!

यह देख, स्पाइक्सने घबराकर कहा,—"ओह! यह क्या हुआ? क्या डिलन मर गया? मैं तो इसे मारना नहीं चाहता था, पर मेरी बात अब कौन सुनेगा? जहाँ कहीं किसीने देखा, कि मैं मारा गया! अब क्या करूँ?"

स्पाइक्स-कार्टर क्षण-भरतक हतबुद्धिकी नाईं डिलनकी लाशके पास बैठा रहा। इसके बाद उसने बन्द दरवाज़ेकी ओर देखा। दरवाज़ा तो उसीने अपने हाथों बन्द किया था, इसलिये वह निश्चिन्त हो गया, कि जबतक वह स्वयं न खोलेगा, तबतक वहाँ कोई न आ सकेगा।

पहले तो उसके जीमें यही आया, कि लाइब्रेरीके पिछवाड़ेवाली खिड़कीसे कूदकर निकल भागूँ; पर एक तो लाइब्रेरीकी दीवारही बहुत ऊँची थी; दूसरे, खिड़की उससे भी और ऊँचेपर थी—अतएव वह समझ गया, कि इस तरह कूदना तो एकदम असम्भव है। उधरसे भागनेमें किसीके सामने पड़ जानेपर

विपत्ति सिरपर रखी थी ! इन्हीं सब बातोंको सोचते-विचारते हुए उसने यह स्थिर किया, कि मैं जिधरसे आया हूँ, उधरसेही जाना ठीक है।

पर वह तुरतही उस कमरेसे बाहर न हो सका। वह कुछ धन लेनेके इरादेसे यहाँ आया था ; पर यहाँ तो बातही कुछ और हो गयी। तब "आग लगन्ते झोपड़ा, जो निकले सो लाभ" के अनुसार वह, डिलनके डेस्कके पास आ, खोज-ढूँढ़ करने लगा। इतनेमें पास पड़े हुए तालियोंके गुच्छेपर उसकी नज़र पड़ी। उसे ले, एक तालीसे डेस्क खोला वह उसकी तलाशी लेने लगा। उसके भीतरसे हीरेकी खानके सम्बन्धके अनेक कागज़-पत्र उसके हाथ लगे। वे पीछे काम आयेंगे, यही सोचकर उसने उन्हें जेबके हवाले किया और एक-एक करके सब दराज़ खोल डाले। सबसे नीचेवाले दराज़में उसे कई क़ीमती और चमकते हुए हीरे मीले। वे सब खराद हुए नहीं थे। स्पाइवसने सोचा, कि इन टुकड़ोंको इस दुष्टने अपने साझी-दारोंको धोखा देकर अपने हाथमें कर लिया होगा। खैर, इन्हें लेकर जान-पैट्रिककी विधवा पत्नीकी यथेष्ट सहायता करूँगा और आप भी अपनी अवस्था सुधारूँगा—यही सोचकर उसने उन हीरेके टुकड़ोंको अपनी जेबमें डाल लिया। इसके बाद खोजते-ढूँढ़ते उसे कुछ रुपये भी मिल गये। उन्हें भी वह हथियाये बिना न रहा। तदनन्तर डेस्कको पहलेहीकी तरह बन्द कर, ज़मीनमें पड़ी हुई अपनी पिस्तौल उठाकर वह दरवाज़ेके पास चला आया और मन-ही-मन सोचने लगा, "मैं ज्योंही

बाहर हूँगा, त्योंही नौकरसे देखा-देखी होगी। अगर वह मेरे जानेबाद उलटे पाँवों यहाँ आ पहुँचे, तो बिना मुझे पकड़वाये न छोड़ेगा। इसलिये ऐसा इन्तज़ाम करना होगा, जिससे वह कुछ देरतक यहाँ न आये। क्या मैं ऐसी कोई बात कह कर नौकरको भुलावा न दे सकूँगा? मैं तो अब यहाँ रहनेका नहीं—जितनी जल्दी कैनेडाका जहाज़ मिलेगा, उतनीही जल्दी यहाँसे मुँह काला करूँगा। सबसे पहले पैट्रिककी पत्नीका दुःख दूर करना होगा।"

स्पाइक्स-कार्टर मन-ही-मन इन्हीं बातोंकी आलोचना करता हुआ दरवाज़ेको खोलकर बाहर हुआ और पीछेसे दरवाज़ेको बन्दकर हालमें आ पहुँचा। डिलनका नौकर वहाँ बैठा हुआ अपने मालिककी आज्ञाकी प्रतीक्षा कर रहा था।

स्पाइक्स-कार्टरने उससे स्वाभाविक स्वरमें ही कहा,— "तुम्हारे मालिकसे मेरी बड़ी देरतक बातें होती रहीं। मेरा काम हो गया। इस समय वे एकान्तमें बैठे कुछ लिख रहे हैं, इस लिये उन्होंने मुझसे कहा है, कि नौकरको साथ लेकर आप सड़कतक चले जाइयेगा, इसके बाद उससे कहियेगा, कि वह पहलेहीकी तरह चुपचाप हालमें बैठा मेरे हुक्मकी इन्तज़ारी करे। मेरे पास आकर मेरे काममें रोकटोक करनेकी कोई ज़रूरत नहीं।"

नौकरने भौंहें सिकोड़कर स्पाइक्स-कार्टरके चेहरेकी ओर देखा और भीठे स्वरसे कहा,—"अच्छा, ऐसा ही होगा। स्पाइक्स-कार्टरके अल्प मूल्यके कपड़े-लत्तों और रूखे वेशको देखकर उस नौकरने उसको 'महाशय' कहना भी उचित नहीं समझा। वह ...कार्टरको साथ लेकर हालसे बाहर हुआ और सड़क-

दरवाजे तक पहुँचा आया। राजपथमें आकर स्पाइक्स-कार्टरने पिकडलीकी ओर जाना आरम्भ किया और नौकर फिर हालमें चला आया। उसे लाइब्रेरीमें प्रवेश करनेका साहस तक नहीं हुआ।

स्पाइक्स-कार्टर यथासम्भव खूब जल्दी-जल्दी पिकडलीसे निकलकर बर्कले-स्ट्रीटके मोड़पर आया और रास्तेके किनारे खड़ा होकर सोचने लगा, कि अब किस रास्ते जाना चाहिये।

क्षणही भर बाद उसने उस रास्तेके बीचमें आ, अनमनासा होकर एक ओर जाना आरम्भ किया। एकाएक उसके पीछेसे बड़ी तेज़ सीटीकी आवाज़ आयी, जिसे सुनते ही वह एक ओर खड़ा हो गया। उसने सिर ऊपर उठाकर देखा, कि एक बड़ी-सी मोटर बड़े ज़ोरसे दौड़ी हुई चली जा रही है। अगर वह ज़रा भी देर वहाँसे हटनेमें करता, तो ज़रूर ही मोटरके नीचे आ जाता।

स्पाइक्स-कार्टरने बड़ी तीक्ष्ण दृष्टिसे उस मोटरको देखा उसने देखा, कि उसपर एक बड़ी ही सुन्दरी युवती बैठी है। उसकी बगलमें एक लम्बा-तगड़ा प्रौढ़ मनुष्य बैठा हुआ है। दोनोंही सन्ध्या-समयकी पोशाक पहने हुए हैं। उन्हें देखनेसे मालूम होता था, कि वे किसी जलसेमें शरीक होकर लौटे आरहे हैं। कुछ दूर जाकर मोटर एकाएक रुक गयी। कई एक गाड़ियाँ एकबारगी रास्तेमें आकर जमा हो गयीं, इसी लिये मोटरको रुक जाना पड़ा। इसी बीच स्पाइक्स-कार्टरने रास्तेके किनारे खड़ी हुई एक टैक्सीके शोफ़रसे कहा,—"मुझे उस मोटरके पीछे-पीछे जाना है, इस लिये वह जहाँ जाये, वहीं तुम भी चलो। कहीं नज़रसे बाहर न निकलने देना।"

यह कह, वह झटपट टैक्सीमें आकर बैठ गया। शौफ़र टैक्सीपर सवार हो, बड़ी तेज़ीसे पहली मोटरके पीछे-पीछे चला। दोही मिनटमें रास्ता साफ़ हो गया और वह मोटर फिर उसी तेज़ीके साथ दौड़ने लगी।

दूसरा परिच्छेद।

लण्डनके सभी दैनिक पत्रोंमें, दूसरेही दिन सवेरे, जे० कर्नेलियस डिलनकी आकस्मिक और असामयिक मृत्युका समाचार प्रकाशित हुआ। इस लोमहर्षण संवादको पढ़कर लण्डनके लोगोंमें बड़ी हलचल मच गयी। लोगोंके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। सबके हृदय उद्वेग और भयसे भर उठे। इतनाही नहीं, इस घटनाको लेकर सारे इङ्गलैण्डमें और डिलनके प्रधान कार्यक्षेत्र, कैनेडा-राज्यके पश्चिमी हिस्सेमें, बड़ा भारी आन्दोलन मच गया।

जिस समय डिलन, बड़ी भारी खानका आविष्कारक बनकर लण्डनमें आया और उसने हीरोंकी उज्ज्वल ज्योतिसे वहाँके बड़े-बड़े लोगोंकी आँखोंमें चकाचौंध पैदा कर दी और सबके विस्मय और श्रद्धाको अपनी ओर आकर्षित कर लिया था, उस समय भी इङ्गलैण्ड-भरमें ऐसीही हलचल मच गयी थी। उस समय लण्डनके पत्रोंमें डिलनके अद्भुत आविष्कारकी जो सब कथाएँ छपी थीं, उनमें सत्य कितना और कल्पना कितनी थी, यह जाननेका कोई उपाय न था। उन पत्रोंने लिखा था—

"धन्य डिलन! धन्य तुम्हारा अध्यवसाय और धन्य तुम्हारी कष्ट-सहिष्णुता! तुम हीरेकी खानके अनुसन्धानमें गरमीके दिनोंमें अकेलेही मैकेंजी-प्रान्तके निर्जन और मरुभूमिके समान प्रान्तरमें कितने धैर्य और सहिष्णुतासे कुदाली लेकर ज़मीन खोदा करते थे। कोई तुम्हारी सहायताके लिये आगे न आया, तुम किसीकी सहायता या सहानुभूति नहीं पा सके—उलटे लोग तुम्हारी यह अथक चेष्टा देख, तुम्हें पगला समझते और तुम्हारी हँसी मचाते रहे; परन्तु इन सब बातोंसे तुम ज़रा भी न डिगे; बल्कि अकृतकार्य होनेपर क्रमशः दुर्गमतर दक्षिणाञ्चलमें अग्रसर होते चले गये। पास खानेको न रहा, कपड़े-लत्ते फट गये, गाड़ीके कुत्ते खाये बिना एक-एक करके मरते चले गये, हथियार भी भोंटे पड़ गये—तोभी तुम्हारा अदम्य उत्साह शिथिल न हुआ। तुम नींद-भूखका ख़याल छोड़, जी तोड़कर अपने इच्छित फलकी खोजमें लगे रहे। अन्तमें तुमपर भाग्य-लक्ष्मी प्रसन्न होही गयी। तुमने 'श्रावेल'-नदीको पारकर कुछ दूर जातेही हीरेकी वह खान देखी, जिसके जोड़का हीरा किसी खानमें नहीं पैदा होता। यही तुम्हारे अदम्य उत्साह, विपुल श्रम-शक्ति, अतुलनीय स्वावलम्बन और सुदृढ़ सङ्कल्पका उचित पुरस्कार था! तुम्हारे पुरुषार्थका यह जीता-जागता प्रमाण है!" इत्यादि।

डिलनकी मृत्युका समाचार प्रकाशित करते हुए इन पत्रोंने फिर इन्हीं सब बातोंको दुहराया। बहुतोंने यह लिखा, कि स्वर्गीय मि० डिलन वर्तमान युगके कर्मवीरोंमें सर्वश्रेष्ठ आसन

पानेके अधिकारी थे। जिन लोगोंकी बदौलत हमारी जातीय सम्पत्तिकी वृद्धि हुई है, उनमें डिलनका नाम भी उल्लेखयोग्य है। इन सब पत्रोंमें डिलनके हत्या-काण्डके सम्बन्धमें जो सब समाचार प्रकाशित हुए, वे प्रायः लेखकोंके दिमाग़की उपज थे!

पर असल हाल किसीको भी मालूम न हो सका। जो कुछ मालूम भी हो सका था, उसे पुलिसने गुप्त रखा था; क्योंकि उसने सोचा, कि अगर यह सब हाल अख़बारोंमें छप जायेगा, तो आगे पुलिसके ढूँढ़-खोज करनेमें बाधा पड़ेगी।

डिलनका जो नौकर उसके हुक्मसे बड़े दालानमें बैठा था, वह वहाँ ग्यारह बजेतक बैठा रह गया। अन्तमें उकताकर वह सवाग्यारह बजे, बड़ी हिम्मत बाँधकर लाइब्रेरीके कमरेमें आया। आतेही उसने देखा, कि उसके मालिक अँगीठीके पास चित् पड़े हुए हैं, उनके हाथ-पैर अचल हो रहे हैं। नौकरने सोचा, कि शायद वे अँगीठीके पास आकर एकाएक बेहोश हो गये हैं। यह देख, वह झटपट उनकी बेहोशी दूर करनेके अभिप्रायसे उनके पास आया; पर आकर देखता क्या है, कि उनके ललाटपर कई स्थानोंमें रक्त लग रहा है—अँगीठीमें भी ख़ून लगा हुआ है। यह देख, उसने मालिकके सिरकी अच्छी तरह देख-भाल करनी शुरू की और उसमें गहरे ज़ख़्मका दाग़ देख, सोचा, कि किसीने उनके सिरमें मोटे अस्त्रसे बड़े ज़ोरसे आघात किया है। वह तुरतही समझ गया, कि डिलनके प्राण-पखेरू उड़ गये हैं। उसने डरते-डरते बाहर आकर थानेमें रिपोर्ट भेजी।

दूसरे दिन, दस बजे मशहूर जासूस, राबर्ट-ब्लेक और उनके

सुयोग्य सहकारी स्मिथको इस भेद-भरे हत्याकाण्डकी ख़बर मिली। बड़े भोरे, कोई अख़बार निकलनेके पहलेही ये दोनों एक कामसे समरसेट-ज़िलेके एक गाँवमें गये हुए थे। वहाँसे लौटते समय उन्होंने शहरमें आतेही दीवारोंपर चिपके हुए ह्युण्डबिलोंमें इस हत्याकाण्डका हाल पढ़ा। थोड़ी दूर और आगे बढ़नेपर अख़बारवालोंकी यह आवाज़ उनके कानोंमें पड़ी—"ख़ून! भयानक ख़ून!! हीरेके राजा कर्नेलियस डिलनका कल रातको अपने मकानमेंही ख़ून हो गया! असामी ला पता है! एकदम ताज़ी ख़बर है! लीजिये, बड़ी विचित्र घटना है!"—इत्यादि।

मोटर चलाते-चलाते मि० ब्लेकने स्मिथसे कहा,—"यह तो बड़ी विचित्र घटना हुई! कर्नेलियस डिलन कुबेरके समान धनी था—उसके घरमें जाकर कौन उसका ख़ून कर भाग आया? कुछ समझमें नहीं आता, कि मामला क्या है?" उस समय उन्हें इस बातकी कल्पना भी नहीं थी, कि घण्टे-भरके भीतरही उन्हें इस मामलेकी जाँचका भार मिलनेवाला है!

बेकर-ष्ट्रीटमें अपने घर पहुँचकर उन्होंने मोटरको यथास्थान रख दिया और आप स्मिथको लिये हुए चिन्तित चित्तसे अपने बैठकख़ानेमें आये। उस दिन उनके हाथमें बहुतसे ज़रूरी काम थे; ख़ासकर उस समय उन्होंने भोजन भी नहीं किया था, इसी लिये उनका जी उचटा हुआ था। उन्होंने सोचा, कि मेरे आनेकी इन्तज़ारीमें मिसेस बार्डेल बैठकख़ानेमें बैठी मिलेगी; पर वहाँ आतेही उन्होंने देखा, कि एक मोटा-मुस्टण्डा, ठिगने

क़द और अधेड़ उम्रका भला आदमी अँगीठीके पासही आराम-कुरसीपर डटा हुआ है।

मि० ब्लेक और स्मिथको आते देख, वह आदमी उठ खड़ा हुआ और मि० ब्लेककी ओर लक्ष्यकर बोला,—"क्या आपही मिस्टर राबर्ट ब्लेक हैं?"

मि० ब्लेकने कहा,—"हाँ, मैं ही तो हूँ। आप कौन हैं? आपको तो मैंने और कभी नहीं देखा था।"

आगन्तुकने कहा,—"ठीक है। मुझे आजसे पहले और कभी आपसे मिलनेका मौक़ा नहीं मिला। मेरा नाम कथबर्ट डिक्सन है। मुझे आपसे कई एक बातें कहनी हैं। यदि आप उन्हें सुन लें, तो मैं आपका बड़ा उपकार मानूँगा। आपकी गृहकर्त्रीने कहा था, कि आप बाहर गये हुए हैं, इसीसे मैं कोई आधघण्टेसे आपकी इन्तज़ारीमें यहाँ बैठा हुआ हूँ।"

मि० ब्लेकने एक चुरुट सुलगाते-सुलगाते कहा,—"मि० डिक्सन! मैं आपकी बातें सुननेके लिये तैयार हूँ—कहिये, क्या हुक्म है?"

मि० डिक्सनने खाँसते-खाँसते गला साफ़कर कहा,—"शायद आपने कल रातके भयङ्कर ख़ूनका हाल सुनाही होगा।"

सिगरेटका धुआँ फेंकते हुए मि० ब्लेकने कहा,—"मैं आज बड़े सवेरे शहरसे बाहर गया हुआ था, आते समय रास्तेमें मैंने बड़े-बड़े पुलेकार्डोंमें इस भयानक हत्याका समाचार लिखा देखा। लेकिन इसके सिवा मुझे और कुछ न मालूम हुआ, कि वे अपनी लाइब्रेरीमेंही मारे गये हैं।"

मि० डिक्सनने कहा,—“ये कार्ड हमीलोगोंने चिपकवाये हैं आप तो जानतेही होंगे, कि मि० डिलन “कैनेडियन नार्दर्न डाय-मण्ड माइन्स कम्पनी” के प्रधान अध्यक्ष थे। मैं उसी कम्पनीका सेक्रेटरी हूँ। मैं आपसे इसी ख़ूनके मामलेमें सलाह करने आया हूँ। मैंने आज सवेरे चाय पीते समय यह ख़बर सुनी—सुनतेही मैं बर्कले-स्क्वेयरमें अपनी कम्पनीके अध्यक्षके घर दौड़ा हुआ पहुँचा। आतेही देखा, कि चारों ओर पुलिसवाले पहरा दे रहे हैं—घरके सामने आदमियोंकी बेशुमार भीड़ लगी है। मैंने जब उस कमरेमें जाना चाहा, जिसमें उनका ख़ून हुआ था, तब पहले तो पुलिसने रोका; लेकिन पीछे जब मैंने अपना परिचय दिया, तब उसने मुझे जानेका हुक्म दे दिया। चाहे इनसे ख़ूनीका पता लगे या नहीं; पर ऊपरी रोब गाँठनेमें ये पुलिस-वाले कसर थोड़ेही रखते हैं?”

मि० ब्लेकने कहा,—“पुलिसने आपको रोककर उचितही काम किया था। आप कौन हैं, किस मतलबसे वहाँ जाना चाहते हैं, यह जाने बिना वे आपको कैसे वहाँ जाने देते?”

मि० डिक्सनने कहा,—“मैं यह नहीं कहता, कि पुलिसने अन्याय किया था—वास्तवमें उनकी सावधानी प्रशंसाकेही योग्य थी, इसमें सन्देह नहीं। जो हो, मैंने मि० डिलनकी लाइब्रेरीमें जाकर देखा, कि वहाँ पहलेसेही हमारी कम्पनीके दो-चार बड़े-बड़े शेयर-होल्डर्स आये हुए हैं। वहीं बैठकर हम लोगोंने बहुत तरहकी सलाहें कीं। अन्तमें यही निश्चय हुआ, कि केवल पुलिसकेही भरोसे न छोड़कर हमलोग कम्पनीकी

तरफ़से भी हत्यारेका पता लगानेकी चेष्टा करें। पुलिस तो अपनी शक्तिभर चेष्टा करेगीही, इसमें सन्देह नहीं ; परन्तु तोभी हमलोगोंने निश्चय किया, कि लण्डनके सबसे बड़े जासूसको यह भार सौंप देना ज़रूरी है।"

मि० ब्लेकने कहा,—"आपलोगोंका विचार बहुत ठीक है। अब आप यह कहिये, कि मेरे पास किस लिये आये हैं ?"

मि० डिक्सनने कहा,—"मि० ब्लेक ! आपसे मेरी जान-पहचान नहीं है ; पर मैं आपकी शक्ति, सामर्थ्य और प्रभावकी बात भलीभाँति जानता हूँ। मुझे इस बातकी बहुतही कम आशा है, कि पुलिस इस मामलेके खूनीको पकड़ सकेगी। यदि यह काम होसकता है, तो केवल आपसेही। इसीलिये मैं आपके पास आया हूँ और प्रार्थना करता हूँ, कि आप इस मामलेको अपने हाथमें लीजिये। साथही यह भी कहिये, कि आपको हम क्या नज़र करें ? आप जितना माँगेंगे, उतनाही कम्पनीकी ओरसे दिया जायेगा।"

अपने अधजले चुरुटकी राख झाड़ते-झाड़ते मि० ब्लेकने कहा,—"देखिये, मि० डिक्सन ! मैं इस हत्याके विषयमें और कुछ नहीं जानता—सिर्फ़ इतनाही सुना है, कि मि० डिलनको किसी हत्यारेने उनके पुस्तकालयमेंही मार डाला है। इस मामलेका पूरा-पूरा हाल जाने बिना मैं यह नहीं कह सकता, कि मैं इसका भार ले सकता हूँ या नहीं।"

मि० डिक्सनने कहा,—"मैंने जो कुछ मालूम किया है, वह मैं आपको सुनाये देता हूँ। कल रातको दस बजे मि० डिलन,

अपनी लाइब्रेरीमें डेस्क सामने रखकर कुछ लिख रहे थे। इसी समय उनके नौकरने आकर कहा, कि एक आदमी आपसे मिलने आया है और बिना मिले जाना नहीं चाहता। उस समय वे किसीसे मिलना नहीं चाहते थे; क्योंकि आज हमारी कम्पनीके हिस्सेदारोंकी मीटिङ्ग होनेवाली थी। इस मीटिङ्गमें जिन सब बातोंकी आलोचना होनेवाली थी, उन्हींपर वे विचार कर रहे थे और उन्हींके सम्बन्धमें कुछ लिख भी रहे थे। फुर्सत न होनेपर भी उस आदमीकी हठ देख, उन्होंने नौकरको उसे बुला लानेके लिये कहा। ठीक सवा दस बजे वह आदमी उनकी लाइब्रेरीमें दाखिल हुआ। यह सब हाल उसी नौकरने बतलाया है। उसने और भी कहा है, कि मालिकने उसे चुप-चाप बैठने और बिना बुलाये न आनेका हुक्म दिया था; पर आगन्तुकके बहुत ज़िद करनेपर वह लाचार हो, मालिकके पास उसके आनेकी ख़बर देने गया था। इसपर वे बहुत झल्लाये भी थे। उन्होंने आगन्तुकको भेजनेके लिये कहकर उस नौकरको फिर भी हुक्म दिया, कि हालमें जाकर बैठो—घंटी बजानेपर आना। ऐसी आज्ञा पा, वह हालमें जाकर एक तिरपाईपर बैठ रहा।"

मि० ब्लेकने पूछा,—"इसके बाद क्या हुआ?"

मि० डिक्सनने कहा,—"नौकरका कहना है, कि वह वहाँ आध घंटेतक बैठा रहा। इसके बादही वह आदमी लाइब्रेरीसे बाहर हुआ और बोला, कि मुझे बाहरतक पहुँचा आओ और फिर यहीं आकर बैठे रहो, मालिकके काममें रोक, टोक न करना,

ऐसाही उन्होंने मुझे तुमसे कहनेको कहा है। यह सुन-कर वह नौकर उस आदमीको घरके बाहर तक पहुँचा आया। जब वह पिकडलीके अन्दर जाकर गायब हो गया, तब वह फिर अपनी जगहपर आकर बैठ रहा। प्रतिदिन रातको ग्यारह बजे मि० डिलन लाइब्रेरीमें बैठे-बैठे सोडा और ह्विस्की पिया करते थे; पर कहीं वे जानेसे नाराज़ न हो जायें, इसी डरसे वह नौकर ह्विस्की-सोडा लेकर उनके कमरेमें नहीं गया। सवा ग्यारह बज जानेपर भी जब मालिकने कोई आवाज़ न दी, तब वह घबराकर लाइब्रेरीके अन्दर सोडा और ह्विस्कीको तश्तरी लिये हुए दाखिल हुआ। पहले तो उसने बाहरसेही पूछा, कि आनेकी आज्ञा है या नहीं? पर जब उसका कोई उत्तर न मिला, तब धड़-धड़ाते हुए भीतर चला गया। उसने आतेही देखा, कि मि० डिलन अँगीठीके पास चित् पड़े हुए हैं!

"तब तश्तरीको एक मेज़पर रखकर वह उनकी देहकी परीक्षा करने लगा। पर वह तुरतही समझ गया, कि प्राण शरीरको छोड़ गये हैं! झटपट बाहर आकर उसने थानेमें ख़बर भेजी। मैंने सुना है, कि डाकृरने मृत-देहकी परीक्षाकर कहा है, कि मि० डिलनके ललाटमें जो चोट लगी है, उसीसे उनकी मृत्यु होगयी है। पुलिसका ख़याल है, कि उनका सिर गरमागरम अँगीठीपर गिर पड़नेसेही उनकी अचानक मृत्यु होगयी है। इससे अधिक और कुछ नहीं मालूम हो सका। हाँ, पुलिसने उनके डेस्ककी तलाशी लेकर अपना यह मत प्रकट किया है, कि किसीने उसके तमाम काग़ज़-पत्र उलट-पुलट कर दिये हैं। इसीलिये

पुलिसका विश्वास है, कि खूनी चोरीकी नीयतसेही आया और उनको खूनकर चला गया ; लेकिन मुझे और भी कुछ गुप्त बात मालूम है। मैंने अपने साथियोंके कहे अनुसार अबतक वह सब हाल पुलिससे नहीं कहा। आप इस मामलेको अपने हाथमें ले लें, तो आपसे ज़रूर कह दूँगा। मेरी बातें सुनकर आपको मालूम हो जायेगा, कि आगन्तुक चोरी करनेही आया था। इतनाही नहीं, मैं आपको जो बात बतलाऊँगा, उनके सहारे शायद आप खूनीका पता बहुत जल्दी लगा लेंगे। मैंने आपको अपने जानते-भर सब बातें बतला दीं। अब आप कृपाकर मेरे साथ एकबार बर्कले-स्ट्रीटवाले मि० डिलनके मकानपर चलिये, मि० डिलनके कोई आत्मीय-स्वजन नहीं है। इसलिये जबतक उनकी जायदाद वग़ैरहका झगड़ा तै नहीं होता, तबतक कम्पनीकी ओरसे मैंही सब कामकाजकी देखभाल करूँगा। देखिये, यह कैसे शोककी बात है, कि इतने बड़े करोड़पतिके मरनेपर दो बूँद आँसू गिरानेवाला कोई न रहा!"

मि० ब्लेकने कहा,—"सचमुच यह बड़े शोककी बात है। भगवान्‌की ऐसी कुछ विचित्र लीला है, कि जिसके घर दस बाल-बच्चे खानेवाले हैं, उसे तो पैसोंकाही रोना होता है और जो रुपयेके चबूतरेपर बैठा है, उसके धनका कोई भोगनेवालाही नहीं है। जो हो, आपने मि० डिलनके खूनके बारेमें जितनी बातें मुझे बतायीं, उतनी किसी अखबारके पढ़नेसे कभी न मालूम होतीं। आपकी बातें सुनकर मेरा कौतूहल बढ़ गया है। मैं

आपके साथही बर्कले-स्ट्रीट चलता हूँ। मेरी मोटर तैयार है—आइये, आप भी उसीपर चले चलिये।"

मि० डिक्सनने कहा,—"आपकी बातोंसे मुझे बड़ा धैर्य हुआ।"

मि० ब्लेकने स्मिथको लक्ष्यकर कहा,—"स्मिथ! तुम भी हमारे साथ चलो। खाना-पीना अभी मुलतवी रखो।"—

ज्योंही मि० ब्लेक, मि० डिलनके घरके पास पहुँचे, त्योंही उन्होंने देखा, कि वहाँ प्रायः पाँच सौ आदमी जमा हैं। सभी बड़े ग़ौरसे उस मकानको देख और हत्याके सम्बन्धमें बातें कर रहे हैं। मोटर वहाँतक लेजानेका उपाय न देख, मि० ब्लेक बर्कले-होटलके सामनेही गाड़ीसे नीचे उतरे और होटलवालोंके ज़िम्मे गाड़ीको रखकर, वे अपने दोनों साथियोंके साथ मि० डिलनके मकानपर आपहुँचे।

तीसरा परिच्छेद

बर्कले-स्ट्रीटवाले मि० डिलनके मकानके सामनेवाले बरसाती-बरामदेमें पहुँचकर मि० ब्लेकने दो पुलिसवालोंको देखा, जिनमें एकको वे पहचानते थे और वह भी उनको पहचानता था। इसीलिये वे चुपचाप रास्ता छोड़कर हट गये। एक कान्सटेब्ल उनलोगोंको घरके अन्दर लेचला।

उस लम्बे-चौड़े मकानके नीचेवाले हिस्सेमें बहुतसी कोठरियाँ थीं। इंग्लेण्डके शौकीनों और बड़े आदमियोंके मकानमें

जो सब विशेषताएँ रहती हैं, वे सब इस नये नवाबके घरमें भी थीं। बावर्चीख़ाना, दफ़्तरख़ाना, नौकरोंके रहनेके घर, ड्राइङ्ग-रूम, भोजनागार, शयनागार, लाइब्रेरी, स्नानागार इत्यादि नीचेके हिस्सेमें ही थे। इसी लाइब्रेरीमें मि० डिलनकी मृत्यु हुई थी। दोतल्लेमें दो सोनेके कमरे, एक पोशाक बदलनेका कमरा और एक स्नानागार आदि थे; लेकिन दोतल्ला प्रायः सदाही ख़ाली पड़ा रहता था। तिनतल्लेमें नौकरोंके रहनेके लिये तीन कमरे थे, एकमें तो प्रधान ख़ानसामा रहता था, दूसरेमें बावर्ची अपनी स्त्रीके साथ रहता था और तीसरेमें तीन-चार नौकर रातको आकर सोया करते थे। इस मकानके सभी कमरे ख़ूब उम्दः तौरसे सजे हुए थे, और ऐसे सजीले मालूम होते थे, कि वैसे शायद किसी लार्डके घरके कमरे भी न होंगे। होते भी क्यों नहीं? जिसके हाथमें हीरेकी खान थी, उसे पैसेकी क्या कमी थी? दूसरे, वह ग़रीबसे एकबारगी धनकुबेर हो गया था, फिर उसकी शान-शौक़तका क्या कहना है? देश-भेदसे मनुष्यकी रुचिमेंही भेद होता है, पर मानव चरित्रकी जो दुर्बलता है, वह हर जगह एकसी रहती है। हमारे यहाँ भी कहावत है, कि 'जल थोड़े धन खल बौराई।' पर यहाँ तो खलको, थोड़ा धन नहीं होकर, अपार धन होगया था, फिर उसकी नवाबी क्यों न आसमानसे भी ऊँचे उठनेकी चेष्टा करती?

मि० डिक्सनके साथ-साथ मि० ब्लेक हाल पारकर लाइ-ब्रेरीमें आये। वहाँ 'स्काटलैण्ड-यार्ड' नामक थानेके सुप्रसिद्ध डिटेक्टिव-इन्सपेक्टर टामसको देख, वे ठिठककर खड़े होरहे।

इन्सपेक्टर टामस इस समय कौचपर पड़ा-पड़ा बड़े ग़ौरसे न जाने किस चीज़को देख रहा था। उसके पीछे दो कान्सटेब्ल थे। वे नोट-बुक लिये कुछ लिख रहे थे। उनके सिवा एक आदमी और था, जो डाक्टर मालूम पड़ता था। उसके हाथमें एक अध खुलाबेग था। मि० ब्लेकको आते देख, उसने झटपट अपना वह बेग बन्द कर लिया।

मि० ब्लेकको देखतेही डिटेक्टिव-इन्सपेक्टर कौचपरसे उठ खड़ा हुआ और आश्चर्यके साथ बोला,—"अहा! मि० ब्लेक! आप किधरसे आपहुंचे?"

उसकी यह बात सुनतेही मि० ब्लेक समझ गये, कि टामस मुझे देखकर खुश नहीं हुआ।

मि० ब्लेक, कमरेके अन्दर आ, अपना स्वभाव-सिद्ध शिष्टाचार दिखलाते हुए बोले,—"मि० डिक्सन मुझे घरसे पकड़े लिये आरहे हैं। उनकी इच्छा है, कि मैं इस मामलेको अपने हाथमें लेकर खूनीका पता लगाऊँ। मुझे यह नहीं मालूम था, कि तुम पहलेसेही इस मामलेको अपने हाथमें लेचुके हो। तुम्हारे जैसे होशियार डिटेक्टिवने जिस मामलेमें हाथ डाला है, उसमें दस्तन्दाज़ी करना, मैं फ़िज़ूल समझता हूं।"

मि० ब्लेकसे मशहूर जासूसके मुंहसे अपनी प्रशंसा सुनकर खुश न हो, ऐसा पुलिस-कर्मचारी "स्काट-लैण्ड-यार्ड" नामक थानेमें एक भी न था। इन्सपेक्टर टामस, मि० ब्लेककी बात सुन, एकबारगी फूलकर कुप्पा हो गया! वह सचमुच अपनी मौजूदगीमें मि० ब्लेकका आना बेकार समझने लगा।

लोभी ऊपरी शिष्टाचार दिखानेके लिये बोला,—"नहीं, नहीं—आपका आना हरगिज़ बेकार नहीं है। इस कमरेकी जाँच कीजिये—देखिये, मेरी समझसे आपकी समझका मेल होता है या नहीं। मेरा तो विश्वास है, कि ज़रूरही मेरे आपके विचार मिल जायेंगे।"

इन्सपेक्टर टामसने अपने मनमें क्या सोच-समझ रखा है, यह पूछे बिनाही मि० ब्लेक गम्भीरभावसे जाँच करने लगे। उन्होंने सबसे पहले डिलनकी लाश देखी और सारी देहकी परीक्षाकर उसके ललाटपरका वह चिह्न देखने लगे। देखतेही वे समझ गये, कि यह चोट गरमागरम अग्नि-कुण्डपर गिर पड़नेसेही आयी है। उस समयतक उसके उस घावसे ख़ून बह रहा था।

इन्सपेक्टर टामसने मि० ब्लेकसे कहा,—"आप मेरे साथ आइये। तो मैं आपको वह स्थान दिखलाऊँ, जहाँ मि० डिलन मारे गये हैं।"

यह सुन, वे टामसके साथ-साथ अग्नि-कुण्डके पास आये। टामसने कहा,—"यह देखिये, अग्नि-कुण्डके लोहेसेही उनको चोट आयी थी—अब भी इसमें ख़ून लग रहा है। इसके नीचे ज़मीनमें भी ये कई जगह ख़ूनके दाग़ लगे हुए हैं।"

मि० ब्लेक वहीं घुटने टेककर बैठ रहे और जेबसे "मैगनिफाइङ्ग्लास" (ख़ुर्दबीन) निकालकर उसीके सहारे उस स्थानकी परीक्षा करने लगे। उन्होंने देखा, कि ख़ूनके साथ-ही-साथ अग्निकुण्डके लोहेमें दो-तीन बाल भी चिपटे हुए हैं। यह देख,

उन्होंने एक पतले चिमटेसे वे बाल खींच लिये। इसके बाद खिड़कीके पास जा, वे मैग्निफ़ाइङ्ग्लाससे उन बालोंकी परीक्षा करने लगे। इसके बाद वे उन्हें एक काग़ज़में लपेटकर इन्स-पेक्टर टामससे बोले,—"ये बाल मि० डिक्सनकेही हैं, इसमें सन्देह नहीं। लोहेमें इस क़दर ज़ोरसे बेचारेका सिर टकराया, कि घावसे बेहिसाब ख़ून निकल पड़ा—अच्छा, इन्सपेक्टर! तुमने और किस बातका पता लगाया है?"

इन्सपेक्टरने सिर हिलाते हुए कहा,—"मैं और किसी बातका पता न लगा सका। पता लगाकरही क्या होगा? मामला तो आइनेकी तरह साफ़ है। यह ख़ून जान-बूझकर किया गया है। हत्यारा इसी इरादेसे आया था। उसका मतलब या तो चोरी करनेका रहा होगा या पुराना वैर भँजानेका। हत्यारा कैसा आदमी था, यह भी मैं कुछ-कुछ समझ रहा हूँ।"

मि० ब्लेक,—"अच्छा! तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ, कि यह हत्या पुराना वैर भँजानेके लिये की गयी है?"

टामस,—(भौंहें टेढ़ी कर) "मैं बहुत सोच-विचारकर इस सिद्धान्तपर पहुँचा हूँ। मैं अच्छी तरह देख चुका हूँ। कि यहाँकी कोई क़ीमती चीज़ चोरी नहीं गयी—हाँ, अगर कुछ काग़ज़-पत्र गुम होगये हों, तो मैं नहीं कह सकता। तब यदि वह चोरीके मतलबसे नहीं आया, तो ज़रूर पुराना वैर भँजानेके इरादेसे आया होगा। ऐसा अनुमान करना, तो बेजा नहीं कहा जा सकता?"

इन्सपेक्टरकी बात सुन, मि० डिक्सन कुछ कहना चाहते थे; पर मि० ब्लेकने आँखके इशारेसे उन्हें चुप कर दिया इसके

बाद उन्होंने टामससे कहा,—"तुमने मि० डिलनके डेस्कके दराज़ खोलकर देखे हैं या नहीं? उसके काग़ज़ तुम्हें उलटे-पुलटे हुए नज़र आये या नहीं?"

इन्सपेक्टरने कहा,—अच्छा, वह भी देख लेना चाहिये।"

यह सुन, मि० ब्लेक डेस्कके पास चले आये और उसके दराज़ोंको खोलकर देखने लगे। यद्यपि काग़ज़-पत्र उलटे-पुलटे हुए मिले, तथापि वे समझ गये, कि इन काग़ज़ोंको कोई लेकर ही क्या करता? हाँ, मि० डिलनके लिये ये ज़रूर ही क़ीमती थे। वास्तवमें उन्हें दराज़की कोई चीज़ ग़ायब होनेका सुबूत नहीं मिला। डेस्कका सबसे नीचेवाला दराज एकदम ख़ाली था। उसमें कोई चीज़ रखी थी, या नहीं, यह वे न जान सके। पर न जाने क्यों, उन्हें सन्देह हुआ, कि ज़रूर इसमें कोई चीज़ रखी रही होगी। पर अपना यह सन्देह उन्होंने इन्सपेक्टर टामसपर नहीं प्रकट किया।

जब उन्होंने डेस्कको बन्द कर दिया, तब इन्सपेक्टरने कहा—"मेरी जाँच ख़तम हो गयी, अब कुछ जानना नहीं रहा। इसलिये मैं थानेमें जाता हूँ। आप तो अभी कुछ देर यहाँ रहेंगे? मैं इस ख़ूनके मामलेमें आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ। इसलिये बड़ी दया हो, यदि आप घर जाते समय 'स्काटलैण्ड यार्ड' होते हुए जायें। मुझे थानेमें पहुँचकर ख़ूनीको गिरफ्तार करनेकी तुरत व्यवस्था करनी पड़ेगी।"

मि० ब्लेक,—"क्या व्यवस्था करोगे? ख़ूनीके-चेहरे-मोहरेका हुलिया किसीने बतलाया है क्या?"

इसपर इन्स्पेक्टरके इशारा करतेही उसके साथके एक कान्स्टेब्लने एक नोट-बुक उसके हाथमें दी, जिसे खोलकर उसने पढ़ा,—“खूनी पाँच फ़ीट दस-ग्यारह इञ्च लम्बा है, बहुत दिन धूपमें दौड़ते-दौड़ते उसके शरीरका रङ्ग फीका पड़ गया है; चलते समय खूब अकड़कर चलता है और दोनों हाथ घुमाता रहता है। सिरके बाल काले और आँखें नीली हैं। बदनमें नीले रङ्गका सरजका बना हुआ कोट पहने है; पर बहुत दिनका पुराना होनेसे वह मैला हो रहा है; कोटके कालर उलटे हुए हैं, कोटके नीचे फ़लालैनकी कमीज़ है। उसके बायें कानके नीचे एक ज़ख्मका दाग़ है।” इतना पढ़नेके बाद इन्स्पेक्टर टामसने कहा,—“यह सब बातें मुझे मि० डिलनके उसी नौकरसे मालूम हुई हैं, जो खूनीको अपने साथ-साथ लाइब्रेरीमें ले आया और फिर बाहर जाते समय रास्तेतक पहुँचा आया था। अब उससे जिरह करनेपर मैंने जो बातें मालूम कीं, वह भी सुन लीजिये। “हत्यारा बड़ी जल्दी-जल्दी चलता है, बोली खनखन है, बड़ी तेज़ और रूखी आवाज़ निकलती है। बातें करते-करते उसकी भौंहें टेढ़ी हो जाती हैं; परन्तु इन सब बातोंसे उसे ढूँढ़ निकालनेमें शायदही मदद मिले। उसे पहचाननेमें उसके कानके नीचेवाला ज़ख्मका दाग़ही काम देगा। मि० डिलनके नौकरका कहना है, कि वह दाग़ इतना साफ़ और बड़ा है, कि वह उसे किसी तरह नहीं छिपा सकता।”

इसके बाद दो-चार इधर-उधरकी बातोंके बाद मि० टामस अपने कान्स्टेब्लोंके साथही चल पड़ा। अब उस कमरेमें मि० ब्लेक,

स्मिथ और डिक्सनके सिवा और कोई न रह गया। तब मि० ब्लेकने कहा,—"मि० डिक्सन! आप कृपाकर ज़रा उस नौकरको बुलवाइये, जिसने ख़ूनीको देखा था। मैं उससे दोचार बातें पूछना चाहता हूँ।"

तदनुसार मि० डिक्सन उस नौकरको बुला-लानेके लिये कमरेके बाहर चले गये। मौक़ा पाकर मि० ब्लेक स्मिथके साथही साथ उस कमरेकी एक-एक चीज़को भली भाँति देखने-भालने लगे। दरवाज़ा, खिड़की, फ़र्श, दरी, कुरसी, मेज़, कोई चीज़ उनकी नज़रोंसे छिप न सकी। कुछही मिनटोंमें मि० डिक्सन उस नौकरको लिये हुए चले आये।

मि० ब्लेकने एक बार उसे सिरसे पाँवतक देखकर मालूम कर लिया, कि उसपर सन्देह करनेका कोई कारण नहीं है। वे समझ गये, कि वह बड़ा सीधा-सादा आदमी है। पुलिसवालोंको उसपर भी सन्देह हुआ था, पर वे समझ गये, कि इस बेचारेपर सन्देह कर पुलिसने बेजा काम किया है। पर पुलिसकी तो रीतिही न्यारी ठहरी—यह उसके लिये कुछ असम्भव थोड़े है?

मि० ब्लेकको इस तरह नज़र गड़ा-गड़ाकर देखते देख, नौकर-की जान सूख गयी। उन्होंने पूछा,—"तुम्हारा नाम क्या है?"

कौचपर पड़ी हुई अपने मालिककी लाशकी ओर देखते-देखते बड़ेही कातर-भावसे नौकरने कहा,—"मेरा नाम ग्रीग्स है।"

मि० ब्लेक,—"तुम्हें तो यह मालूमही होगा, कि इस समय मि० डिक्सनही तुम्हारे मालिकका सब काम कर रहे हैं?"

ग्रीग्स,—"जी हाँ। इस समय तो आपही हमारे मालिक हैं।"

मि० ब्लेक,—"इन्होंने मुझे तुम्हारे मालिकका खून करनेवालेको पकड़नेका भार सौंपा है; पर इस काममें तुम्हारी मदद दरकार है। बोलो, तुम मेरी मदद करोगे न ?"

ग्रीग्स,—"इसमें भी कुछ कहना है? मैं हज़ार जानसे आपकी मदद करनेको तैयार हूँ।"

मि० ब्लेक,—"अच्छी बात है। तुमने वफ़ादार नौकरकीसी बातही कही है। अब तुम एक-एक करके रातका कुल हाल सुना जाओ। यद्यपि मि० डिक्सनने मुझसे सब कुछ कहा है, तथापि मैं एकबार तुम्हारे मुँहसे सारा क़िस्सा सुन लेना चाहता हूँ।"

ग्रीग्सने वही सब बातें फिर कह सुनायीं, जो डिक्सनने पहलेही मि० ब्लेकको कह सुनायी थीं। इसीलिये हम उन्हें दुहराना अच्छा नहीं समझते।

ग्रीग्सकी बात पूरी हो जानेपर मि० ब्लेकने पूछा,—"वह आदमी रातके कै बजे तुम्हारे पास आया था?"

ग्रीग्स,—"लगभग दस बजेके।"

मि० ब्लेक,—"उसका चेहरा-मोहरा कैसा था?"

ग्रीग्स,—"वह आदमी मुझसे भी कुछ लम्बा था। उमर तेईस-चौबीस वर्षसे अधिक न होगी। धूपमें अधिक चलने-फिरनेसे उसकी देहका रङ्ग काला पड़ गया था। वह एक नीले सरजका कोट पहने था, जो बहुत पुराना होनेके कारण मैला हो रहा था। कोटके कालर उलटे हुए थे। उसके नीचे फ़लालैनकी क़मीज़ थी। जिस समय वह मेरे पास आकर बातें करने लगा, उसी समय मेरी दृष्टि उसके बायें कानके नीचेवाले

एक बड़े भारी ज़ख़मके दाग़पर जा पहुँची—उसका कुछ हिस्सा 'कालर'से ढक गया था। उसकी अवस्था अच्छी होती, तो वैसी भद्दी पोशाक नहीं पहनता।"

मि० ब्लेक,—"कोट तो कई तरहके होते हैं, वह कैसा कोट पहने हुए था?"

ग्रीग्स,—"डबल-ब्रेस्टका कोट था।"

मि० ब्लेक,—"क्या तुमने कभी जहाज़पर चढ़कर विदेशकी सैर की है?"

ग्रीग्स,—"हाँ, मैं एक बार मालिकके साथ इटली गया था।"

मि० ब्लेक,—"तब तो तुमने जहाज़के कर्मचारियोंको देखाही होगा? क्या वह आदमी जहाज़वालोंकीही तरह नीले रङ्गका 'डबल-ब्रेस्ट कोट' पहने हुए था?"

ग्रीग्स,—"आपने ठीक कहा। बिलकुल उसी तरहका कोट था। तब क्या वह किसी जहाजमें काम करता था? चेहरा भी तो जहाज़ी गोरेकासाही था—अच्छा लम्बा-तगड़ा डील-डौलका जवान था!"

मि० ब्लेक,—"तुमने अभी कहा है, कि उसके सिरके बाल काले थे।"

ग्रीग्स,—"हाँ। जब उसने टोपी उतारी थी, तभी मैंने देखा, कि उसके बाल काले हैं; पर एकदम काले नहीं थे—ज़रा लाल रङ्ग लिये हुए थे।"

मि० ब्लेक,—"उसकी टोपी कैसी थी?"

ग्रीग्स,—"काले रङ्गकी।"

मि० ब्लेक,—"उसके पैरोंमें जूते किस तरहके थे ?"

ग्रीग्स,—"काले रङ्गके फटे-पुराने जूते थे।"

मि० ब्लेक,—"अच्छा, वह जो कोटके नीचे फ़लालैनकी कमीज़ पहने हुए था, उसका रङ्ग कैसा था ?"

ग्रीग्स,—"ख़ाकी।"

मि० ब्लेक,—"उसके बायें कानके नीचे जो ज़ख़मका दाग़ था, वह कैसा था ?"

ग्रीग्स,—"उसका कुछ थोड़ासा अंश कोटके कालरसे ढका हुआ था, इसीसे मैं उसे पूरा नहीं देख सका। तोभी जितना देखा, उसीसे मालूम हुआ, कि उसे वहाँ गहरा घाव लगा था, जिससे गड्ढा पड़ गया और भरते-भरते भी कुछ निशान गड्ढे-का रही गया। शायद कहीं चोरी करने जाकर उसने संगीनकी मार खायी होगी।"

मि० ब्लेक,—"वह बातें कैसी करता था ? क्या उसकी बातचीत लण्डन-वालोंकीसी थी ?"

ग्रीग्स,—"उसके गलेसे खनखन आवाज़ निकलती थी। उच्चारण भी उसका और ढंगका था। बातोंसे वह स्काटलैण्ड या अस्ट्रेलिया वग़ैरहकी तरफ़का रहनेवाला मालूम पड़ता था। लण्डनकी बोलीही कुछ और है। मेरा एक भाई कैनेडामें रहता है। वह जब कभी आता है, तब ऐसीही बोली वह भी बोलता है।"

मि० ब्लेक,—"वह जब यहाँसे गया, तब रातके कै बजे थे ?"

ग्रीग्स, "प्राय साढे दस बजे होंगे"

मि० ब्लेक,—"तुम तो उसके साथ सदर-रास्तेतक गये थे न?"

ग्रीग्स,—"नहीं कैसे जाता? सालेने मुझे वह सब्ज़बाग़ दिखाया, कि मैं उसके झाँसेमें आ गया। उसने कहा, कि तुम्हारे मालिकने तुमको मुझे रास्तेतक पहुँचा आनेका हुक्म दिया है। उस समय मुझे यह थोड़ेही मालूम था, कि खूनी खून करके भागा जा रहा है? वह रास्तेमें पहुँचकर जब पिकडलीकी ओर मुड़ा, तब मैं भी यहाँ चला आया। मालिक ज़रूरी काममें लगे हुए हैं, उनके काममें बाधा डालना ठीक नहीं, यही सोचकर मैं उनके पास तुरतही जानेकी हिम्मत न कर सका।"

मि० ब्लेक,—"अच्छा, अब तुम चले जाओ। मुझे और कुछ पूछना नहीं है।"

यह सुन, ग्रीग्स मि० ब्लेकको सलाम कर चला गया। उसके चले जानेपर मि० ब्लेकने कहा,—"मि० डिक्सन! अब आप मुझे वह गोपनीय बात बतलाइये, जो आप मि० डिलनके विषयमें बतलाना चाहते थे।"

मि० डिक्सनने कहा,—"इन्स्पेक्टर टामसका यह कहना, कि खूनी चोरीके इरादेसे नहीं, बल्कि बदला लेनेके इरादेसे आया था, ठीक नहीं था। मेरा ख़याल है, कि वह बदमाश चोरीही करने आया था। मेरी बातें सुनकर आपकी भी ऐसीही धारणा होगी। मि० डिलनने, दो दिन पहले, मुझे इसी कमरेमें बुलाया था और बहुत तरहकी बातोंके बाद इसी डेस्कके सबसे नीचे-वाले दराजमेंसे कई एक बड़े-बड़े और कीमती हीरे निकालकर

दिखलाये थे उन्होंने मुझसे कहा था, कि अभी हालमें केने डासे जो हीरेका चालान आया है, उसीमें ये भी मिले हैं। वे हीरे खरादे और साफ़ किये हुए नहीं थे, तोभी उनका आकार और उज्ज्वलता देख मैं अचम्भेमें पड़ गया। उन्होंने यह भी कहा, कि मैं इन्हें अभी न बेचूँगा, हिफ़ाज़तसे रख छोड़ूँगा। पर आज देखता हूँ, कि वह दराज़ एकदम ख़ाली है। वह बदमाश ज़रूर उन्हें चुरा ले गया है। यह कैसे कहा जा सकता है, कि वह चोरी करने नहीं आया था? इन हीरोंकी बात मैंने अभीतक और किसीसे नहीं कही थी।"

मि० ब्लेक,—"अच्छाही किया था। अब भी इस बातको गुप्तही रखियेगा।"

मि० डिक्सनकी बात सुन, मि० ब्लेकने फिर एकबार उस दराज़को खोलकर देखा। इसके बाद सिर नीचा किये कुछ सोचही रहे थे, कि इतनेमें एक मामूली पोशाकवाला कान्स्टेबल वहाँ पहरा देनेके लिये आ पहुँचा।

मि० ब्लेकने उससे दो-चार बातें कह, मि० डिक्सन और स्मिथको वहाँसे बाहर चले जानेका इशारा किया। इसके बाद वे स्वयं भी वहाँसे चलकर हालमें आ पहुँचे।

मि० ब्लेक, मि० डिक्सनको हालके एक कोनेमें लेजाकर, बोले,—"अब मेरा यहाँका काम पूरा हो गया। जाँच ख़तम हो गयी सही, पर अभीतक मैं किसी नतीजेपर नहीं पहुँचा हूँ। ख़ूब सोचे-समझे बिना आपसे कुछ नहीं कह सकता। हाँ, इतना कहे देता हूँ, कि अगर आपको मि० डिलनकी कोई व्यक्तिगत और

गुप्त कथा मालूम हो, तो उसे किसीपर ज़ाहिर न कीजियेगा। पुलिस ख़ूनीको पकड़नेकी चेष्टा कर रही है। सम्भव है, कि जल्दी ही वह उसे पकड़ ले। फिर मेरे सिर-पच्ची करनेकी कोई ज़रूरत न रह जायेगी; पर यदि वह कृतार्थ न हुई, तो मैं उसे ज़रूर ढूँढ़ निकालूँगा। जिसके कानके नीचे इतना बड़ा दाग़ है, वह लाख अपनेको छिपाये, पर कभी-न-कभी पकड़ा ही जायेगा। तोभी इस महा जन-समुद्रके भीतर उसे जल्दीही ढूँढ़ निकालना कोई आसान काम नहीं है।"

चौथा परिच्छेद।

पाठकगण भूले न होंगे, कि मि० डिलनकी अट्टालिकासे बाहर आ, स्पाइक्स-कार्टर, पिकडली होता हुआ, एक रास्तेमें चला आया था, जहाँ उसने एक तेज़ मोटरपर सवार एक सुन्दरी युवतीको देख, आप भी एक भाड़ेकी मोटर पकड़ी और उसी मोटरके पीछे-पीछे जाने लगा।

वृटिश-साम्राज्यकी राजधानी विशाल लण्डन-नगरीके रास्तों-का उसे कुछ भी हाल नहीं मालूम था। बहुत दिन हुए, वह एक-बार एक सौदागरी जहाज़पर लण्डन आया था। जितने दिन वह जहाज़ बन्दरगाहमें पड़ा रहा, उतने दिन बराबर उसे जहाज़मेंही रहना पड़ा—सिर्फ़ दो-एक दफ़े शहर देखने आया था; पर उतने थोड़े समयमें वह यहाँके राह-घाट न पहचान सका।

इस बार कैनेडासे इङ्गलैण्डकी यात्रा करनेके पहले उसने

मौण्ट्रियलमें आकर जान-पैट्रिककी विधवा पत्नीसे भेंट की थी और उसकी शोचनीय दशा देख, अपनी शक्तिभर उसकी सहायता भी की थी। इसीसे उसके पास बहुत थोड़े रुपये रह गये थे, जो लण्डनका टिकट ख़रीदनेमेंही प्रायः ख़र्च हो गये। लण्डनमें आकर उसने देखा, कि जो कुछ बचा है, उससे तो मुश्किलसेही दो-चार दिन कटेंगे। पर वह हताश न हुआ। एक होटलमें कमरा किरायेपर लेकर वहीं रहने और दिन-दिनभर 'नार्दर्न कैनेडियन डायमण्ड माइन्स कम्पनी'का आफ़िस खोजता हुआ इधरसे उधर फिरने लगा। इतने बड़े आफ़िसका पता लगाना; उसकेसे नये आदमीके लिये भी वैसा कठिन नहीं हुआ। जिस दिन डिलनकी अकाल-मृत्यु हुई, उसी दिन दोपहरको वह उस आफ़िसमें गया और दरबानसे पूछकर मालूम कर लिया, कि कम्पनीके मालिक मि० डिलन् बर्कले-स्कोयरमें रहते हैं। इसीसे उसे मि० डिलनका बँगला खोज निकालनेमें आसानी हुई। इसके बाद रातको जो घटना हुई, वह तो पाठकोंको मालूमही है।

स्पाइक्स-कार्टर यदि डिलनके डेस्कमेंसे काफ़ी रुपये और हीरे न निकाल लाता, तो उसे लण्डनकेसे बड़े शहरमें कितना तरद्दुद उठाना पड़ता, यह सहजही अनुमान किया जा सकता है। अब तो उसकी जेबमें काफ़ी माल था, इसलिये उसे ख़र्च-वर्चकी कोई चिन्ता नहीं थी। परन्तु यह चिन्ता अवश्य थी, कि कहाँ जाये, जहाँ जानेसे उसके गिरफ़ार होनेका कोई भय न रहे क्योंकि वह समझ गया था कि डिलनकी मृत्युकी

बात बहुत देरतक छिपी न रहेगी—रातोंरात पुलिसको पता लग जायेगा और इतने बड़े धनी मनुष्यके खूनका हाल सुनकर शहर-भरमें हलचलसी मच जायेगी। लण्डनकी चालाक पुलिस खूनीको पकड़नेके लिये पूरी-पूरी चेष्टा करेगी, इसमें तो कोई सन्देहही नहीं। ऐसी अवस्थामें वह कहाँ जाकर छिप रहे? यही सब सोचते-विचारते हुए वह योंही पैरोंके चलाये हुए रास्तेपर चला जा रहा था, कि इतनेहीमें उसे एकाएक वह मोटर दिखलाई दी। उसपर उस रूप-लावण्यवती युवतीको देखकर मानों डूबतेको तिनकेका सहारा मिल गया। वह झट एक टैक्सीपर सवार हो, उस मोटरके पीछे लगा।

वह मोटर, बहुतसे रास्तोंको पार करती हुई, "क्वीन-पेरस-गेट" नामक सुविस्तीर्ण प्रासादोपम अट्टालिका-श्रेणीके सामने आ खड़ी हुई। इस अट्टालिका-श्रेणीकी तरह साज-सामान और शानशौकतसे भरापूरा वास-भवन इस राजधानीमें शायदही और कोई हो। मोटरकी सवारी इसी अटारीके पास उतरेगी, यह स्पाइक्स-कार्टर न समझ सका—वह सोच रहा था, कि अभी और भी बहुत दूरतक जाना पड़ेगा।

लेकिन जब वह मोटर उस विशाल अट्टालिका-श्रेणीके सामने आकर खड़ी हो गयी, तब स्पाइक्स-कार्टरने भी टैक्सीको ठहराकर सामनेकी ओर देखा। उसने देखा, कि उस युवतीका साथी मोटरसे नीचे उतरकर उस युवतीका हाथ पकड़े हुए उसे नीचे उतार रहा है।

झटपट टैक्सीसे नीचे उतर पड़ा और

"शौफ़र"को कुछ देर वहीं ठहरनेके लिये कहकर बड़ी शीघ्रताके साथ उस मोटरके पास जा पहुँचा। उसे यों एकाएक टपक पड़ते देख, युवती और उसके साथीको बड़ा विस्मय हुआ। वे समझ गये, कि यह मैले-कुचैले कपड़ेवाला दरिद्र युवक उनसे कुछ कहना चाहता है।

स्पाइक्स-कार्टर और भी दो क़दम आगे बढ़कर उस युवतीके साथीसे बोला,—"महाशय! मेरी बेअदबी माफ़ करें, मैं यह जानना चाहता हूं, कि आपका नाम क्या मि० ग्रेविस है?"

उस आदमीने अकचकाते हुए कहा,—"हाँ, मेराही नाम ग्रेविस है। पर तुम्हें मुझसे क्या काम है?"

स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"मुझे आपसे दो-एक गुप्त बातें कहनी हैं। यदि आप दया करके सुन लें, तो मेरा बड़ा उपकार हो। मैं आपका बहुत समय नष्ट नहीं करूँगा।"

ग्रेविसने युवतीसे पूछा,—"क्यों? क्या कहती हो? मैं इस युवकको क्या उत्तर दूँ? क्या इसकी बातें सुनने-भरका मौक़ा इस समय है?"

यह युवती और कोई नहीं, हमारे इन उपन्यासोंको जिन हज़ारों पाठकोंने पढ़ा है, उन सभीकी सुपरिचिता, मिस अमेलिया-कार्टरही है! इसकी अनेक अद्भुत काररवाइयोंका हाल पाठकोंने हमारे "साहसी सुन्दरी" और "गुलाबमें काँटा" नामक उपन्यासोंमें पढ़ा है।

मिस अमेलिया-कार्टर, नाना देश-देशान्तरोंमें घूम-फिर आनेके बाद आजकल अपने मामाके साथ लण्डनमेंही कुछ दिनोंसे र

रही है। वह इन दिनों इसी चेष्टामें थी, कि किसी ऐसे द्वीपका पता लगाकर वहाँ उपनिवेश स्थापित करना चाहिये, जिसका आजतक किसीको पता न लगा हो। बहुत दिनोंसे उसने डाकूपन छोड़ रखा है—अब उसे यह शौक़ चर्राया है, कि किसी दूरदेशमें जाकर वहाँकी रानी बनूँ।

अमेलियाने एकबार उस आगन्तुक युवकको देखनेके बाद मामासे कहा,—"मामा! उसे अपने साथही ले चलो। देखा जाये, वह क्या कहता है? सुन लेनेमें हर्जही क्या है?"

स्पाइक्स-कार्टरने कृतज्ञता भरी दृष्टिसे अमेलियाके चेहरेकी ओर देखते हुए कहा,—"आपको अनेक धन्यवाद है। मेरी कुल बातें सुन लेनेपर आप मुझे जैसा कहेंगी, वैसाही मैं करूँगा।"

यह कह, उसने टैक्सीवालेको अपने पास बुलाकर उसका भाड़ा चुकता कर दिया और तदनन्तर ग्रेविसके पीछे-पीछे चल पड़ा। पहले अमेलिया ही उस अट्टालिकाके फाटकके अन्दर घुसी।

इस विशाल अट्टालिका-श्रेणीके जिस हिस्सेमें अमेलिया-कार्टर रहती थी, उसमें बहुतसे कमरे थे। सभी कमरे तरह-तरहके क़ीमती साज-सामानोंसे सजे हुए थे। हर कमरेसे रहनेवालीकी परिमार्जित रुचि, धनवत्ता और विलासिताका प्रमाण मिलता था। स्पाइक्स-कार्टरको साथ लिये हुए ग्रेविस अमेलियाके पीछे-पीछे एक बड़ेही लम्बे-चौड़े दालानमें आ पहुँचा। वहाँ पहुँचकर वह डेस्कके पास रखी हुई एक कुरसीपर बैठ गया। अमेलिया थोड़ी-ही दूरपर एक मोटी गद्दीवाली आरामकुरसीपर जा बैठी और एक बढ़िया 'रूसी सिगरेट' सुलगाकर पीने लगी

स्पाइक्स-कार्टरको एक सिगरेटसे ख़ातिर करते हुए ग्रेविसने कहा,—"अब तुम्हें जो कुछ कहना हो, वह संक्षेपमें कह सुनाओ।"

स्पाइक्स-कार्टर एक तो थका हुआ था ; दूसरे, सिगरेटका शौक़ीन होनेके कारण बढ़िया सिगरेट पाकर ख़ुश हो रहा था ; इसीलिये वह कुछ देरतक मौजसे सिगरेट पीता रहा, उसके बाद उसकी राख रिकाबीमें झाड़कर धीरे-धीरे कहने लगा,—"शुरूसे सब हाल सुनानेके पहले, मैं यह कह देना चाहता हूँ, कि मैं आपकी मोटरके पीछे-पीछे कैसे आया ? मैं पिकडलीकी राहसे चला आ रहा था, कि एकाएक,आपकी मोटरसे टकराते-टकराते बचा। अगर उस समय आपलोग मोटरकी ह्विस्ल, न देते, तो मैं ज़रूर दब जाता ; पर सीटी सुनकर एक किनारे खड़ा हो गया यदि मैं ऐसी सङ्कट जनक अवस्थामें नहीं पड़ा होता, तो मेरी दृष्टि शायदही आपकी मोटरकी तरफ़ जाती। ख़ैर, मैं आपलोगोंको देख; एक टैक्सीपर सवार हो, आपके पीछे-पीछे चला आया। उस समय रास्तेमें बहुतसी गाड़ियाँ जमा हो गयी थीं और आपकी मोटरको रुक जाना पड़ा था ; नहीं तो मेरी टैक्सी कभी आपका पीछा न कर सकती। आप लोगोंको इस अट्टालिकाके दरवाज़ेपर मोटरसे उतरते देख, मैं भी उतर पड़ा और आपलोगोंका परिचय जाननेके लिये आपके सामने चला आया। यदि आपके मुँहसे मैं यह सुनता, कि आपका नाम 'ग्रेविस' नहीं है, तो मैं अपने कौतूहलके लिये आपसे क्षमा माँगकर फिर उसी टैक्सीमें जा बैठता। परन्तु जबसे आपने मुझसे कहा है, कि आपका नाम 'ग्रेविस' है, तबसे मेरा हृदय आशा

और आनन्दसे भर गया है। मैं समझ गया, कि आपके साथ सिवा मिस अमेलिया-कार्टरके दूसरी कोई नहीं है।"

स्पाइक्स-कार्टरकी यह लम्बी-चौड़ी भूमिका सुनकर ग्रेविस कुछ कुढ़सा गया। उसने ऊबकर भौंहें टेढ़ी करते हुए कहा,—"इन फ़िज़ूलकी बातोंको छोड़ो—कामकी बातें बतलाओ।"

अमेलियाने कहा,—"हाँ, तुम्हारा अनुमान ठीक है। मैं अमेलिया-कार्टरही हूँ। अब यह बतलाओ, कि तुमने किस लिये हमारा पीछा किया है! मामा काम-काजी आदमी ठहरे—उन्हें व्यर्थकी बातें अच्छी नहीं लगतीं; क्योंकि उन्हें समयका बड़ा अभाव रहता है।"

क्षणभर अमेलियाकी ओर एकटक निहारते हुए स्पाइक्स कार्टरने कहा,—"अच्छा, अब मैं कामकी ही बात छेड़ता हूँ—(रुककर)—पहले अपना परिचय दे देना अच्छा समझता हूँ। अमेलिया! मैं तुम्हारा सहोदर भाई हूँ—मेरा नाम राबर्ट-कार्टर है।"

यदि उस समय एकाएक उस कमरेमें बम गिरकर फूट जाता, तोभी अमेलिया उतनी विस्मित न होती, जितनी स्पाइक्स कार्टरकी बात सुनकर हुई। उसके कलेजेकी धड़कन बन्दसी हो गयी, हाथका सिगरेट नीचे गिर पड़ा, आँखोंके आगे अन्धेरासा छागया। ग्रेविस बड़े ज़ोरसे अपनी कुरसीपरसे उठ खड़ा हुआ और विस्मय-सूचक अस्फुट शब्द करता हुआ फिर तुरतही बैठ गया।

जो हो, बड़ी मुश्किलोंसे अपनेको सम्हालकर अमेलियाने कहा, "तुमने तो यह बड़ीही अद्भुत बात मुझे सुनायी क्या

तुम मुझे इस बातका विश्वास कर लेनेको कहते हो, कि तुम मेरे भाई हो ?"

स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"मुझे यह मालूम था, कि तुम्हें मेरी बातका विश्वास नहीं होगा ; पर क्या तुम इस बातको भी स्वीकार न करोगी, कि तुम्हारे एक बड़ा भाई था ?"

अमेलियाने गम्भीर-भावसे कहा,—"इस बातको स्वीकार या अस्वीकार करनेके पहले, मैं यह सुनना चाहती हूँ, कि तुम्हारा मतलब क्या है ? क्या तुम ऐसी आशा रखते हो, कि केवल तुम्हारे कह देनेसेही मैं तुम्हें अपना भाई मान लूँगी ?"

स्थिर-दृष्टिसे अमेलियाकी ओर देखते हुए स्पाइक्स-कार्टरने कहा,—"नहीं—मैं ऐसी आशा नहीं रखता। मैं क्या यह नहीं देख रहा हूँ, कि तुम मेरी बात सुनकर सुखी नहीं हुई ? केवल तुमही क्यों, इस लण्डनमें शायदही ऐसी कोई स्त्री होगी, जो मुझे अपना भाई बनाते हुए सङ्कोच न करे। पर यदि तुम सचमुच अस्ट्रेलियाकी "जिग्स" नामक सोनेकी खानके मालिक, जान-कार्टर और उनकी पत्नी ग्रेविसकी कन्या हो, तो मेरा परिचय पाकर मेरे ऊपर अवश्य ही विश्वास करोगी। बहुत दिनोंकी बात है—हम दोनों भाई-बहनोंने 'बिनेगौङ्ग'के रमणीय उद्यानमें माता-पिताकी प्रेमभरी गोदमें सुखसे क्रीड़ा करते हुए बालकपनके दिन बिताये थे। तुम मुझसे तीन बरस छोटी थीं। मैं जब चौदह वर्षका था, तभी मा-बापके गहरे प्रेम और सुख-शान्तिसे भरे हुए घरकी सब मोह-माया बिसारकर कई पशु-पालकोंके साथ साथ 'क्वीन्सलैण्ड' चला गया वहाँ पशु

पालनका काम भली-भाँति सीखकर उत्तरकी ओर "कैथेराइन-रिवर-"ज़िलेमें चला गया और स्वतन्त्ररूपसे पशु-पालनका व्यवसाय करने लगा। पिताके प्रगाढ़ स्नेह और माताके गम्भीर वात्सल्यकी मधुर स्मृति समय-समयपर मुझे चञ्चल कर देती थीं; किन्तु मैं बन्धनमुक्त स्वाधीन जीवनके अखण्ड आनन्दका मज़ा उठा रहा था, इसीलिये लड़कपनके उस क्रीड़ा-कुञ्जमें लौट-कर न आ सका। मैं अठारह बरसकी उमरतक वहीं रहा। इतने दिनोंमें मुझे तुमलोगोंका एकबार भी कुछ हालचाल न मिला। माँ-बापने भी शायद मुझे मराही समझ लिया होगा।

"इसके बाद मैंने सुना, कि 'न्यू गिनी-राज्य'में बहुतसी सोनेकी खानें निकली हैं। एकदम छलाँग मारकर छोटेसे बड़ा आदमी होजानेकी आशासे मैं भी खन्ती-कुदाली लेकर उधरही चला। पर वहाँ अपना कुछ तार न जमा। कमउम्र नौजवानोंको पद-पद पर विपद्का सामना करना पड़ताही है। लाचार, मैं वहाँसे एक मोतीके व्यापारीके साथ मोती चुननेके लिये प्रशान्त-महा-सागरके द्वीप-पुञ्जकी ओर चल पड़ा। कुछ दिन इसी तरह जहाज़-मेंही कट गये—कभी इस समुद्रमें, कभी उस समुद्रमें, ऐसाही करता हुआ मैं भटकने लगा। इसके बाद अमेरिका आकर फिर सोनेकी खानोंकी खोजमें फिरने लगा। क़िस्मतका मारा मैं इसी धुनमें अलास्कासे चिलीतक दौड़ता रहा।

"लेकिन अमेरिकामें मैंने अगर नाम नहीं कमाया, तो बद-नामी ज़रूर कमायी। आवारोंकी सङ्गतिमें पड़कर मैंने खूब जुआ खेला और दोनों हाथोंसे पैसा लुटाया। नाचगान, खान-

पान, हँसी-मज़ाक़, जुआ-शराब आदिके मज़े ख़ूब उड़ाये। इन्हींमें ज़िन्दगीका मज़ा मालूम पड़ता। कैनेडा-राज्यके प्रत्येक नगरमें—नहीं; नहीं, उसके उत्तरमें भी—स्पाइक्स-कार्टरका नाम हर किसीको मालूम है; पर वह नाम बनावटी था—असल-नाम राबर्ट-कार्टरही है। मैंने जान-बूझकर अपना नाम बदल डाला था। यही मेरे शाप-ग्रस्त जीवनका संक्षिप्त इतिहास है।

"आज रातका समय होनेपर भी मैं एकही नज़रमें मामा ग्रेविसको पहचान गया! चौदह वर्षकी उमरमें मैंने उन्हें जैसा देखा था, आज भी प्रायः वैसाही पाया; इसीलिये उन्हें पहचाननेमें मुझे दिक़्क़त नहीं हुई; परन्तु अमेलिया! पहले-पहल मैं तुम्हें इसीलिये नहीं पहचान सका, कि मैंने जब घर छोड़ा था, तब तुम महज़ ग्यारह वर्षकी बालिका थीं। इन दस वर्षोंके अन्दर तुम बहुत कुछ बदल गयी हो। पर मैं यह नहीं कह सकता, कि तुम्हारे आजके चेहरेसे उस समयके चेहरेका कोई मिलानही नहीं है। तुम्हें देखकर मुझे माँकी याद आरही है। उनकी भी तुम्हारीही जैसी आँखें और भौंहें थीं—ऐसेही पतले-पतले होंठ थे! मालूम होता है, मानों मेरी माँही नवयौवना बनकर चली आयी हैं।

"मामा! अमेलिया! तुम दोनोंने मेरे शोचनीय जीवनका इतिहास सुन लिया। अब मेरी बात मानना, न मानना तुम्हारी इच्छापर निर्भर है। मैं आज दरिद्र, आश्रयहीन हूँ—यदि मेरी सच्ची बातें भी तुम्हारे मनमें न धँसें, तो और प्रमाण मैं कहाँसे ला सकता हूँ? मेरी अवस्था लाख बुरी क्यों न हो, पर मैं तुम्हें

तङ्ग करने नहीं आया। अमेलिया! अगर तुमको मुझे भाई कहते हुए शर्म आती हो, तो मुझे अभी विदा कर दो, मैं उलटे पाँवों लौट जाऊँ। मैं कुछ तुमसे मिलनेके लिये लण्डन नहीं आया था। सौभाग्यसे अचानकही भेंट होगयी। परमेश्वर तुम्हें सुखी रखें—मैं तुम्हारे सिर पड़ने नहीं आया हूँ।"

अमेलिया कुरसीपर बैठी हुई चुपचाप स्पाइक्स-कार्टरकी सब बातें सुनती रही। उसकी बातें सुनते-सुनते उसके चेहरेपर न जाने कितनी बार कितनी तरहके परिवर्त्तन दिखाई दिये। उसका मन वर्त्तमानसे दूर हटकर अतीत-स्मृतिकी अँधियालीमें न जाने किसे ढूँढ़ने लगा। उसको कुछ-कुछ याद पड़ने लगा, कि उसकी पुत्र-वियोगिनी माता बेटेका नाम ले-लेकर कितना रोया करती थीं, रावर्टके लिये कितना शोक करती थीं, कितना सिर धुनती थीं! उस समय अमेलिया नादान बच्ची थी, तोभी कभी-कभी उसे रावर्टकी याद आ जाती थी। एक दिन रावर्टने एक नया लट्टू बाज़ारसे लाकर अपनी बहनको दिया था। अनेक बड़ी-बड़ी स्मरणीय घटनाओंके बदले इसी एक तुच्छ घटनाकी अमेलियाको आज बहुत याद आयी। उसके स्नेही हृदयमें न जाने कैसा दर्द पैदा हुआ, कि उसकी बड़ी-बड़ी आँखोंमें आँसू भर गये! उसने अबतक यही सोच रखा था, कि रावर्ट मर गया है। इधर माँ-बापके मर जानेसे उसके लिये मामाके सिवा और कोई इस दुनियामें अपना कहलाने योग्य न था। आज उसका बहुत दिनोंसे घर भागा हुआ भाई एक-ब-एक उसके सामने आ खड़ा हुआ है! किस प्रकार वह उसकी

ख़ातिर करे ? क्योंकर वह अपने बड़े प्यारके भाईको दिल चीरकर दिखलाये और अपनी गहरी मुहब्बतका इज़हार करे ?

अमेलिया काँपते हुए चरणोंसे उठ खड़ी हुई और स्पाइक्स-कार्टरके पास आ, उसका हाथ थाम, मीठे स्वरसे बोली,—"ज़रा रोशनीके पास तो आकर खड़े हो।"

स्पाइक्स-कार्टर कठपुतलीकी तरह बिजलीके लैम्पके पास जाकर खड़ा हो गया। अमेलिया उस तेज़ रोशनीमें उसका अङ्गप्रत्यङ्ग देखने लगी। इसके बाद उसने कहा,—"तुम्हारे बालोंका रङ्ग हमारे बालोंसे मिलता-जुलता है ; तुम्हारी आँखें माँकी आँखोंसे मिल जाती हैं—तुम्हारी नाक तो बजिन्स उन्हींकीसी है—नाक तो हम दोनों भाई-बहनोंकी एकसीही है—तो क्या तुम सचमुच मेरे वही घरसे भागे हुए भाई राबर्ट हो ? तुम्हें ईश्वरकी सौगन्द है, सच कहो, बात क्या है ? मुझे तो सब सपनासा मालूम पड़ रहा है।"

अमेलियाके कन्धेपर हाथ रख, तीखी नज़रोंसे उसके चेहरे-की ओर देखता हुआ राबर्ट, बड़े गद्गद् कण्ठसे कहने लगा,—"मैं ईश्वरकी शपथ खाकर कहता हूँ, कि यदि तुम सचमुच-अस्ट्रेलियाके बिनैगौंग-स्टेशनके पासवाले बग़ीचेमें रहनेवाले जान-कार्टरकी कन्या अमेलिया हो, तो मैं भी तुम्हारा सहोदर भाई—राबर्ट-कार्टर हूँ।"

ठीक इसी समय ब्रेविस कुरसीसे उठकर उन दोनोंके पास चला आया। इस विचित्र घटनासे उसका कलेजा भी उथल-पुथल होरहा था बहुतसी बीती बातें उसे याद आरही थीं

वह बड़ीही तीक्ष्णदृष्टिसे राबर्टको सिरसे पैरतक देख-भालकर आवेग-कम्पित स्वरमें बोला,—"अमेलिया? इसकी बातें बिलकुल सच हैं। यह सचमुच तुम्हारा भाई राबर्टही है; जवानीमें तुम्हारे बाप जैसे थे, यह मूर्त्ति ठीक वैसीही है। मैं उनके जवानीके चेहरे-मोहरेको भूला थोड़ेही हूँ? बेटी! यह राबर्टके सिवा और कोई नहीं है।" यह कह ग्रेविसने बड़े आनन्दके साथ राबर्टसे हाथ मिलाया। इसके बाद बोला,—"ज़माना बीत गया! जब राबर्ट गोदका बच्चा था, तब मैं इसे लेकर कितना खिलाया करता था! इसे कितना चूमता-चाटता था! मुझे अच्छी तरह याद है, राबर्टके कन्धेके नीचे पीठपर एक बड़ा भारी काला तिल था। वह अब भी ज़रूरही होगा।"

स्पाइक्स अर्थात् राबर्टने यह सुन, मुस्कराते हुए कहा,—"मामा! वह है, कि नहीं, इसकी परीक्षा तुम स्वयंही क्यों न कर लो?" यह कह, उसने अपना कोट उतारकर नीचे फेंक दिया और उसके बाद क़मीज़ और गञ्जीको भी अलगकर लैम्पके उजालेमें जाकर अपनी पीठ दिखाने लगा। ग्रेविसने उसकी पीठकी ओर नज़र लेजातेही देखा, कि उसके कन्धेके नीचे गोरे चमड़ेके ऊपर एक बड़ासा काला तिल मौजूद है!

इसी समय ग्रेविसने राबर्टके बायें कानके नीचेवाला ज़ख्मका दाग़ भी देखा। उसे देख, वह बड़े विस्मयके साथ बोल उठा—"लेकिन बाबा*! यह क्या है? यह दाग़ तो पहले नहीं था? यह ज़ख्म काहेका हुआ?"

सुदर्श

रावर्टने कहा,—"मामा! इसकी बात मैं पीछे कहूँगा।"

पर अमेलियाने इस बातचीतकी ओर ज़रा भी ध्यान न दिया। वह मारे खुशीके रावर्टके गले लग गयी और बोली,—"भाई! प्यारे भाई! आज इतने दिनों बाद मैंने तुमको पाया? यह आनन्द मैं कहाँ रखूँ? यह तो हृदयमें नहीं समाता। भगवान्‌ने मुझे आज कितना सुखी बनाया है, वह मैं क्या कहूँ?" यह कहती हुई वह आनन्दकी अधिकताके मारे रावर्टको गोदमें चिमटाकर उसकी पीठपर हाथ फेरने लगी। उस सुमधुर मिलनका दृश्य देख, कठिन-हृदय ग्रेविसकी आँखोंमें भी जल भर आया!

रावर्ट-कार्टरने धीरे-धीरे वहनके आलिङ्गन-पाशसे अपनेको छुड़ाते हुए कहा,—"बहन अमेलिया! अपने ऊपर तुम्हारा ऐसा गाढ़ा अनुराग देख, मैं कितना सुखी हुआ हूँ, वह कह नहीं सकता। परन्तु आज एकाएक तुमसे मिलकर मैंने अच्छा किया, या बुरा—यह नहीं मालूम पड़ता। मैं रास्ता चलते-चलते मोटरपर तुम्हें और मामाको न देखता, तो शायद इस लण्डनमें मैं तुम्हारी खोज-ढूँढ़ करनेका सपना भी न देखता। मुझ जैसे दुर्दशामें पड़े हुए, मैले कपड़ेवाले, दरिद्र राहीको तुमने अपना भाई मान लिया, यह बिलकुल मेरी आशाके बाहर बात है।"

---

* जैसे हमारे देशमें लोग प्यारसे बच्चोंका नाम छोटा करके पुकारते हैं, वैसेही विलायतमें भी। हमलोग जैसे 'रामप्रसादको 'रामू' और "लक्ष्मण-प्रसादको' 'लच्छू' या 'लच्छी' कहकर पुकारते हैं, वैसेही अँगरेज भी विलियमको विल कहते हैं। तदनुसार रावर्टको बचपनमें 'बाब' कहते थे।

अमेलियाने बड़े स्नेहसे कहा,—"भाई! तुम्हारा यह कहना अनुचित है। एक माँके पेटका जन्मा हुआ भाई, दरिद्र होनेपर भी, क्या भगिनीके प्रेमका पात्र नहीं होगा? स्नेह क्या धनी-दरिद्र देखता है? तुम चाहे जैसे दरिद्र, अभागे और मैले-कुचैले क्यों न हो,—परन्तु मेरे सहोदर भाई हो। हम दोनोंने एकही माँका दूध पिया है, एकही माँ-बापकी गोदमें पले हैं, हम दोनोंके शरीरमें एकही रक्त दौड़ रहा है। फिर भाग्य-दोषसे यदि तुम आज दरिद्र हो, तो क्या मेरी उपेक्षाके पात्र हो जाओगे? बल्कि दरिद्र और निराश्रय होनेके कारण तुम मेरे अधिक प्रेम, अधिक आदर और अधिक यत्नके पात्र हो रहे हो।"

एक कुछ गम्भीरसा होकर रावर्ट कहने लगा,—"अमे-लिया! तुम्हारी बातोंसे मैं बहुतही सुखी हुआ। आज परमेश्वरने मुझे तुमसे उस दिन मिलाया है, जो दिन मेरे जीवनका सबसे बढ़कर भयङ्कर दिन है! मैं नहीं कह सकता, कि भगवान्‌की क्या इच्छा है? मेरी सब बातें सुनकर भी तुम मुझे अपना भाई समझोगी या नहीं, इसमें सन्देह है। हो सकता है, कि मुझे भाई कहते हुए तुमको सङ्कोच हो। ख़ैर, तुम स्थिर होकर मेरी सब बातें सुन लो।"

रावर्टको एक कुरसीपर बिठाकर अमेलिया उसके सामनेही एक दूसरी कुरसीपर बैठती हुई बोली,—"अच्छा, कहो।"

ग्रेविस भी एक कुरसी खींच लाकर उन दोनोंके पासही बैठ रहा। एस बड़ीसी घंटीने टनाटन बारह बजा दिये; पर उस ओर किसीने ध्यान भी न दिया।

धीरे-धीरे राबर्टने कहा,—"मैं पहलेही कह चुका हूँ, कि मैं तुम्हें खोजनेके लिये लण्डनमें नहीं आया था। मेरा यहाँ क्यों आना हुआ था, वह सुनो—मामा! मेरे कानके नीचे जो दाग़ है, उसका हाल तुमने जानना चाहा था, अब मेरी सब बातें सुनकर तुम आपसे आप उसका रहस्य जान जाओगे।"

यह कह, उसने डिलनकी शरारतका कुल हाल कह सुनाया; सोनेकी खानोंकी खोजमें कैनेडा-राज्यके सुदूर-प्रान्तमें अवस्थित निकोलसन-पोस्टकी निर्जन कुटियामें एकान्त अवस्थामें वास करते समय क्योंकर एक दिन रातको राहका थका, तूफ़ानका मारा, जान-पेड्रिक उस जङ्गलमें आ पहुँचा, कैसे उसने उसे अपनी कुटीमें लाकर उसकी सेवा-शुश्रूषा की, वृद्धने उसे हीरेकी खानका पता बताया, दूसरे दिन उस खानकी खोजमें जाते समय लौंग-डिलनने क्योंकर उसे अधमरा करके छोड़ दिया और आप वह नक्शा लेकर चल दिया, जिसकी बदौलत वह करोड़ पतियोंको भी नीचा दिखाने लगा, किस तरह वह उसे बरसों खोजता फिरा और आज यहाँ आकर उससे मिला तथा किस प्रकार इच्छा न होनेपर भी वह उसकी मृत्युका कारण बना—यह सब बातें उसने ब्योरेवार कह सुनायीं। दोनों मामा-भाञ्जे मन्त्र-मुग्ध होकर उसकी वह विचित्र कहानी सुनते रहे—उनके मुँहसे एक बात भी न निकली।

इसके बाद कुछ देर चुप रहकर राबर्ट-कार्टर कहने लगा,—"मैंने अभी जो क़िस्सा तुमलोगोंको सुनाया है, उसका एक अक्षर भी झूठ नहीं है। यह मैं शपथ करके कह सकता हूँ।

यदि तुम्हें मेरा हाल जानना हो तो पश्चिमी कैनेडाके चाहे जिस नगरमें पता लगानेसे मालूम हो सकता है। वहाँके सबलोग जानते हैं, कि मैं एक बड़ाही व्यसनी, अपव्ययी, विलासी और चञ्चल-चित्तवाला युवक हूँ ; पर यह कोई न कहेगा, कि मैं झूठा बेईमान और दग़ाबाज़ हूँ। सबलोग यही कहेंगे, कि मैं अपनी शक्तिभर लोगोंकी भलाईही करता था। यह बात मैं अपने मुँह अपनी प्रशंसाके गीत गानेकी नीयतसे नहीं कहता। तुम्हें जिसमें इस बातका भरोसा हो जाये, कि मैंने जान-बूझकर उसकी जान नहीं ली, इसीसे कही है। तुमलोग भलेही विश्वास कर लो, पर पुलिस कभी विश्वास नहीं करेगी। वह यही कहेगी, कि मैंने उसकी जान-बूझकर हत्या की है। शायद डिलनकी मृत्युका हाल अबतक चारों ओर फैल गया होगा और मुझे गिरफ्तार करनेके लिये लोग छूटे होंगे। अगर मैं गिरफ्तार कर लिया गया, तो फिर बचना मुश्किल हो जायेगा। अदालत फाँसीकी सज़ा दिये बिना न मानेगी; परन्तु मैं तुमसे शपथ करके कहता हूँ, कि मैं उसकी जान लेनेकी नीयतसे उसके घर नहीं गया था।

"पिकडलीकी सड़कसे आते समय यदि मैं तुमलोगोंको न देखता, तो उसी जहाज़पर चढ़कर कैनेडा चला जाता, जिसपर सवार होकर यहाँ आया हूँ। उस जहाज़का नाम 'पापुलर' है। वह अबतक बन्दरगाहमें लङ्गर डाले हुए है। जान-पैट्रिककी खोजी हुई खानपर अधिकार जमाना तो असम्भवही हो गया, क्योंकि उसे तो पापी डिलनने हथिया लिया, इसलिये मैंने जो

दो-चार हीरेके टुकड़े उसके डेस्कसे लिये हैं, उन्हींसे पैट्रिककी विधवा स्त्रीकी कुछ सहायता करनेका मेरा इरादा था। मैंने अपने लिये स्वर्ण-मुद्राएँ लेही ली हैं। हीरोंकी संख्या कम है: पर वे बड़ेही अव्वल दर्जेके और क़ीमती हैं। उनका जो मूल्य मिलेगा, उससे बेचारीका दुःख-दारिद्र्य भाग जायेगा। फिर खाने-पीनेका दुःख न पायेगी। मुझे बड़ा भारी दुःख इसी बातका है, कि मैं इतने दिन बाद तुमसे मिला भी, तो दो दिन सङ्ग न रह सका। शायद यह सुख मेरे भाग्यमें नहीं है। आजही रातको मुझे अपनी जान बचानेके लिये भाग जाना पड़ेगा। मैं यह नहीं चाहता, कि मुझसे फ़रारी असामीको घरमें रखकर तुम भी झंझटमें पड़ो।"

राबर्टकी बातें सुन, अमेलियाने धीरेसे पूछा,—"क्या तुम्हें यही कर्त्तव्य मालूम होता है?"

राबर्टने कहा,—"हाँ अमेलिया! मुझे तो यही कर्त्तव्य मालूम होता है। अपने कियेका मैंही उत्तरदायी हूँ। मैं यदि पकड़ा जाकर दण्ड पाऊँगा, तो अकेलेही दण्ड भोगूँगा। मैं अपने लिये तुमको इस लज्जाजनक मामलेमें क्यों घसीटूँ? अब तो तुम समझही गयी होगी, कि मुझे यहाँ रखनेमें तुम्हारी जानको भी बड़ी आफ़त है।"

अमेलियाने गम्भीर स्वरसे कहा,—"डिलनने जो कुकर्म किया था, उसका वह उचित फल पा गया। परमेश्वरने उसके पापका यथायोग्य प्रायश्चित्त कर दिया। परन्तु तुम क्या समझते हो, कि इस तरह एकाएक भेंट होनेपर भी अमेलिया, विपद्के भयमें

अपने निराश्रय और गृह-हीन भाईको छोड़ दूंगी ? यदि तुम्हारी मेरे विषयमें ऐसीही धारणा हो, तो मैं कहूँगी, कि तुमने मुझे अभीतक पहचाना नहीं है, इसीसे ऐसा ख़याल करते हो।"

रावर्टने कुण्ठित भावसे कहा,—"लेकिन तुम स्त्रीहो—मामाके सिवा तुम्हारा और कोई सहायक नही है। यदि हो भी, तो जो आदमी क़ानूनकी नज़रोंमें अपराधी है, लण्डन-भरकी पुलिस जिसकी खोजमें फिर रही है, उसको बचानेकी चेष्टा तुम कहाँतक कर सकोगी ?"

अमेलिया ज़रा झुकी हुई थी, सो तनकर कुरसीपर सीधी हो बैठी और क्रोधसे जलती हुई सिंहिनीकी तरह सिर उठाये, बड़ी-बड़ी आँखोंसे बिजलीसी बाहर करते, रावर्टके चेहरेकी ओर तीखी नज़रोंसे देख, बड़े तेजसे तमककर बोली,—"कहाँतक कर सकूँगी, सो क्या तुम नहीं समझ सकते ? इसीसे तो कहती हूँ, कि अभी तुम मुझे नही पहचानते। मेरी शक्ति-सामर्थ्यका अभीतक तुम्हें पता नहीं लगा। पर क्या तुमने आजसे पहले किसी अख़बारमें भी अपनी बहन अमेलिया और मामा ग्रेविसकी काररवाइयोंका हाल नहीं पढ़ा ? क्या तुम 'साहसी सुन्दरी' या 'सुन्दरी डाकू'के नामसे एकबारगी अपरिचित हो ?"

राबर्ट-कार्टरने सिर हिलाकर कहा,—"मुझे यह सब हाल एकदम मालूम नहीं है। मैं जन्मसे पृथ्वीके दूसरे भागमें सोनेकी खोजमें भटकता फिरा। कहाँका समाचार और कैसा अख़बार ! यह सब मैं क्या जानूँ ? इसीसे मुझे तुम्हारी यह बात समझमें नहीं आयी।"

अमेलियाने अपने मामाकी ओर देख, हँसते हुए कहा,—"मामा! मेरे मनमें बड़ा अहङ्कार था, कि सभ्य-जगत्‌में शायदही कोई ऐसा होगा, जो मेरा नाम न जानता हो; पर भाईकी बात सुनकर मुझे उस अहङ्कारका मूल्य मालूम हो गया। यह देखो,—मेरे सामनेही एक आदमी बैठा है, जिसने अटलाण्टिक और प्रशान्त-महासागरोंकी अजेय 'समुद्री डाकू'का कभी नाम नहीं सुना। हमलोगोंने अभी काफ़ी तौरसे प्रसिद्धि नहीं पायी है।"

राबर्ट-कार्टर, अचम्भेके साथ अमेलियाके मुँहकी ओर देखता हुआ बोला,—"तुम क्या कह रही हो, वह मेरी समझमें नहीं आता।"

अमेलियाने कहा,—"तुरत मालूम हो जायेगा, घबराओ नहीं। मैं इस समय तुमको आजकी घटनाके कारण बहुत घबराया हुआ देखती हूँ। लेकिन मैं कहती हूँ, कि तुम भय और उद्वेगको त्याग करदो और निश्चिन्त हो रहो। तुम्हारे भाग्य अच्छे थे, जो मेरे पास आ पहुँचे। विश्वास रखो, मेरे यहाँ पुलिसकी कोई दाल नहीं गलने पायेगी। रात बहुत बीत चुकी, भूख लग रही है, शायद तुम्हें भी बहुत देरसे भोजन न मिला होगा, इधर खानेकी चीज़ें भी ठण्डी हुई जाती हैं। चलो, खूब पेट भरकर खाना खाया जाये। इसके बाद क्या करना चाहिये, इसका विचार किया जायेगा। इस समय इतनाही कहदेना मैं काफ़ी समझती हूँ, कि प्राणके भयसे किसी दूर देशमें भागनेका कोई काम नहीं है। तुमने ऐसा कोई खराब काम नहीं किया है, जिससे मैं तुम्हें भाई कहते हुए सकुचाऊँ।

क़ानूनकी नज़रोंमें चाहे तुमने जुर्म किया हो ; पर तुम्हारा कार्य मेरे भाईके योग्यही हुआ है। यह बात मैं क्यों कह रही हूँ, वह पीछे समझाकर कहूँगी।—अच्छा, मामा! तुम थोड़ीदेर राबर्टसे बैठे-बैठे गप-शप करो, मैं अभी एक काम किये आती हूँ।"

यह कह, अमेलिया वहाँसे एक दूसरे कमरेमें चली गयी। राबर्ट-कार्टर अपने मामासे बातें करने लगा।

पाँचवाँ परिच्छेद।

लण्डनके होटलोंमें 'विनीशिया होटल'का नाम बहुत मशहूर है। लण्डनका कोई दरिद्र व्यक्ति वहाँ भोजन करनेका सपना भी नहीं देख सकता। वहाँ ऐरे-ग़ैरोंकी गुज़र नहीं— बड़े-बड़े आलाख़ानदानवाले तथा लण्डनके अमीर-उमराही वहाँ आहार-बिहार और गाने-बजानेका आनन्द लेने जाया करते हैं। ख़ास करके, विनीशिया-होटलमें हर रोज़ तीसरे पहर जो 'आरचेस्ट्रा' (ऐक्यतानिक वाद्य-ध्वनि)होता है, वैसे बाजोंको बहार लण्डनके और किसी होटलमें नहीं दिखाई देती। मि० ब्लेक इस होटलके ऐसे रसिया थे, कि उन्हें जभी मौक़ा मिलता, तभी तीसरे पहर वहाँ जा पहुँचते और थोड़ा-बहुत खा-पीकर ऐक्य-तानिक यन्त्र-सङ्गीतका आनन्द लेते थे। दिनके साढ़े चार बजेसे लेकर साँझके छः बजेतक वहाँ प्रतिदिन 'आरचेस्ट्रा' बजा करता था

हम जिस दिनकी बात लिख रहे हैं, उस दिन भी तीसरे पहरके समय मि० ब्लेक, अपने विश्वासी अनुचर स्मिथके साथ-साथ, विनीशिया-होटलमें पहुँचे हुए थे। उस समय होटलके लम्बे-चौड़े भोजनागारमें आदमियोंकी भीड़ लगी हुई थी। मि० ब्लेकने एक ख़ाली कुरसीपर आसन जमाते हुए नौकरको चायके दो प्याले लानेका हुक्म दिया। स्मिथ, उनके पासही एक दूसरी कुरसीपर बैठा हुआ खानेके लिये जमा हुए लोगोंको देख रहा था। पर जी बहलानेके लिये यहाँ आनेपर भी मि० ब्लेकका मन चिन्तासे शून्य नहीं था। उस समय भी वे डिलनके ख़ून-वाले मामलेपरही विचार कर रहे थे। वे अबतक यह नहीं स्थिर कर सके थे, कि कैसे ख़ूनीका पता लगाया जाये। दो दिन हो गये, पर अबतक वे अन्धेरेमेंही टटोल रहे हैं। स्काट-लैण्ड-यार्डके इन्स्पेक्टर टामसने कई बार उनके पास आकर परा-मर्श किया ; पर वे कुछ ठीक न कर सके।

इन्स्पेक्टर टामसने दस-बारह आदमियोंको कानके नीचे ज़ख़्मके दागवाले मनुष्यकी खोजमें रवानः किया था; पर लण्डन-की गली-गलीमें घूमकर भी अबतक उसका पता न लगा सके। तब इन्स्पेक्टरने सोचा, कि ज़रूरही वह ख़ूनी ख़ून करनेके बादही लण्डनसे रफ़ूचक्कर हो गया ; किन्तु मि० ब्लेक उनकी इस रायसे सहमत नहीं हो सके। इन्स्पेक्टर इसे "जानबूझकर किया हुआ" ख़ून समझता था ; परन्तु मि० ब्लेक इसे और ही कुछ समझते थे। उनको विश्वास हो गया था, कि डिलनकी लाइ-ब्रेरीमें जब वह नया आदमी आया, तब दोनोंको कुश्ती ज़रूर हुई

थी और उसी समय किसी तरह डिलनका सिर अग्नि-कुण्डके लोहेपर ज़ोरसे आ रहा, इसी चोटसे उसकी मृत्यु हो गयी। चाहे जो हो, जिसके द्वारा डिलनकी मृत्यु हुई, वह आदमी निर-पराध है—ऐसी धारणा उनके मनमें मुहूर्त्त-भरके लिये भी नहीं उदित हुई। यह स्वेच्छाकृत नर-हत्या भलेही न हो ; पर उस आदमीका अपराध बड़ा भारी है, इसमें उन्हें तनिक भी सन्देह नहीं था।

खूनके दूसरे ही दिन इन्स्पेक्टर टामसने पश्चिमी कैनेडाके अन्तर्गत एडमन्टन-नगरकी पुलिसको एक तार देकर डिलनके अतीत जीवनका ब्योरेवार हाल लिख भेजनेका अनुरोध किया। उसने सोचा, कि सम्भव है, इससे कुछ सहायता मिले। एड-मन्टनकी पुलिसके बड़े अफ़सरने उसी दिन उस तारका उत्तर दे दिया, पर उससे कोई कामकी बात नहीं मालूम हुई। उस तारमें इतनाही लिखा-आया, कि डिलन कुछ दिन इस जगह रहा था, सही ; पर उसकी किसीके साथ शत्रुता नहीं थी। यह उत्तर पाकर इन्स्पेक्टर टामसका उत्साह ठण्डा पड़ गया। अन्तमें उसने सोचा, कि उसी कानके नीचे ज़ख़्मके दाग़वाले आदमीको पकड़ना चाहिये। उसीसे सब हाल मालूम होगा—पर आजतक बायें कानके नीचे ज़ख़्मके दाग़वाले मनुष्यकी कहीं गन्धतक न मिली।

इधर मि० ब्लेक कुछ और ही ढँगसे मामलेकी छानबीन कर रहे थे। उन्होंने अपने काम करनेका ढँग इन्स्पेक्टरको नहीं बतलाया। कुछ दिन पहले डिलनने एक वसीयतनामा लिखा

था। उस वसीयतनामेको मि० डिक्सनने मि० ब्लेक और इन्स्पेक्टर टामस, दोनोंकोही दिखला दिया था। उस वसीयतनामेमें डिलनने दो आदमियोंको अपनी सारी सम्पत्तिका 'एक्ज़िक्यूटर' नियुक्त किया था—एक तो मि० डिक्सनको और दूसरे अपने एटर्नीको। वसीयतनामा बहुतही छोटा था। उसका मतलब यही था, कि यदि मेरी मृत्यु हो जाये, तो कैनेडा-राज्यके अन्तर्गत 'मौण्ट-रियल' नगरकी १०६ एवल्यूएरी-स्ट्रीटमें रहनेवाली मिसेज़ पैट्रिक नामकी विधवा मेरी छोड़ी हुई सारी सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी बनायी जाये।

इस वसीयतनामेको देखकर मि० ब्लेक और इन्स्पेक्टर टामस, दोनोंने सोचा, कि ज़रूरही इस विधवासे मि० डिलनका कोई सरोकार रहा होगा; पर वह सरोकार कैसा था इसका कोई पता न लगा। डिलनने न तो विवाहही किया था न इंग्लैण्ड-भरमें उसका कोई भाई-बिरादर या नातेदारही था। इन्स्पेक्टरने मौण्ट-रियलकी पुलिसको तार देकर पूछा, तो मालूम हुआ, कि वह विधवा कहती है, कि मेरा 'डिलन' नामके किसी व्यक्तिसे कोई नाता या परिचय नहीं है। इस ख़बरसे मि० ब्लेक और इन्स्पेक्टर टामस दोनों ही भौचकसे हो रहे। कोई सम्बन्ध नहीं, नातेदारी नहीं, मित्रता नहीं, परिचयतक नहीं,—तोभी उस धनकुबेरने उस दूर-देशकी एक विधवाको क्यों अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी? ऐसी अद्भुत बात तो उन लोगने कभी नहीं देखी-सुनी! भला मि० ब्लेकको यह कैसे मालूम होता, कि डिलनने जो यह काम किया है, वह उसके पूर्वकृत पापका

प्रायश्चित्त है उसने जो जान-पैट्रिकके बालबच्चोंका सत्यानाश किया था, उसका यह थोड़ा-बहुत प्रतिकार है! जो डिलनके अतीत जीवनका रहस्य नहीं जानता, वह कैसे इसे सम्भव समझ सकता था, कि जिसका धन लेकर वह धन-कुबेर बना था, दरिद्रसे एक-बारगी नवाबका नाती बन बैठा था, सारा जीवन सुखसे बिता देनेका सामान कर लिया था, उसीको वह मरने बाद अपनी वह सब सम्पत्ति दानकर जायेगा? ख़ासकर, जान-पैट्रिककी वह विधवा पत्नी, दो नादान बच्चोंको बड़े कष्टसे पाल-पोस रही है, यह जानकर भी जिसने कभी फूटी कौड़ी न दी, उसने क्यों मरने बाद अपनी सम्पत्ति उसीको दे दी जानेका प्रबन्ध किया, यह कौन कह सकता है?

डिलनने अपने वसीयतनामेमें केवल मिसेज़ पैट्रिकको उत्तराधिकारिणी बनानेकीही बात नहीं लिखी थी। उसने यह भी लिख दिया था, कि यदि मेरी मृत्युके पहलेही उस विधवाकी मृत्यु हो जाये, तो उसी विधवाके सच्चे वारिसोंकोही यह सम्पत्ति प्राप्त होगी।

मि० ब्लेकने सोचा, कि बस इसी वसीयतनामेको लेकर जाँच शुरू करनी होगी। इसके बारेमें मौण्टरियलसे तार मँगवाकर इन्स्पेक्टर टामस तो हताश हो गया, पर ब्लेककी आशा नहीं टूटी। उन्होंने इन्स्पेक्टरसे बिना कुछ कहे-सुने, अपने मौण्ट-रियलवाले एजेन्टके नाम एक तार भेजा। उसके उत्तरमें उसी दिन सवेरे उनके पास एक तार पहुँचा, जिस दिनकी बात हम लिख रहे हैं। उसने उत्तरमें लिखा था,—"आपके आज्ञा-नुसार मैंने ख़ूब छान-बीन की है। मिसेज़ पैट्रिक नामकी एक

विधवा और बूढ़ी औरत इस नगरके १०६ एक्लुपरी स्ट्रीटवाले मकानमें रहती है। मकान क्या है, झोपड़ी है। बेचारीकी अवस्था बड़ीही ख़राब है; वह दरिद्रताकी हदको पहुँच गयी है। उसके एक पोती और एक पोता है। पोता बाईस बरसका और पोती बीस बरसकी है। लड़का बड़ा मिहनती और काम-काजी है। वे लोग दुःख-सुखसे जो दो पैसे पैदा कर लाते हैं, उन्हींसे किसी-किसी तरह उनकी गुजर होती है। लड़की एक आफ़िसमें टाइपिस्ट (Typist) है। उसकी तनख्वाह बहुतही थोड़ी है। तोभी जबसे ये दोनों भाई-बहन काम करने लगे हैं, तबसे किसी तरह दोनों वक्त खानेको मिल जाता है। मैं यही सब हाल दर्याफ़्त करनेके लिये आज उसके घरकी तरफ़ गया था। उसी समय मुझे मालूम हुआ, कि आजही किसीनेतार-द्वारा लँण्डनसे २०० पौण्ड इस विधवाके पास भेजे हैं। यह रक़म किसने और क्यों भेजी है, यह अभीतक मालूम नहीं हुआ, मालूम होनेपर फिर तार दूँगा।"

यह तार पाकर मि० ब्लेकने अपने उसी एजेण्टको फिर लिखा, कि—"तुम इस बातका ज़रूर पता लगाओ, कि ये २०० पौण्ड यहाँसे किसने और क्यों उसके पास भेजे हैं? तुमने अख़-बारोंमें लण्डनके प्रसिद्ध जौहरी मि० डिलनके मरनेका हाल पढ़ा होगा। उसका वसीयतनामा पढ़नेपर मालूम हुआ है, कि उसने अपनीसारी सम्पत्ति उसी विधवाको दे दी है। पैट्रिककी पत्नी डिलनके सम्बन्धमें क्या-क्या जानती है, वह पूछकर शीघ्र लिखना यदि तुम उचित समझना, तो उससे कहना, कि डिलनने उसे

अपनी सारी सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी बनाया है। इस बातको मैं तुम्हारेही विचारपर छोड़ देता हूँ।"

उस दिन मि० ब्लेक, स्मिथको साथ लिये हुए, तीसरे पहर, विनीशिया-होटलकी तरफ़ चले आ रहे थे। उसी समय उनको उसका उत्तर मिला। दोनोंने उसे व्यग्र-भावसे पढ़ना आरम्भ किया। उसमें लिखा था:—

"मैंने आपके लिखे मुताबिक़ काम किया। जिस आदमीने उसे २०० पौण्ड भेजे हैं, उसका नाम कार्टर है। मुझे उसका लण्डनका पता नहीं मालूम हो सका। मैंने अख़बारोंमें डिलनकी मृत्युका संवाद पढ़ा है। मैंने पेट्रिककी विधवा पत्नीके पास आकर फिर भी डिलनकी बात पूछी। उसके मरनेका समाचार पाकर वह बहुतही प्रसन्न हुई। पूछनेपर मुझे मालूम हुआ, कि वह उसपर जी-जानसे कुढ़ी हुई है। उसने कहा,—'डिलनको अपनी करनीका फल मिल गया, अच्छा ही हुआ।' इसी समय उसका पोता वहाँ पहुँच गया और वह बात वहींकी वहीं दबी रह गयी। फिर डिलनकी कोई बात नहीं छिड़ी। तब मैंने कार्टरकी बात छेड़ी—इसपर मुझे मालूम हुआ, कि वह कार्टरको अच्छी तरह पहचानती है; किन्तु यह बात उसने स्वीकार नहीं की। शायद उसे मेरे ऊपर अब सन्देह हो गया है। मैंने अब उससे कहा, कि डिलन, मरनेके पहले, तुम्हें अपनी सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी बना गया है, तब वह मेरी बातका विश्वास न कर हँसने लगी। अब मुझे क्या करना होगा, सो लिखियेगा।"

अब क्या करना चाहिये, यह वे एकाएक ठीक न कर सके।

उनके मौएट-रियलवाले एजेण्ट, फ़िलिप्सने उन्हें बहुतसी नयी बातें बतलायीं, इसमें शक नहीं ; परन्तु उनके सहारे वे इस कठिन रहस्य-जालकी गुत्थी न सुलझा सके। हाँ, इतना वे अवश्य समझ गये, कि पेट्रिककी पत्नीने जितनी बातें उससे कही हैं, उनसे अधिकही उसे मालूम है। शायद बातचीतके बीचमें आकर उसके पोतेने उस बुढ़ियाको और कुछ न कहनेका इशारा कर दिया होगा। इसीसे वह चुप हो रही। वह और कुछ कहे या नहीं ; पर यह तो वह प्रकट कर चुकी, कि वह डिलन-पर जीसे कुढ़ी हुई है। वह डिलनकी मृत्युका हाल सुन खुश भी हुई और इस बातका विश्वास न कर सकी, कि उसने उसे अपनी सम्पत्ति दे डाली है। डिलनपर जो ऐसी जुली-भुनी बैठी थी, उसीको उसने अपना सर्वस्व दे डाला, इसका क्या कारण है ? कैसे इस अथाह भेदकी थाह लगे ? यह बात तो और भी घपलेमें डालनेवाली है, कि इधर डिलन मरा, उधर उसके पास २०० पौण्डकी रक़म पहुँची ! वह किसने भेजी ? क्या डिलनके ख़ूनसे इस दानका भी कोई सम्बन्ध है ?

मि० ब्लेक यही सब सोच रहे थे, कि इसी समय स्मिथकी नज़र थोड़ीही दूरपर बैठी हुई कुमारी अमेलियापर जा पड़ी। देखकर वह बड़ा विस्मित हुआ। वह जानता था, कि अमेलियाके साथ मि० ब्लेककी गहरी दोस्ती है। अतएव यह सोचकर, कि वे उससे मिलकर बड़े खुश होंगे, स्मिथने कहा,—"हुज़ूर ! वह देखिये, मिस अमेलिया यहाँ भी आ पहुँची हैं !"

मि० ब्लेकने चटपट सिर ऊपर उठाकर चारों ओर देखा। इसके बाद बोले,—"कहाँ है? मैं तो उसे नहीं देख पाता।"

स्मिथने कहा,—"वह देखिये—खम्भेकी आड़में बैठी हैं। आज वे अकेली नहीं हैं—उनके मामा भी साथ हैं। और भी एक नौजवान उनके पासही बैठा हुआ हँस-हँसकर उनसे बातें कर-रहा है। वह कौन है, यह मैं नहीं जानता।"

मि० ब्लेकने सिर झुकाकर खम्भेकी आड़में बैठी हुई अमेलियाको देख लिया। देखकर बोले,—"हाँ, आयी तो है। उन लोगोंने अभीतक हमें नहीं देखा। अभी वे जल्दी यहाँसे नहीं जायेंगे—पीछे मिल लूँगा।"

मि० ब्लेक चाय पी चुके थे। अबके वे चुरुट पीते हुए फिर चिन्ता करने लगे। उनके अनजानतेमें ही स्मिथ वहाँसे उठकर अमेलियाके पास चला गया। थोड़ीही देरमें उन्होंने स्मिथको पास बैठा न देखकर अमेलियाकी ओर दृष्टि डाली—उन्होंने देखा, कि स्मिथ अमेलियासे थोड़ीही दूरपर एक मेज़ पकड़कर खड़ा है। परन्तु उन्होंने अमेलियाकी ओर नज़र फेरतेही जो कुछ देखा, उससे उनके मनमें एकही साथ दुःख और डाह, दोनोंही पैदा हुए। उस समय वे डिलनकी हत्याकी बात भूल गये। अबतक जो चिन्ता उन्हें भरमाये हुए थी, वह क्षणभरमें-ही मिट गयी। एक-ब-एक उनके हृदयमें न जाने कैसी एक अज्ञात वेदनाका उदय हुआ, कि उनका चेहरा तमतमा उठा!

मि० ब्लेक बड़ी तीखी निगाहसे अमेलिया, उसके मामा और उस अपरिचित युवककी ओर देखने लगे; जो अमेलियाके

पास बैठा हुआ हँस-हँसकर बातें कर रहा था। वे उनकी भाव-भङ्गीको अच्छी तरह परखने लगे। उन्होंने सोचा,—"यह युवक कौन है?" परन्तु स्मिथकी तरह उन्होंने भी उसे पहले कभी नहीं देखा था। वह एक इज़्ज़तदार घरानेका है, यह तो उसकी पहनाव-पोशाक और सुन्दर चेहरेकोही देखकर मालूम हो जाता है। मि० ब्लेक कई कारणोंसे अमेलियाके पक्षपाती हो गये थे। आजतक यदि कोई रमणी मि० ब्लेकके हृदयको मुग्धकर सकी, तो वह केवल अमेलियाही थी। इस जीवनमें वे सिवा अमेलियाके और किसी रमणीको न प्यार सके। अमेलियाके हृदयपर उनका भी खूब प्रभाव पड़ा था। परन्तु दोनोंके जीवनकी गति और आदर्श ठीक उलटे थे। अमेलिया उनसे विवाह कर, जीवनकी सारी ऊँची अभिलाषाओं और स्वाधीनताका विसर्जन कर, एक जासूसकी घरनी बनकर, विचित्रतासे शून्य शान्तिमय जीवन बितायेगी, यह उसके लिये एकदम असम्भव बात थी। इधर मि० ब्लेक, अपनेको उसके हाथोंमें सौंपकर, अपने जीवनके एकमात्र लक्ष्य-एकमात्र साधनाको पददलित करते हुए, अपनी व्यक्तिगत स्वाधीनता खोकर, उस स्त्रीकी सीमा-रहित दुराकांक्षाके पीछे-पीछे दौड़ते फिरेंगे, इस समुद्रसे उस समुद्रमें जहाज़पर घूमते रहेंगे, अमेलियाके अभिमान, ढिठाई और तरह-तरहके अन्याय-पूर्ण आचरणोंका समर्थन करेंगे—यह उनके लिये भी अनहोनी बात थी। इसीलिये उन दोनोंका मन चाहे कितनाही मिलनेको चाहे, पर उनका मिलना कभी सम्भव नहीं था। परन्तु क्षुधित प्रेम, पिञ्जर-बद्ध पक्षीकी भाँति हृदय

पोजरमें पड़ा-पड़ा कैसी बेढब बेकली और बेचैनी पैदा कर देता है तथा व्यर्थही अधीर होकर कैसे हाहाकारकी सृष्टि कर देता है—यह बात कोई उनके दिलसेही पूछ ले !

वही अमेलिया आज बढ़िया और बेशक़ीमत पोशाक पहने, विन्नीशिया-होटलमें मौज करने आयी है, उसकी बग़लमें एक कामदेवके समान सुन्दर युवक, खूब सुन्दर पोशाक पहने, बैठा हुआ है। अमेलियाके नेत्रोंसे प्रीतिकी अमृत-धारा बरसकर उस युवककी सारी देहका सिञ्चनकर रही है। मालूम होता है, मानों उस युवकके हँसते हुए सुन्दर मुखड़ेकी ओर देखते हुए अमेलियाके स्नेह-भरे नेत्रोंकी क्षुधा मिटतीही नहीं। इसके बाद अमेलियाने जब अपने खिले कमलकेसे कर-पल्लवसे उस भाग्यवान् युवकका हाथ थाम लिया और प्रीतिके आवेशमें आकर उसके ऊपर झुकी-पड़ने लगी—प्रेम-भरे स्वरसे उससे न जाने क्या-क्या बातें करने लगी—तब तो मि०लेकके दिलपर न जाने क्यों साँपसा लोट गया ! उनकेसे उदार-चेता और महानुभाव व्यक्तिका हृदय भी ईर्ष्याकी अग्निसे जल उठा। उनके कलेजेमें बिच्छू डङ्क मारने लगे। उन्होंने ईर्ष्यासे जलते हुए नेत्रोंसे देखा, कि उस युवकने अमेलियाके कन्धेपर हाथ रख दिया और उसके कानके पास मुँह ला, न जाने घुल-घुलकर क्या बातें कर रहा है।

ग्रेविस चुपचाप एक किनारे मन मारे बैठा हुआ है। इससे मालूम होता है, कि युवक-युवतीकी यह घनिष्ठता उसे पसन्द है और वह इसे स्वाभाविक समझता है। तो क्या वह अमेलिया-पर इतना रोष नहीं रखता, कि यह इस तरह एक

युवकसे बातें करनेसे उसे रोके ? यही सोचकर वे ग्रेविसपर भी मन-ही-मन बहुत नाराज़ हुए।

इसी समय मि० ब्लेककी विस्मय और वेदनासे भरी हुई आँखें अमेलियासे जा मिलीं। अमेलियाके नेत्रोंमें हँसी झलकने लगी। थोड़ीही देरमें उसने पासवाली मेज़के पास खड़े स्मिथको देखा। अमेलियाको एक युवकसे प्रेमालाप करते देख, स्मिथको उसके पास जानेका साहस नहीं हुआ, इसीलिये वह दूर खड़ा हुआ उससे बातें करनेका मौक़ा देख रहा था। अमेलियाने मि० ब्लेक और स्मिथ दोनोंको अपने पास आनेका इशारा किया।

मि० ब्लेकने बड़ी मुश्किलसे अपनी मानसिक उत्तेजनाको दबा, बड़े गम्भीर भावसे सिर हिलाकर अमेलियाको सलाम किया और केवल शिष्टाचारके अनुरोधसे, इच्छा न रहते हुए भी उससे मिलने चले। अभिमान और विरागकी अधिकताके कारण वे उससे बातें भलेही न करना चाहते हों; पर यह युवक है कौन, यह जाननेका कौतूहल वे न रोक सके। उनके वहाँ आनेके पहलेही स्मिथ एक कुरसीपर जा डटा और अमेलियासे बातें करने लग गया था।

मि० ब्लेकको सामने आया देख, अमेलियाने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया। मि० ब्लेकने विशेष आग्रह न दिखलाते हुए गम्भीर भावसे उससे हाथ मिलाया। इसके बाद ग्रेविससे हाथ मिलाकर वे उस अपरिचित युवककी ओर देखने लगे। अमेलियाने अपने भाईको मि० ब्लेकसे परिचित कराते हुए

कहा,—"इनका नाम मि० राबर्ट्स है।" असल परिचय उसने उनसे छिपा रखा।

ग्रेविसने जब उन लोगोंसे चाय पीनेका अनुरोध किया, तब मि० ब्लेकने कहा,—"मैंने तो अभी चाय-पी है। अब चायकी तो इच्छा नहीं है। हाँ, यदि ह्विस्की-सोडा हो, तो उससे इन्कार नहीं है। पर स्मिथको तो शायद किसी चीज़से इन्कार न होगा। ख़ास कर मेज़पर सजी हुई इन चपातियोंको देखकर तो शायद इसकी लार टपक रही होगी!"

ग्रेविसके हुक्मसे ख़ानसामा, मि० ब्लेकके लिये ह्विस्की-सोडा लाने चला। अमेलियाने मि० ब्लेकसे कहा,—"अभी हम लोग ह्लिन्डके ख़ूनके बारेमें बातचीत कर रहे थे, कि इतनेमें स्मिथने आकर कहा, कि आपने उसके अनुसन्धानका भार अपने हाथमें लिया है।"

स्मिथके इस लड़कपनपर कुढ़कर मि० ब्लेकने नीचेसे अपने जूतेको आगे बढ़ाकर, स्मिथके पैरमें एक ठोकर मारी। साथही वे भवें सिकोड़कर अमेलियासे बोले,—"मैं ह्लिनके ख़ूनके बाद उसके घर गया था सही; पर अभीतक कुछ खोज-ढूँढ़ नहीं कर सका हूँ। अभीतक तो उसका अनुसन्धान पुलिसही कर रही है।"

अमेलियाने कहा,—"समाचार-पत्रोंने उसके ख़ून किये जानेका जो उद्देश्य बतलाया है, क्या आप उसे ठीक समझते हैं?"

मि० ब्लेकने सिर हिलाकर कहा,—"इस विषयमें मेरी क्या राय है, वह मैं अभी ज़ाहिर करना नहीं चाहता। तुम्हारी क्या राय है?"

अमेलियाने कहा,—"मेरी राय? अच्छा, सुनिये—मेरे ख़यालसे तो उसको जो दण्ड मिला है, वह ठीकही है। मुझे जो कुछ हाल डिलनके सम्बन्धमें मालूम हुआ है, उसीके आधारपर डिलनकी इस अकाल-मृत्युको हत्या कहनेवाले इन अख़बारवालोंकी बातका मैं समर्थन नहीं कर सकती।"

अमेलियाने जिस जोशके साथ ये बातें कहीं, उसे देख मि० ब्लेक अचंभेमें आये बिना न रहे। पर इसी समय स्मिथने एक हँसानेवाली बात कहकर सबको हँसा दिया। अतएव बात वहीं दबी रह गयी। मि० ब्लेकको अमेलियाके मनकी बात कहलवा लेनेका मौक़ा न मिला। इतनेहीमें होटलका नौकर मि० ब्लेकके लिये ह्विस्की-सोडा ले आया। मि० ब्लेक मेज़पर-से गिलास उठाकर धीरे-धीरे पीने लगे।

इसी समय अमेलियाने बड़े प्यारसे 'मि० राबर्टस'के कन्धेपर हाथ रखकर कहा,—"देखो, जैक! तुमने अख़बारोंमें अवश्य मि० राबर्ट-ब्लेककी कहानियाँ पढ़ी होंगी—ये वही मि० ब्लेक हैं। इनके समान अद्भुत शक्तिवाला जासूस, केवल इंग्लैण्डमेंही नहीं, सारे युरोपमें भी शायदही कोई और हो। ये जिस चोरी, डकैती या ख़ूनके मामलेका भार अपने हाथमें लेते हैं, उसके असामीको गिरफ़ार किये बिना नहीं छोड़ते। जहाँ पुलिसवाले पैर नहीं देसकते, वहाँ ये अनायास पहुँच जाते हैं।"

ठीक इसी समय मि० ब्लेकके हाथसे छूटकर ह्विस्कीका गिलास मेज़पर गिर गया और सौ-सौ टुकड़े हो गया। सारी मेज़पर सोडा मिली हुई ह्विस्की फैल गयी मि०

ब्लेकने लज्जित होकर इस असावधानीके लिये अमेलियासे क्षमा माँगी।

लेकिन स्मिथकी नज़रोंमें मि० ब्लेककी यह हरकत कुछ औरही तरहसे दिखाई दी। वह समझ गया, कि ज़रूरही एकाएक किसी बातको देखकर वे बहुत घबरा उठे हैं,तभी उनके हाथसे गिलास गिर पड़ा है। परन्तु लाख सिर मारनेपर भी वह उस कारणका पता न पा सका।

बुद्धिमती अमेलियाको यह बात समझते देर न लगी, कि वह जो मि० ब्लेकके सामनेही मि० 'राबर्ट्स'के कन्धेपर प्यारके साथ हाथ रखकर बातें कर रही है, इसीसे वे यों एकाएक विचलित हो उठे हैं। इस बातसे अमेलियाको मन-ही-मन बड़ा मज़ा मालूम हुआ और एक क्षणके लिये उसकी आँखोंमें मुस्कराहट छा गयी। उसने सोचा, कि मैं मि० ब्लेकको दिखलाकर 'जैक'के प्रति और भी अधिक स्नेह दिखलाऊँगी, जिसमें वे और भी जलें!—अमेलिया बड़ीही नटखट है! उसकी नस-नसमें शरारत भरी है!

परन्तु मि० ब्लेकने अमेलियाकी इस शरारतका मज़ा चखते हुए एक ग्लास सोडा-ह्विस्की और पी ली। मि० ब्लेक बड़ेही चतुर आदमी थे। वे अपने मनका भाव कभी किसीपर ज़ाहिर नहीं होने देते थे। आज एकाएक उनके मनका भाव प्रकट हो जानेसे वे अपनेही ऊपर बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने सङ्कल्प किया, कि अबसे मैं ऐसा न होने दूँगा। परन्तु इस अपरिचित युवकके प्रति अमेलियाका ऐसा प्रेम-मय व्यवहार देख, उनके

मनमें क्योंकर ईर्ष्या और विद्वेषका सञ्चार हो आया, यह वे नहीं समझ सके।

मि० राबर्ट्सने बातें करते-करते मि० ग्रेविसके कानमें कोई बात कहनेके लिये सिर झुकाया। इसी समय उसके बायें कन्धेके ऊपर मि० ब्लेक और स्मिथ, दोनोंकी दृष्टि जा पड़ी। उस ओर देखतेही दोनोंने बड़े आश्चर्यसे परस्पर इशारेबाज़ी की।

'मि० राबर्ट्स'ने जिस समय ग्रेविसकी ओर अपना मुँह बढ़ाया, उसी समय उसकी कमीज़के कालरके भीतरसे उसका गला बहुत कुछ बाहर हो गया। इसीलिये मि० ब्लेक और स्मिथको उसके कन्धेके ऊपर और कानके नीचेवाला ज़ख्मका दाग़ दिखाई पड़ गया। इस दाग़की बात शायद मि० राबर्ट्सको याद नहीं रही, नहीं तो वह यों उसे प्रकट न होने देता। परन्तु कभी-कभी थोड़ीसी असावधानीका फल भी बहुत भयङ्कर हो जाता है और प्राण-पणसे लाखों चेष्टाएँ करनेपर भी उस एक असावधानीका संशोधन नहीं किया जा सकता। 'राबर्ट्स'के कालरसे उसका ज़ख्मका दाग़ बहुत कुछ छिपा हुआ था, तोभी जितना अंश मि० ब्लेक और स्मिथको दिखाई पड़ा, उतनाही काफ़ी था।

मि० ब्लेकने अच्छी तरह लक्ष्यकर देखा, कि आजकलके फ़ैशनके मुताबिक़ भलेमानसोंकी क़मीज़का कालर जितना ऊँचा होना चाहिये, उससे इस अपरिचित युवककी क़मीज़का कालर कहीं ऊँचा है। क्या ऐसा कालर फ़रमायश देकर बनवाया गया है? मि० ब्लेक यही सोचने लगे। उनका यह बदला हुआ

तौर अमेलियाने भी देख लिया। मि० ब्लेकने उसके ज़ख्मका दाग़ देख लिया है, यह तो वह न समझ सकी, तोभी उसने होशियारीके लिहाजसे उस दाग़को छिपानेका उपदेश करनेके लिये राबर्ट्सको एक ज़रूरी बात कहनेके बहाने हाथ धरकर सीधा बैठा दिया। इससे वह दाग़ बिलकुल कालरके नीचे छिप गया।

यदि मनुष्यके किसी अङ्गमें विकार होता है, तो वह उसे छिपानेकी स्वभावतः चेष्टा किया करता है। इसीलिये राबर्ट्स इतना ऊँचा कालर रखता था और कोई इधर ध्यान नहीं देता था ; परन्तु इस अवस्थामें मि० ब्लेक और स्मिथके मनमें सन्देह पैदा हुए बिना न रहा। पुलिस जिस आवाराहाल और ग़रीब असामीकी खोजमें सारे लण्डनकी ख़ाक छान रही थी, उसमें और अमेलियाके इस शौक़ीन दोस्तमें तो ज़मीन और आसमान-का फ़र्क़ है! कविकी भाषामें कह सकते हैं, कि इसमें और उसमें अन्धेरे-उँजियालेका फ़र्क़ है! कितने कारणोंसे, कितने आदमियोंके कन्धेके ऊपर दाग़ हो सकता है, फिर इस धनवान, विलासी और बहुमूल्य-परिच्छद-विभूषित सुन्दर, सुशील नव-युवाको डिलनका ख़ूनी समझना, तो ठीक नहीं है? बायें कानके नीचे इस दाग़को छोड़कर उस ख़ूनीसे इसका कोई मेल नहीं मिलता।

यह सब बातें सोचनेपर भी जो सन्देह मि० ब्लेकके हृदयमें उत्पन्न हुआ, उसे वे एकबारगी दिलसे दूर न कर सके। ख़ास-कर डाह और क्रोधसे वे इस युवकसे पहलेहीसे जले बैठे थे।

उन्होंने एक बार बड़ी तीक्ष्ण दृष्टिसे मि० राबर्ट्सकी ओर देख-कर सोचा,—"युवक बड़ाही रूपवान्-सुन्दर है, इसमें सन्देह नहीं; किन्तु जो दीर्घ-कालतक धूपमें दौड़ता हुआ मारा-मारा फिरता रहा है, उसके मुखपर प्रकृति-देवी जो रूखेपनका रङ्ग फेर देती हैं, वह क्या दोही दिनोंमें मिट जा सकता है? मि० ब्लेकने साफ़-साफ़ उस रूखेपनको राबर्ट्सके चेहरेपर देखा। वे समझ गये, कि इसका चमड़ा लावण्य-हीन और कर्कश हो गया है। हाथ साधारण मज़दूरोंकी तरह रुखड़े और मोटे हैं; नगरमें रहनेवाले विलासी नव-युवककी हथेलियाँ जैसी चिकनी और मुलायम होनी चाहिये, वैसी इसकी नहीं हैं। इसके हाथकी उँगलियाँ भी मोटी, खुरदरी और भद्दी हैं।"

पर अपने मनके इन सारे सन्देहोंको छिपाये हुए, मि० ब्लेक हँसते हुए मि० राबर्ट्ससे बातें करने लगे। उन्होंने कहा,—"मि० राबर्ट्स! मिस अमेलियासे आपका परिचय बहुत पुराना मालूम होता है; पर मैंने तो आजही आपको इनके साथ देखा है। आप क्या किसी और जगहसे लण्डनकी सैर करने आये हैं?"

'राबर्ट्स'ने मि० ब्लेकके इस प्रश्नका उत्तर देनेके लिये ज्योंही सिर ऊपर उठाया, त्योंही अमेलियाने मेज़के नीचेही-नीचे अपना पैर बढ़ाकर राबर्ट्सके घुटनेमें धीरेसे ठोकर मारी। मि० ब्लेकने उसकी यह काररवाई देख ली।

अमेलियाके इशारेको समझकर राबर्ट्सने संयत-भावसे कहा,—"हाँ, महाशय! मैं कुछही दिनोंके लिये लण्डनकी सैर करने आया हूँ।"

मि० ब्लेकने पूछा,—"आप क्या इंग्लैण्डके रहनेवाले नहीं हैं?"

राबर्ट्सने कहा,—"नहीं, मेरा घर अस्ट्रेलियामें है। मैं—"

कहीं बातें करते-करते वह कुछ गोलमाल न कर दे, इसी डरसे उसकी बात बीचसेही काटकर अमेलियाने मि० ब्लेकसे कहा,—"मि० राबर्ट्स हमलोगोंके पुराने जान-पहचानी हैं। जब मेरे बाप ज़िन्दा थे, तब ये बराबर हमारे घर आया करते थे। उस समय मैं बहुत नादान बच्ची थी। फिर मैंने बहुत दिनोंतक इन्हें नहीं देखा। आज एक ज़मानेके बाद इन्हें लण्डनमें देखकर मेरी खुशीका कोई ठिकाना नहीं है।"

मि० ब्लेकने फिर राबर्ट्सकी ओर फिरकर कहा,—"अच्छा, तो आप अभी हालमें यहाँ आये हैं? मुझे कई बार अस्ट्रेलिया जानेका काम पड़ा है। रास्तेमें आपको किसी तरहकी तकलीफ़ तो नहीं हुई?"

अमेलिया बग़लमेंही बैठी थी, इसलिये मि० ब्लेककी जिरहसे राबर्ट्स न घबराया और झटपट बोल उठा,—"नहीं। मुझे समुद्रमें किसी तरहकी तकलीफ़ नहीं हुई। हाँ, भारत-महासागरमें आनेपर एकबार तूफ़ान उठा था, पर वह देरतक नहीं ठहरा। ख़ासकर 'पेलबेनी' जहाज़ बड़ा और नया ठहरा, उसे मामूली तूफ़ानसे कोई नुक़सान पहुँचनेका डर भी नहीं था।"

मि० ब्लेकने उसी दिन सवेरे 'टाइम्स'में लण्डनमें आनेवाले जहाज़ोंकी सूची देखी थी। रोज़-रोज़ जो जहाज़ लण्डनके बन्दरगाहमें पहुँचते हैं, उनकी सूची पढ़ लेना, उनका प्रतिदिनका

कार्य था। मि० राबर्टसकी बात सुनकर उन्हें याद हो आया, कि 'ऐलबेनी' नामका जहाज़ सचमुच आज लण्डनके बन्दरगाहमें आया है।

मि० ब्लेकने सोचा, कि यदि मि० राबर्टसका कहना सच हो, और वह सचमुच 'ऐलबेनी' जहाज़परही अस्ट्रेलियासे लण्डन आया हो, तो उसे डिलनके खूनके मामलेमें लपेटना, ठीक नहीं। जिस रातको डिलन मारा गया, उस दिन तो यह जहाज़ इंग्लैण्डसे बहुत दूर था। इसलिये 'ऐलबेनी'के किसी मुसाफ़िरके हाथों डिलनकी मृत्यु होनी एकबारगी असम्भव है। ख़ासकर, मि० राबर्टस अमेलिया और ग्रेविसके पुराने मित्रोंमें हैं, शायद किसी बड़े घरानेके धनाढ्य नवयुवक हैं, ऐसी अवस्थामें महज़ कानके नीचेवाला दाग़ देखकरही उन्हें ख़ूनी समझ लेना, ठीक नहीं।

इन्हीं सब बातोंको सोचते हुए मि० ब्लेकने फिर मि० राबर्टससे जिरह नहीं की। दो-चार मिनट और इधर-उधरकी बातें करनेके बाद वे अमेलिया, ग्रेविस तथा मि० राबर्टससे विदा माँगकर चलते बने। साथ-ही-साथ स्मिथ भी चल पड़ा।

मि० ब्लेकके चले जानेपर, अमेलिया राबर्ट-कार्टरकी विपद्के भयसे घबरा उठी और उसको इस भयङ्कर विपद्से बचानेके लिये अपने मामा ग्रेविससे सलाह करने लगी। अगर मि० ब्लेकको इस सलाहकी बात मालूम हो जाती, तो उन्हें डिलनके हत्यारेका पता लगानेके लिये अँधेरेमें नहीं भटकना पड़ता।

छठवाँ परिच्छेद

फटे-पुराने वस्त्रोंवाला आश्रयहीन, दरिद्र, स्पाइक्स-कार्टर, जो एक दिन रातको दुनियाकी ख़ाक छानता हुआ बर्कलेस्क्वेयरमें डिलनके घर आया और उसे मार डाला, वह और अमेलियाका यह साथी, जो बड़े ठाट-बाटकी पोशाक पहने था, जो देखनेमें बड़ा धनवान् और विलासी मालूम होता था और बड़ी बेफ़िक्री और शानके साथ 'विनोशिया-होटलमें' बैठा हुआ खाना-पीना और अमेलियाके सङ्ग बातें कर रहा था,— ये दोनों एकही व्यक्ति हैं, यह अनुमान करना, ज़रा टेढ़ी खीर थी।

पर यह सारा परिवर्त्तन बुद्धिमती अमेलियाकी करामात थी। डिलनकी आकास्मिक मृत्युके बाद जब राबर्ट-कार्टर अमेलियाके यहाँ आया, तब अपने बहुत दिनके भूले हुए भाईको पाकर वह ऐसी आनन्दित हुई, कि मिलनेकी इस ख़ुशीमें उस दुर्घटनाकी बातही बिलकुल भूल गयी। उसके बारेमें कोई ज़िक्रही न छिड़ा। अमेलियाने उसे सिर्फ़ इतनाही कहा, कि मैं तुम्हें जी-जानसे बचानेकी चेष्टा करूँगी ; परन्तु उस प्रतिज्ञाका मूल्य कितना है, यह वह बेचारा उस दिन नहीं समझ सका था।

दूसरेही दिन लण्डनके तमाम दैनिक पत्रोंमें डिलनके एक-ब-एक मारे जानेका हाल छप गया। डर और अचरजके मारे लण्डनवाले घबरा उठे। अमेलियाको भी ख़बर मिली, कि

पुलिस, ख़ूनीकी गिरफ़्तारीके लिये, जी-तोड़ कोशिश कर रही है। अमेलिया समझ गयी, कि इस समय रावर्टको बचानेकी भरपूर चेष्टा न करनेसे बड़ी आफ़त आयेगी। अतएव वह भाईको बचानेकी तरकीबें सोचने लगी।

तीसरे पहरके पत्रोंमें अमेलियाने पढ़ा, कि डिलनके ख़ूनीकी सबसे बड़ी पहचान यह है, कि उसके बायें कानके नीचे एक बड़ा भारी ज़ख्मका दाग़ है। इसीसे पुलिस बड़ी सरगरमीसे उसकी खोज कर रही है। इस समाचारको पढ़कर अमेलिया और भी चिन्तित हुई। वह समझ गयी, कि इस दाग़को छिपा डालना, बड़ाही कठिन है। साथही यह भी होनेका नहीं, कि उसका भाई दिन-रात घरके भीतरही छिपा रहे। कभी-न-कभी तो घरके बाहर जाना ही पड़ेगा? और जहाँ बाहर निकला, वहाँ मुमकिन है, कि गिरफ़्तार हो जाये।

यही सब सोचकर पहले तो अमेलियाने उसे किसी तरह लण्डनसे हटा देनेका विचार किया; किन्तु अन्तमें सब बातें विचार कर सोचा, कि ऐसा करना ठीक न होगा। इससे तो पकड़े जानेकी सम्भावना और भी प्रबल हो जायेगी। अतएव उसने सोचा, कि इसकी पहनाव-पोशाकको एकदम बदल डालना और इसे अपने पास रखनाही ठीक होगा। इससे पुलिसकी आँखोंमें काफ़ी तौरसे धूल झोंकी जा सकती है। ऐसा करने पर फिर कोई उसपर ख़ूनी होनेका सन्देह न कर सकेगा।

अमेलियाके कहे अनुसार ग्रेविस झटपट तरह-तरहके क़ीमती सामान रावर्टके लिये ले आया। ये सब सामान अमेलियाके

घरमेंही थे। राबर्ट-कार्टरकी एकदम कायापलट हो गयी। जो फटे-पुराने-कपड़े पहने हुए वह अमेलियाके घर आया था, वे सब आगमें जला दिये गये। वह पुराना जूतेका जोड़ा भी नष्ट कर दिया गया। अमेलियाने सोचा, कि अब इसे कई दिन मैं घरसे बाहर न निकलने दूँगी।

अमेलिया जिस दिन अपने भाईको लेकर 'विक्टोरिया-होटल-में' गयी थी, उसी दिन पहले-पहल यह बात उसे मालूम हुई, कि डिलनके खूनके मामलेकी जाँच मि० ब्लेकके हाथमें है। अमेलिया उन्हें अच्छी तरह पहचानती थी, इसलिये यह समाचार पाकर वह बहुत घबरायी। उसके एक दिन पहले, राबर्ट अपनी बहनकी बात न मानकर बाहर चला गया और 'कार्टर' नाम देकर मौण्ट-रियलमें पैट्रिककी विधवा पत्नीके नाम दो सौ पौण्ड रवाना कर आया। अमेलियाने जब यह बात सुनी, तब इस बेवकूफ़ी और जल्दबाज़ीके लिये उसे बहुत डाँटा और यह भी कहा, कि तुमने यह काम कर, अपनी गिरफ़ारीका रास्ता साफ़ कर दिया है। पर अब लानत-मलामत करकेही क्या होगा? यही सोचकर वह और भी सतर्कता रखने लगी। मि० ब्लेक, मौण्ट-रियलसे खबर मँगवाकर राबर्ट-कार्टरकी खोज करना शुरू कर देंगे, इसका भरोसा न होनेपर भी अमेलियाने सोचा, कि यह मि० ब्लेकके लिये कोई असम्भव बात नहीं है।

इसके बाद अमेलियाने सुना, कि मृत मि० डिलनने अपनी समस्त स्थावर-अस्थावर सम्पत्ति पैट्रिककी विधवा पत्नीको दे-देनेका वसीयतनामा लिखा है। इससे अमेलियाकी उत्कण्ठा

सौगुनी बढ़ गयी। वह समझ गयी, कि अब उसके भाईकी अवस्था और भी सङ्कटापन्न हो गयी। अब उसे गिरफ़्तार न होने देनेके लिये वह तरह-तरहके उपाय सोचने लगी। इसके बाद उसने तार भेजकर पैट्रिककी विधवा पत्नीको सचेत कर दिया, कि अगर तुमसे कोई कार्टरकी बात पूछने आये, तो कुछ न बतलाना। लेकिन मि० ब्लेकका एजेण्ट उससे पहलेही उससे पूछ आया था, कि किसने उसको दो सौ रुपये भेजे हैं। इसलिये इस मामलेमें अमेलियाकी होशियारी कुछ काम न आयी। जो हो, इस तारको पाकर वह इतनी सचेत ज़रूर हो गयी, कि फिर उसने फ़िलिप्सको कुछ भी न बतलाया।

इसके बाद अमेलियाने अपने भाईसे कहा,—"तुम अपना नाम एकदम बदल डालो। ऐसा किये बिना बचना कठिन है।" अमेलियाने उसी दिन शामके अख़बारोंमें अस्ट्रेलियासे आये हुए एक जहाज़का हाल पढ़ा था। उसके मुसाफ़िरोंमें कोई 'राबर्ट्स' भी था। यही नाम पसन्द आ जानेके कारण अमेलियाने अपने भाईका नाम 'राबर्ट्स' रख दिया। इसीलिये राबर्ट-कार्टरसे वह मि० राबर्ट्स हो गया। इसके बाद अमेलियाने अपने-भाईको छिपा रखनेकी अपेक्षा उसे तमाम अपने साथ लिये फिरनाही अच्छा समझा। उसने सोचा, कि ऐसा करनेसे फिर कोई उसपर सन्देह न करेगा। वास्तवमें अपने भाईको बचानेके लिये अमेलियाने जो बन्दिशें कीं, वे काफ़ी थीं, तथापि ब्लेकके इस मामलेमें पड़ जानेसे उसके रास्तेमें बड़े विघ्न आये। मि० ब्लेककी आँखोंमें धूल डालना, बड़ा ही कठिन कार्य था।

विनीशिया-होटलमें मेरे भाईको देख, मि० ब्लेकके मनमें सन्देह पैदा हो गया है, यह जानकर अमेलिया बहुत घबरायी। उसकी समझमें न आया, कि अब कौनसा उपाय करना चाहिये? उसने पहले तो सोचा, कि मि० ब्लेकसे मिलकर सब सच-सच कह दूँ और उनसे इस बातका इक़रार करा लूँ, कि वे पुलिसको इस बातका पता न लगने देंगे; सम्भव है, कि वे मेरा यह प्रेमानुरोध मान लें। परन्तु तुरतही उसने ऐसा अनुरोध करना अच्छा नहीं समझा। वे जिस मामलेका भार लिये बैठे हैं, उसके असामीका पता पाकर भी यदि वे चुप रह जायेंगे, तो यह एक तरहका विश्वासघात होगा, उन्हे कर्तव्य-भ्रष्ट होना पड़ेगा और कहीं भेद खुला, तो वेजन्म-भरके लिये सबकी श्रद्धा और विश्वास खो देंगे—उनका सारा प्रभाव नष्ट हो जायेगा। फिर उनको इस प्रकार सबकी नज़रोंसे गिरा देनेका मुझे क्या अधिकार है? वेही मेरे अनुरोधको मानकर ऐसा काम क्यों करने लगे? यही सब सोचकर, अमेलियाने विचार किया, कि ऐसा अनुरोध करना, भाईकी भलाईके बदले बुराई ही करेगा। अतएव उसने यह विचार छोड़ दिया।

अब अमेलिया सोचने लगी,—"तो क्या सचमुच मि० ब्लेकको मेरे भाईपर सन्देह हुआ है? यह नहीं मालूम, कि मि० ब्लेक और स्मिथने मेरे भाईके कानके नीचेवाला दाग़ देखा है या नहीं; पर यह तो मैंने साफ़ देख लिया था, कि जब उसने गरदन बढ़ाकर प्रेचिससे बातें करना शुरू किया, तब उसकी ओर देखकर स्मिथ एकाएक बहुत चञ्चल हो गया था। उसकी

वह चञ्चलता थोड़ीही देर रही, तोभी मैंने ताड़ ली। स्मिथकी वह चञ्चलता और किसी कारणसे हरगिज़ नहीं थी। मि० ब्लेकने वह दाग़ भलेही न देखा हो, पर जब स्मिथने देख लिया, तब उनका देखना, न देखना, दोनों बराबर है।"

अमेलिया बैठीही-बैठी फिर सोचने लगी,—"अब मैं क्या करूँ? कैसे अपने भाईको बचाऊँ? मेरा सब कुछ चला जाये, जानतक चली जाये—पर राबर्टको तो बचानाही होगा। मि० ब्लेकने क्यों इस मामलेको अपने हाथमें लिया? इसके लिये उन्हें जितना पुरस्कार मिलेगा, मैं उसका दुगुना उन्हें दे सकती हूँ, यदि वे इससे हाथ खींच लें। पर अब तो उनसे ऐसा अनुरोध करना व्यर्थ है। इससे तो बुराईही होगी, भलाई नहीं। यदि मि० ब्लेक इस मामलेमें न पड़ते, तो मैं ज़रा भी न घबराती। अब मैं कौनसा रास्ता पकड़ूँ? भाईकी रक्षाके लिये कौनसा उपाय करूँ? मैंने मामासे भी पूछा था, कि मुझे क्या करना चाहिये? उन्होंने कहा, कि वह तुम्हारा सहोदर भाई है और बहुत दिनोंके बाद विपद्में पड़कर तुम्हारी शरणमें आपहुँचा है, इसलिये उसे विपत्तिमें छोड़कर अलग हो जाना, कदापि उचित नहीं है। धन, प्राण सब कुछ एक ओर और भाई एक ओर है। सर्वस्व देकर भी तुम्हें उसकी रक्षा करनी चाहिये। जिसे अपने घरमें आश्रय देकर अभय कर दिया; उसको यदि मैं न बचा सकी, तो फिर जीवन धारण करनेसे क्या लाभ है? मैं प्राण रहते, अन्त-तक युद्ध करके देखूंगी, फिर भगवान् जो करेगा, वह तो होगाही।"

अन्धेरी रातके समय अपने कमरेमें अकेली बैठी हुई

अमेलिया इन्हीं सब विचारोंमें डूबी हुई थी। इसी समय उसकी दासी 'अन्ना' बिजलीकी रोशनी जलानेके लिये उस कमरेमें आयी। रोश्नी जलातेही अमेलियाकी उदासी और आँखोंमें छायी हुई घबराहटको देखकर वह अचम्भेमें पड़ गयी। वह सोचने लगी,—"अमेलिया किसी सामान्य कारणसे ऐसी उदास और उद्विग्न नहीं हो सकती; पर उसे न तो वह कारणही मालूम हुआ और न वह कुछ पूछनेका साहसही कर कर सकी। 'अन्ना'को मेरा यह चिन्तित भाव खटक गया है, यह सोचकर अमेलियाने अपने मनके भावोंको बहुत दबाया, बड़ी मुश्किलोंसे होठोंपर हँसी लाकर दो-चार बातें बोली। इसके बाद चुपचाप उठकर दूसरे कमरेमें जा, उसने अपनी पोशाक बदली।

रातको खाना, खाते समय, उसने राबर्ट और ग्रेविससे इस तरह मीठी-मीठी बातें कीं, कि वे यह नहीं समझ सके, कि उसका चित्त-चिन्तासे चूर होरहा है। और-और बातोंके बाद अमेलिया ग्रेविससे मिलकर इस बातकी सलाह करने लगी, कि क्योंकर पुलिसकी आँखोंमें धूल डाली जाये? किस उपायसे काम लेनेपर राबर्ट एकदम निरापद हो सकता है? ग्रेविस अपनी भाञ्जीको भली भाँति पहचानता था। वह जानता था, कि उसमें इतना बुद्धि-बल है, कि वह असम्भवको सम्भव कर देसकती है। इसीलिये वह उसकी हर बातमें हामी भरता चला गया। वह समझ गया, कि मि० ब्लेक, इँगलैण्डके सबसे बड़े जासूस होते, हुए भी, बुद्धिके युद्धमें अमेलियाको नहीं हरा सकते।

सातवाँ परिच्छेद

सन्ध्यासे पहलेही विनीशिया-होटलसे बाहर निकलकर मि० ब्लेकने अपने अनुचर स्मिथसे कहा,—"देखो, स्मिथ! तुम इसी समयही ज़रा साउथ-पैसिफ़िक-लाइनके जहाज़के आफ़िसमें चले जाओ! इसी लाइनका एक जहाज़, जिसका नाम 'ऐलबेनी' है, आज अस्ट्रेलियासे आया है। तुम वहाँ पूछना, कि आज वह जहाज़ ठीक किस समय बन्दरमें पहुँचा है और परसोंकी रातमें वह किस जगहपर था। इसके बाद वहाँसे मुसाफ़िरोंकी फ़िहरिस्त माँगकर देखना, कि उसमें जान या जैक राबर्ट्‌स नामका कोई आदमी था या नहीं। यह सब मालूम कर तुम जल्दी ही घर लौट आना।"

स्मिथने कहा,—"तब तो मालूम होता है, कि आपने भी मि० राबर्ट्‌सके कानके नीचेवाला दाग़ देख लिया है?"

मि० ब्लेकने धीरेसे कहा,—"हाँ, देखा है। परन्तु मैं उसेही ख़ूनी समझता हूँ, ऐसा ख़याल न कर बैठना। मैं इस बातका कभी विश्वास नहीं कर सकता, कि अमेलियाका कोई इज़्ज़तदार दोस्त ऐसा बुरा काम कर सकता है। कितने आदमियोंके कानके नीचे दाग़ होगा, इसीलिये क्या सभी ख़ूनी हो जायेंगे? यदि यह आदमी सचमुच 'ऐलबेनी' जहाज़सेही उतारा हो, तो इसपर सन्देह करनेका कोई कारण नहीं है जिस दिन ख़िलनका

खून हुआ, उस दिन तो यह जहाज़ बहुत दूर समुद्रमें तैर रहा होगा। उस दिन इस जहाज़का कोई मुसाफ़िर उड़कर यहाँ चला आया और मि० डिलनका खून कर गया, यह बात क्या कभी मानने लायक़ है? पर अमेलियाके इस दोस्तने सच कहा है या झूठ, इस बातकी परीक्षा करलेनी भी ज़रूरी है। वह आदमी कैसाही इज्ज़तदार और भलेमानस क्यों न हो, पर उसकी बातको एकदम सच मान लेना, जासूसोंके क़ायदेके बरख़िलाफ़ है। उसकी बातकी सच्चाईका सुबूत ढूँढ़ना, मेरा काम है। इसीलिये मैं तुम्हें जहाज़के आफ़िसमें भेज रहा हूँ। यदि सच-मुच वह 'ऐलबेनी'काही मुसाफ़िर हो, तो उसे सन्देहके बाहर समझूँगा और उसपरसे नज़र हटा लूँगा। जब तुम वहाँसे पूछ-पाछकर चले आओगे,तब मैं मौण्ट-रियलसे आये हुए फ़िलिप्स-के संवादोंपर विचार करूँगा।"

थोड़ी दूर जाकर मि० ब्लेकने एक भाड़ेकी मोटर पकड़ ली और अपनी ख़ास मोटरपर स्मिथको सवार करा, जहाज़के आफ़िसकी ओर भेज दिया।

'ऐलबेनी' साउथ-पैसिफ़िक लाइनका मुसाफ़िरी जहाज़ था। इस कम्पनीका आफ़िस 'लण्डनवाल बिल्डिंगसमें' था। स्मिथ ख़ूब तेज़ीसे मोटर दौड़ाता हुआ वहाँ जा पहुँचा।

उस समय साँझ हो आयी थी। जहाज़का आफ़िस बन्दही हुआ चाहता था। परन्तु स्मिथने देखा, कि अभीतक आफ़िसके अन्दर आदमियोंका घूमना-फिरना जारी है। पूछनेपर स्मिथको मालूम हुआ, कि, उनके प्रायः सभी जहाज़ मुसाफ़िरीही हैं। एक

जहाज़ जल्दीही खुलनेवाला है, इसीलिये ये लोग टिकट ख़रीदने आये हैं।

स्मिथ घूमता-फिरता हुआ एक खिड़कीके पास खड़ा होगया। भीतर एक किरानी काम कर रहा था। उसे बुला-कर स्मिथने पूछा,—"आपलोगोंका 'ऐलबेनी' नामक जहाज़ आज कब यहाँ आया है?"

किरानी,—"सबेरे नौ बजे।"

स्मिथ,—"वह किस डकमें लगा था?"

किरानी,—"रिलवरी-डकमें।"

स्मिथ,—"उस जहाज़के मुसाफ़िरोंकी सूची क्या आप मुझे दिखा देंगे?"

किरानी,—"वह मेरे पास नहीं है। उधरकी तरफ़ सबसे अख़ीरमें, जो किरानी बैठा है, उसीके पास है।"

यह सुन, उसे धन्यवाद दे, स्मिथ उसके बतलाये हुए स्थान-पैर जा पहुँचा। वहाँ उसने कई आदमियोंको देखा। ये लोग जानेवाले मुसाफ़िर नहीं थे, बल्कि आजकेही जहाज़से यहाँ उतरे थे। कोई यह दर्याफ़्त करने आया था, कि उसके आनेके पहले जहाज़के आफ़िसके पतेपर उसकी कोई चिट्ठी आयी है या नहीं? कोई 'सोमाली' नामक जहाज़की ख़बर लेने आया था। यह जहाज़ भी उसी दिन स्वेज़की राहसे लण्डन आया था। कोई-कोई अपना माल-असबाब जहाज़के गुदामसे निक-लवाकर लेजानेके लिये आये हुए थे।

जहाज़के मुसाफ़िरोंके नामकी चिट्ठियाँ वहाँ पड़ी हुई थीं।

दो किरानी बड़ी मुस्तैदीसे उन चिट्ठियोंको छाँट रहे थे। और जो जिस नामकी चिट्ठी माँगते थे, उन्हें उसी नामकी चिट्ठी देरहे थे।

स्मिथ, उसी जगह खड़ा होकर, उन दोनों किरानियोंका चिट्ठी बाँटना देखने लगा। उसे यह कारखाई डाकख़ानेकी 'विन्डो डिलेवरी'कीसी मालूम पड़ी। उसे ठीक मालूम पड़ा। मानों यह जहाज़का आफ़िस नहीं, बल्कि डाकख़ाना है!

उन किरानियोंके फ़ुर्सत पानेकी इन्तज़ारीमें स्मिथ बड़ी देरतक खड़ा रहा। इसी समय एक बड़ा लम्बा-तगड़ा, डील-डौलवाला जवान खिड़कीके पास आखड़ा हुआ और सिर झुकाकर उन किरानियोंसे बोला,—"क्यों साहब! ऐलवेनीके मुसाफ़िर जे० राबर्ट्सके नामकी कोई चिट्ठी है या नहीं?"

किरानीने कहा,—"ठहर जाइये—देखकर बतलाता हूँ।"

'जे० राबर्ट्स' यह नाम सुनतेही स्मिथ चौंक पड़ा; क्योंकि वह तो इसी नामके मुसाफ़िरकी खोजमें आया था! उसने देखा, कि यह आदमी जैसा लम्बा-तगड़ा है, वैसीही भड़कीली दाढ़ी-मूछें भी रखाये हुए है। यह उपनिवेशका रहनेवाला है, यह तो इसके चेहरेसेही मालूम हो जाता है। यह नयाही नया आया है, यह भी साफ़ मालूम होरहा है। गरमीमें दीर्घकालतक दौड़ते फिरनेसे चेहरेका रङ्ग उड़सा गया है। औपनिवेशिकोंकी तरह ढीली-ढाली पोशाक भी पहने हुए है। सिरपर बड़ीसी मुलायम टोपी रखे हुए है, जिससे आँखें भी छिपी जारही हैं।

स्मिथ समझ गया, कि यह आदमी ज़रूर अस्ट्रेलियाका रहनेवाला है; पर 'जे० राबर्ट्स' यह नाम सुनतेही इसलिये वह

भौंचकसा होरहा ; क्योंकि अभी थोड़ी देर पहले, वह इसी नामके जिस आदमीको विनीशिया-होटलमें अमेलिया और ग्रेविसके संग खाते-पीते और बातें करते देख आया है, उसमें और इसमें तो आसमान-ज़मीनका फ़र्क़ है! यदि इसी आदमीका नाम जे० राबर्ट्‌स हो, तो अमेलियाका वह शौक़ीन साथी, जो बिना दाढ़ी-मूँछोंका कम-उम्र जवान है, हरगिज़ जे० राबर्ट्‌स नहीं हो सकता। पर यह भी कुछ अनहोनी बात नहीं है, कि इसी नामके दो आदमी हों अथवा उन दोनोंके नाममें सिर्फ़ 'जान' और 'जेन' काही फ़र्क़ हो। इसी उधेड़बुनमें पड़ा वह वहाँ बड़ी देरतक खड़ा रहा।

एकही-दो मिनट बाद किरानीने कई पत्र लाकर जे० राबर्ट्‌सके हाथमें दे दिये। उसने उन पत्रोंको झटपट जेबके हवाले किया और स्मिथको धक्का देता हुआ चला गया। इसी अवसरमें धीरेसे अपना हाथ बढ़ाकर स्मिथने उसकी दायीं जेबसे एक पत्र झटसे निकाल लिया। उसने यह काम इस सफ़ाईके साथ किया, कि वह आदमी उसे पत्र निकालते न देख सका। गिरहकटोंकी विद्या भी स्मिथको पूरी तरह आती थी! शायद यह सब भी जासूसीके अङ्गोंमें है! अपना मतलब साधनेके लिये जासूसोंको चोरी भी करनी पड़ती है! हाँ, बड़े-बड़े जासूस खुद ऐसा न कर अपने चेलोंसे करवाते हैं। इसीसे तो भलेमानस जासूसोंके नामसे नाक-भौं सिकोड़ते हैं ; पर करें क्या? विपदमें पड़कर इन्हीं जासूसोंकी खुशामद भी करते हैं। भलेमानस लोग पुलिससे भी घृणा भी करते हैं और समय पड़नेपर इसकी

ख़ुशामद भी करते हैं, इसीलिये तो पुलिस भी भले आदमियोंको अविश्वासकी दृष्टिसे देखती है—यह कुछ अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता।

उस लम्बे-तगड़े भले आदमीके चले जानेपर स्मिथ खिड़की-के पास आकर उसी किरानीसे बोला,—"आज 'पेलवेनी' नामके जहाज़से जो मुसाफ़िर उतरे हैं, मुझे उनकी फ़िहरिस्त तो ज़रा दिखाइये—बड़ी दया होगी।"

एक मोटेसे पीस-बोर्डपर मुसाफ़िरोंकी सूची चिपकायी हुई थी। उसे स्मिथको देते हुए उसने कहा,—"लीजिये देख लीजिये। यदि इच्छा हो, तो आप इसे घर भी लेजा सकते हैं। यह बाँटनेहीके लिये है।"

इसपर किरानीको धन्यवाद दे, फ़िहरिस्त लिये हुए स्मिथ चल पड़ा। बाहर आकर उसने देखा, कि मैंने जिसकी चिट्ठी चुरायी थी, वह आदमी अबतक नज़रसे बाहर नहीं गया है।

उसका पीछा करते हुए स्मिथ सड़कपर आपहुँचा और उस आदमीके पीछे-पीछे जाने लगा; पर वह आदमी इस क़दर तेज़ीसे जारहा था, कि स्मिथ उसे छू न सका। उसने सोचा, कि यदि ऐसाही हाल रहा, तब तो यह आदमी कुछही देरमें मेरी नज़रोंसे बाहर हो जायेगा।"

यही सोचकर वह पासहीके एक टैक्सीके अड्डेमें आकर एक टैक्सीवालेसे बोला,—"भाई, वह जो लम्बा-धड़ङ्गा ताड़कासा जवान चला जा रहा है, मैं उसीके पीछे-पीछे जाना चाहता हूँ। तुम मुझे धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे लेचलो। डबल भाड़ा दूँगा।"

"अच्छा, आइये" कहकर टैक्सीवालेने स्मिथको टैक्सीपर बैठा लिया और उस लम्बे आदमीके पीछे-पीछे धीरे-धीरे जाने लगा।

अब स्मिथने उसे देखना छोड़ दिया, शौफ़रही उसे देखता हुआ टैक्सी ले जाने लगा। तबतक स्मिथ उस मुसाफ़िरोंकी फ़िहरिस्तको देखने लगा। यह फ़िहरिस्त अक्षरानुक्रमसे बनी हुई थी; इसीलिये उसे सब नाम नहीं पढ़ने पड़े। उसने "आर"से शुरू होनेवाले नामोंमें "राबर्ट्‌स जे०" नामका एकही आदमी देखा।

अब उस फ़िहरिस्तको अपनी गोदमें लिये हुए वह मन-ही-मन सोचने लगा,—"ऐलबेनी-जहाज़से एकही आदमी ऐसा उतरा है, जिसका नाम जे० राबर्ट्‌स है। मुमकिन है, कि यह 'लम्बा देव' उसका कोई कारपरदाज़ हो और मालिककी ओरसे चिट्ठी लेने आया हो। उसने किरानीसे यह तो कभी कहाही नहीं, कि मेरा नाम जे० राबर्ट्‌स है, मेरे नामकी कोई चिट्ठी हो, तो दो? उसने केवल इस नामकी चिट्ठी माँगी थी। फिर यह नाम उसीका ख़ास है, ऐसा अनुमान करनेका तो कोई कारण नहीं है? जो हो, अब जल्दीही इस नामका भेद खुला चाहता है। शीघ्रही यह मालूम हो जायेगा, कि कौन असली और कौन नक़ली है।"

इतनेमें टैक्सी उस आदमीके बहुत पास पहुँच गयी। तब स्मिथने शौफ़रको वहीं गाड़ी खड़ी कर देनेके लिये कहा और उसे डबल भाड़ा देकर नीचे उतर पड़ा

जल्दी-जल्दी उस आदमीके पास पहुँचकर स्मिथने उसकी पीठपर हाथ रखा। उसने चौंककर पीछे मुँह फेरकर देखा। स्मिथने झटपट उसे सलाम कर कहा,—"महाशय! बेअदबी माफ़ करेंगे, क्या आपकाही नाम मि० राबर्ट्स है?"

अचरज-भरी आँखोंसे स्मिथकी ओर देखते हुए उस लम्बे देवने कहा,—"अरे यार! क्या तुम ज्योतिषी हो? क्या राह-चलते विदेशी आदमीको देखकर कुछ माल ऐंठना चाहते हो? तुम यह जानकर क्या करोगे, कि मेरा नाम राबर्ट्स है या नहीं? तुम मेरी यह लम्बी मूँछ-दाढ़ी देखकर नहीं समझे, कि मैं छोटा छोकरा नहीं हूँ? तुमसे लौंडोंको मैंने बहुत चराया है। बड़ी हिम्मत करके मेरे पास आये हो? बहुत चीं-चपड़ करोगे तो वह थप्पड़ लगाऊँगा, कि—"यह कहते हुए उस लम्बे देवने स्मिथको थप्पड़ मारनेके लिये हाथ उठाया।

उसका थप्पड़ गालपर बैठाही चाहता था, कि उससे बचनेके लिये स्मिथ दो हाथ पीछे खिसक गया। इसके बाद बड़ी विनयके साथ बोला,—"महाशय! मैं ज्योतिषी नहीं हूँ, न आपका नाम पूछनेसे मेरा कोई बुरा मतलब है। मैं एक ज़रूरी कामसे जहाज़के आफ़िसमें गया हुआ था। वहीं मैंने आपको देखा था। आप वहाँसे कई चिट्ठियाँ लेकर चले आये। मैंने आते वक़ देखा, कि आप भूलसे एक चिट्ठी नीचे गिरा गये हैं। मैंने उसे उठा लिया। इसीसे पूछता हूँ, कि यदि आपहीका नाम मि० राबर्ट्स हो और आपही आज सवेरे 'ऐलबेनी' जहाज़से यहाँ उतरे हों, तो यह चिट्ठी निश्चय आपहीकी है, इसीसे

सुन्दरी-डाकू

“अरे! क्या तुमने मेरी एक चिट्ठी गिरी पायी है म

Ra m n Pres Calcu ta

मैं जल्दी-जल्दी वहाँसे चला आ रहा हूँ। मैं आपकी भलाई करूँ और आप मुझे थप्पड़ मारें—क्या यही भलमनसाहत है ?"

स्मिथकी बात सुन, उस आदमीने शर्मिन्दा होकर कहा,—"अरे! क्या तुमने मेरी एक चिट्ठी गिरी पायी है? माफ़ करना, भाई! मेरा नाम जान रावर्ट्स है, मैं आजही ऐलबेनी-जहाज़से लण्डन आया हूँ। इसीसे जहाज़के आफ़िसमें अपनी चिट्ठी पत्री लेने गया था। मैंने कई पत्र पाये और उन्हें जेबके हवाले कर दिया; पर मालूम होता है, कि असावधानीके कारण उनमेंसे एक नीचे गिर पड़ा। तुम उसे ले आये हो, यह अच्छी बात है। मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूँगा। मैंने तुम्हारे ऊपर सन्देह कर, बड़ा बेजा काम किया है, मुझे माफ़ करना। तुम बड़ेही भले लड़के हो।"

इसके बाद स्मिथके हाथसे वह पत्र लेकर उस अस्ट्रेलियनने उसे कुछ इनाम देना चाहा; पर उसके कुछ निकालकर देनेके पहलेही स्मिथ वहाँसे उड़नछू हो गया।

अस्ट्रेलियनने मन-ही-मन कहा,—"वाह! लड़का बिना कुछ लिये दिये चला गया। मालूम होता है, कि उसे खाने-पीनेका कोई दुःख नहीं है।"

स्मिथ मि० ब्लेककी जिस मोटरपर चढ़कर जहाज़के आफ़िसमें गया था, वह अबतक उसके इन्तज़ारमें कुछ दूर रास्तेके मोड़पर खड़ी थी। अबके स्मिथ उसीपर जा सवार हुआ और फिर उस भलेमानसका पीछा करने लगा। वह आदमी पैदलही 'हालबर्न' मुहल्लेको पारकर नदी-किनारे चल पड़ा।

नदीसे थोड़ीही दूरपर ट्रैफ़ेलगर-स्कोयरकी ओर एक बड़ा भारी होटल है। वह आदमी उसी होटलमें घुस पड़ा। यह देख, स्मिथने सोचा, कि वह शायद यहीं ठहरा हुआ है। उसने होटलमें जाकर उस आदमीका नाम पूछकर मालूम कर लिया, कि उसका नाम ठीक जान-राबर्ट्स है।

कई मिनटोंके अन्दरही होटलसे बाहर आ, स्मिथ बेकर-स्ट्रीटकी ओर मोटर दौड़ाये चल पड़ा। अपने परिश्रमका आशातीत फल पाकर वह आनन्दसे नाच उठा। किन्तु वह यह अनुमान न कर सका, कि यह सब सुनकर मि० ब्लेक अब किस रास्तेपर चलेंगे।

आठवाँ परिच्छेद

अपने बैठकख़ानेमें आगके पास बैठे हुए मि० ब्लेक, स्मिथके आनेकी राह देख रहे थे। उस दिन शामको निकलनेवाले पत्रोंमें डिलनकी हत्याके सम्बन्धमें जो सब संवाद प्रकाशित हुए थे, उन्हें उन्होंने पढ़ डाला था। उनमें उन्हें और कोई नयी बात नहीं मिली। सिर्फ़ यही नयी बात मिली, कि डिलनके वसीयतनामेका हाल अख़बारोंमें छपनेपर एक दैनिक पत्रके सम्पादकने पैट्रिककी स्त्रीके सम्बन्धमें कुछ बातें जाननेके लिये मौण्ट-रियलमें एक तार भेजा था; पर वहाँ उस स्त्रीका कोई पता न लगा!

यह संवाद पढ़कर मि० ब्लेकने सोचा, कि मेरा एजेण्ट फ़िलिप्स जो उससे दो-दो बार मिला और उसने उससे जिरह करनी शुरू की, इसीसे घबराकर वह कहीं और चल दी होगी। पर उसके यों एकाएक ग़ायब हो जानेका हाल पढ़कर उन्हें बड़ा विस्मय हुआ। अब कैसे क्या करना चाहिये, इसी विषयका वे विचार कर रहे थे। इतनेमें स्मिथ प्रफुल्ल-चित्तसे मनही-मन कुछ भुनभुनाता हुआ उनके सामने आ पहुँचा। वे उसके खिले हुए चेहरेकी ओर देखतेही समझ गये, कि वह काम पूरा-कर आया है।

मि० ब्लेकने कुरसीपर सीधे होकर बैठते हुए कहा,—"क्यों, स्मिथ! क्या ख़बर ले आये?"

अपनी टोपी एक कुरसीपर फेंक, अग्निकुण्डके पासही एक दूसरी कुरसीपर आसन जमाता हुआ स्मिथ बोला,—"बड़ी अच्छी ख़बर है, सरकार! उसे सुनकर आप चौंके बिना न रहेंगे। कौड़ी ढूँढने जाकर मैं एकदम रत्न ढूँढ लाया हूँ!"

यह कह उसने जहाज़के मुसाफ़िरोंकी वह सूची मि० ब्लेकके हाथमें देदी। मि० ब्लेकने उसे बिना देखेही पूछा,—"पहेली छोड़ो—साफ़-साफ़ कहो, कि कौड़ी ढूँढने जाकर कौनसा रत्न ढूँढ लाये?"

स्मिथने कहा,—"इस सूचीमें 'पेलबेनी' के मुसाफ़िरोंके नाम हैं। आज वह जहाज़ सवेरे नौ बजे डकमें आकर लगा था। आपका यह अनुमान ठीक है, कि जिस रातको डिलनका ख़ून हुआ, उसी रातको यह जहाज़ इंग्लैण्डसे बहुत दूर समुद्रमें तैर

रहा था। परन्तु मिस अमेलियाने जिस आदमीको 'मि० राबर्ट्स बतलाया है और जिसने आपसे यह कहा है, कि मैं आजही 'पेल-वेनी' जहाज़से उतरा हूँ, उसका नाम सचमुच राबर्ट्स है, कि नहीं, सो तो मैं नहीं जानता ; परन्तु जो राबर्ट्स इस जहाज़से उतरा है, वह एक औरही आदमी है और उसे मैं अपनी आँखों देख आया हूँ। अब इसमें सन्देह करनेकी जगह नहीं है।"

स्मिथकी बात सुन, मि० ब्लेकने जोशमें आकर कहा,—"यह क्या ? तुम यह कैसी बात कह रहे हो ? ज़रा साफ़-साफ़ समझाकर सब हाल ब्योरेवार कह सुनाओ।"

यह सुन, स्मिथ तुरत ही कुरसीपरसे उठ खड़ा हुआ और मि० ब्लेकके सामने वह फ़िहरिस्त फैला, 'राबर्ट्सके नामके पास उँगली ले जाकर कहने लगा,—"देखिये, इस जहाज़से सिवा इसके और कोई राबर्ट्स नामका आदमी नहीं उतरा। इसका नाम जे० राबर्ट्स है। मैंने यहाँसे जहाज़के आफ़िसमें जाकर देखा, कि वहाँ बड़ीभीड़ है। लाचार, मुझे कुछ देर ठहरना पड़ा। मुझे पूछनेपर मालूम हुआ, कि वे सब 'पेलवेनी' और 'सोमाली' नामक जहाज़ोंके मुसाफ़िर हैं। वे सब अपनी चिट्ठी-पत्री लेनेके लिये वहाँ इकट्ठे हुए थे। मैंने आफ़िसकी एक खिड़कीपर जाकर मुसाफ़िरोंकी फ़िहरिस्त माँगनी चाही इतनेमें मैंने देखा, कि एक लम्बी दाढ़ीवाला, ताड़कासा लम्बा मनुष्य खिड़कीके पास आकर पूछ रहा है, कि 'पेलवेनी' के मुसाफ़िर जे० राबर्ट्सके नामकी कोई चिट्ठी है या नहीं ? मैंने उसकी यह बात सुन, उसकी ओर बड़े ग़ौरसे देखा और देखतेही समझ

गया, कि वह ज़रूर अस्ट्रेलियाका रहनेवाला है। मेरी कितनी इच्छा हुई, कि उससे उसका परिचय पूछूँ, पर कैसे पूछूँ, यह समझमें न आया। तब मैंने एक तरकीब सोची। वह ज्योंही जेबमें अपनी चिट्ठियाँ रखकर चला, त्योंही मैंने धीरेसे हाथ बढ़ाकर उसकी एक चिट्ठी उसकी जेबसे निकाल ली। इसके बाद आफ़िसके किरानीसे यह फ़िहरिस्त ले, मैं उसके पीछे लगा। पर पीछे कहीं वह मुझे देख न ले, इसलिये अपनी मोटरमें न जाकर मैंने एक किरायेकी मोटर लेली और अपनी मोटरके शौफ़रको पीछे-पीछे आनेका इशारा किया।

"वह आदमी बड़ी तेज़ीसे चला जा रहा था, इसीसे मुझे टैक्सी लेनी पड़ी। ख़ैर, थोड़ी दूर जानेपर वह जब बहुत क़रीब रह गया, तब मैंने टैक्सीवालेको विदा कर दिया और आप उसके पास आकर उसकी पीठपर हाथ रखकर पूछा,—'क्या आपकाही नाम मि० जे० राबर्ट्स है?' यह सुन, वह घूमकर खड़ा हो गया और मुझे चोर या उठाईगिरा समझकर मारनेको तैयार हो गया। तब मैंने उससे कहा, कि मैंने आपको किसी बुरे मतलबसे नहीं ठहराया। मैं जहाज़के आफ़िसमें एक ज़रूरी कामसे गया हुआ था। वहीं मैंने आपको भी देखा था। आप वहाँ अपनी चिट्ठियाँ ले आनेके लिये गये हुए थे। आपने जल्दीमें यह एक चिट्ठी नीचे गिरा दी थी। उसेही देनेके लिये मैं आपके पास आया हूँ। यह सुनकर तो वह पानी-पानी हो गया और खुश होकर बोला,—"हाँ, मुझे ही जे० राबर्ट्स कहते हैं। मैं आज ही पेलमेनो जहाज़से उतरा हूँ मैं चिट्ठी लेनेके लिये जहा-

ज़के आफ़िसमें गया, था गलतीसे यह नीचे गिर गयी होगी। मुझे अपने व्यवहारके लिये बड़ा दुःख है। माफ़ करना, तुम बड़े अच्छे लड़के हो।"

"इसके बाद मैं वहाँसे टल गया और अपनी मोटरपर, जो कुछ दूरपर खड़ी थी, जा सवार हुआ और फिर उसका पीछा करने लगा। वह घूमता-घामता ट्रैफ़ेलगार-स्क्वेयरके 'ग्रैण्ड होटल'में जाकर घुस गया। पहले तो मैंने सोचा था, कि वह मि० राब-र्ट्सका कोई नौकर होगा, इसीलिये मैंने इस तरकीबसे उसके मुँहसे कहलवा लिया, कि उसका नाम जान-राबर्ट्स है। और वह आजही पेलबेनी-जहाज़से लण्डनके बन्दर-गाहमें उतरा है। कहीं वह झूठ न बोल गया हो, इसकी जाँच करनेके लिये मैंने होटलमें जाकर पूछा, तो मालूम हुआ, कि सचमुच उसका नाम 'जान सबर्ट्स' है। इसलिये इसमें कोई शक नहीं, कि मिस अमेलियाका वह साथी, जो अपनेको राबर्ट्स कहता है, हरगिज आज पेलबेनीसे नहीं उतरा। अमेलियाने ज़रूर झूठी बात कही है। एक तो परिचय झूठ निकल गया। दूसरे, उसके कानके नीचे वह दाग़ मौजूद ही है, अब इससे बढ़कर सन्देहका कारण और क्या हो सकता है?"

मि० ब्लेक, चुपचाप स्मिथकी बातें सुनते रहे। सुनते-सुनते उनकी आँखें चढ़ गयीं। स्मिथकी बातें पूरी हो जानेपर भी वे कुछ न बोले। कुरसीसे उठकर उन्होंने एक सिगरेट जलाया और उसे पीते हुए उस कमरेमें चहलक़दमी करने लगे।

एक तो, विर्जीनिया-होटलमें उस अपरिचित युवकके साथ

अमेलियाका हेलमेल देख करही मि० ब्लेकको बड़ी ईर्ष्या हुई थी और वे मन-ही मन कुढ़ गये थे। दूसरे, उसके कानके नीचे दाग़ देखकर वे हदसे ज़ियादा चौंक उठे थे। पर ईर्ष्या या विराग से प्रेरित होकर कोई काम करना, उनके स्वभावके विरुद्ध था, इसीलिये उनको अपने इस मानसिक भावपर बड़ा सङ्कोच हुआ, और उन्होंने निश्चय किया, कि चित्तकी इस चंचलताको रोककर मैं भली भाँति मामलेकी जाँच-पड़ताल करूँगा और जबतक पूरा प्रमाण न पाऊँगा, तबतक उस युवकपर सन्देह न करूँगा। जब तक यह साबित न हो जायेगा, कि अमेलियाने उस युवकका जो परिचय दिया था, वह ग़लत था, तबतक मैं अमेलियाकी बातको सचही समझूँगा।

अबके इस बातका पूरा-पूरा प्रमाण मिल गया, कि उस युवकका जो परिचय अमेलियाने दिया था, वह सोलहों आने मिथ्या था। पर वही डिलनका ख़ूनी है, इसका पक्का प्रमाण कहाँ है? हो सकता है, कि अमेलियाने किसी और ही कारणसे उस-का परिचय मुझसे छिपाया हो। मेरे साथ अमेलियाका यह छल लाख बुरा हो, तोभी डिलनके ख़ूनसे अमेलियाका कोई सरोकार है, अथवा वह जान-बूझकर डिलनके ख़ूनीको आश्रय दिये हुई और उस ख़ूनीको अपना प्रेमी जानकर अपनी आँखोंपर लिये फिरती है,—इस तरहके सन्देह अमेलियाके चरित्र और रुचिके सम्बन्धमें करना, उन्होंने अच्छा नहीं समझा।

पर अमेलियाके इस 'नये दोस्त'के खिलाफ़ स्मिथ जो सुबूत जुटा लाया है, वह भी तो हँसीमें उड़ाया नहीं जा सकता? यदि

मेरे हाथमें न होकर इस खूनका पता लगानेका भार किसी ऐसे जासूसके हाथमें होता, जो अमेलियाको बिलकुलही न जानता हो, तो वह ये सब प्रमाण पाकर क्या करता? ऐसी अवस्थामें वह जैसी कारवाई करता, वैसीही मुझे भी करनी चाहिये। मैं किसी कारण कर्त्तव्यसे पीछे पैर नहीं दे सकता। अगर इस मामलेमें पड़कर अमेलियाके विरुद्ध कुछ न करना पड़ता, तो बड़ीही अच्छी बात होती, किन्तु जो भार हाथमें ले चुका हूँ, उसे तो निरपेक्ष-भावसे पूरा करनाही होगा।

एकके बाद दूसरा, इस तरह करके उन्होंने कई एक सिगरेट पी डाले; पर उनकी चिन्ता न मिटी। वे सोचने लगे,—"अमेलियाके इस नये दोस्तको डिलनका खूनी माननाही पड़ता है। पर क्या अमेलिया उसके भयानक अपराधका हाल नहीं जानती? क्या ग्रेविसको भी नहीं मालूम है? यदि सचमुच वे न जानते हों, तो उन्हें जाकर बतला देना चाहिये। यही ठीक मित्रकासा कार्य होगा। इससे वे लोग उससे होशियार हो जायेंगे। इस मामलेमें उन दोनोंको भी घसीटना ठीक नहीं। पर यदि उसको मुजरिम जानकर भी वे अपने घरमें रहने देंगे, तो उनके अपमान और लाञ्छनाकी सीमा न रहेगी। मैं उनके अपमान और लाञ्छनाका कारण बनूँगा, इसे सोचकर भी दुःख होता है। नहीं—मैं अमेलियाको विपद्में न डालूँगा। पर मैं क्या करूँ? एक ओर मेरा कर्त्तव्य है और दूसरी ओर अमेलिया!

"पर यह युवक कौन है? अमेलियाने मुझसे उसका परि

चय क्यों छिपाया ? यदि अमेलिया उसके अपराधकी बात नहीं जानती होती, तो उसका असली परिचय क्यों नहीं देती ? कोई बुरा मतलब मनमें नहीं रहनेपर आदमी झूठ या धूणाका पल्ला नहीं पकड़ता। तो क्या वह सचमुच अमेलियाका चाहने-वाला है ? लड़कपनके साथीपर तो प्रेम होना स्वाभाविकही है। अपराधी होनेपर भी वह अपने बालपनके प्रेमीको कभी पुलिसके हाथमें न जाने देगी। अमेलिया जिसको आश्रय देती है, उसके लिये अपना सर्वस्व—प्राणतक दे सकती है। वह संसारकी साधारण स्त्रियोंसे कितनी ऊँची और नीची है, यह कौन कह सकता है ?"

मन-ही-मन इन्हीं सब बातोंको सोचते-विचारते हुए मि० ब्लेक एकाएक धप्से कुरसीपर बैठ रहे। स्मिथ दूर बैठा हुआ उनके बदले हुए तौरको देखने लगा। उसने बहुत दिनोंसे अपने मालिकको इस तरह सोचमें पड़ते नहीं देखा था। कुछ समझमें न आनेके कारण वह भौंचकसा होरहा ; पर कुछ पूछनेका साहस न कर सका।

अमेलियाने उस अनजान युवकको अपना प्रेमी बनाया है, इस बातको सोचकर मि० ब्लेकका हृदय डाह और जलनसे भर उठा। वे समझ गये, कि मुझेही कुढ़ाने और जलानेके लिये अमेलियाने उस होटलमें, मुझे दिखा-दिखाकर उस युवकके प्रति अपना इतना गहरा प्रेम जताया था ! अब जबतक मैं अमेलियासे यह न कह दूँगा, कि तुमने एक बड़ेही नीच और पापीसे प्रेम किया है, तबतक मेरे दिलकी जलन न मिटेगी

मि० ब्लेक और भी कुछ देरतक चुपचाप धूम्रपान करते रहे। वे मन-ही-मन कहने लगे,—"यह आदमी किसका आश्रित है, किसका प्रेमी है, इसकी आलोचना करनेसे मुझे क्या मतलब? मैं जो अच्छा समझूँगा, उसे करूँगा। मुझे यह मालूम होगया, कि अमेलियाके साथवाले इस युवकका नाम राबर्टस नहीं है। तो क्या हमलोग जिसकी तलाशमें हैं, वह आदमी यही है? अगर यह खूनी नहीं, तो इसका असली नाम अमेलियाने क्यों छिपाया? इस झूठ और फ़रेबका ज़रूरही कुछ-न-कुछ कारण होगा। अमेलिया उसे प्यार करती है, यह तो मुझे उसकी होटलवाली हरकतोंसेही मालूम होगया। तो क्या भगवान्‌की यही इच्छा है, कि उसका प्रेमपात्र मेरेही हाथों गिरफ्तार हो? ओह, मैं क्यों विनीशिया-होटलमें गया? न जाता, तो यह दोतरफ़ी आग पैदा नहीं होती। मेरे द्वारा अमेलियाके प्रेमीको कष्ट पहुँचनेपर वह कभी मुझे क्षमा न करेगी।

"भलेही न क्षमा करे, किन्तु मैंने अपनीही इच्छासे जिनका काम अपने हाथमें लिया है, उनका काम बिगाड़नेका मुझे क्या अधिकार है? वे तो यही समझे बैठे हैं, कि मैं जल्दीही खूनीको ढूँढ़ निकालूँगा और उसे पुलिसके हवाले कर दूँगा। जो अपने ऊपर विश्वास किये बैठा हो, उसके साथ विश्वास-घात करना मुझसे नहीं बन पड़ेगा। हो सकता है, कि यह आदमी अपराधी न हो,—न हो, सोही अच्छा। क्या अमेलियासे मेरा कोई नाता है? वह चाहे जिसे सुखी हो "परन्तु अब

मेरा उसपर सन्देह होगया है, तब उस सन्देहको दूर करनेका उपाय करना मेरे लिये निहायत ज़रूरी है।

"मैंने अपने ऊपर जो ज़िम्मेदारी ली है, उससे अब भी पीछा छुड़ा ले सकता हूँ, परन्तु अभीतक जितनी बातें मैंने मालूम की हैं, उन सबको छिपा रखना भी तो विश्वास-घातही कहलायेगा! यदि कल या आज सवेरेही मैं इस मामलेसे हाथ खींच लेता, तो मैं अपने विवेकके सामने दोषी न होता ; पर अब तो उसका अवसर ही जाता रहा। मेरे सामने कठोर परीक्षा उपस्थित है!"

मि० ब्लेकके सामनेही डेस्कपर रखी हुई टाइम-पीस घड़ीने टनटन करके रातके आठ बजा दिये।

घड़ीकी टनटनाहटसे उनकी चिन्ताका तार टूट सा गया। उन्होंने सिर ऊपर उठाकर स्मिथकी ओर देखते हुए कहा,—"मिस अमेलियाके यहाँ टेलिफ़ोन करके कहो, कि वे टेलिफ़ोनके पास आजायें, मैं उनसे कुछ बातें किया चाहता हूँ।"

तदनुसार स्मिथ टेलिफ़ोनवाले कमरेमें चला गया और अमेलियाके मकानका टेलिफ़ोन-नम्बर देखकर कल घुमाया। थोड़ीही देरमें टेलिफ़ोनकी घण्टी बज उठी। स्मिथने टेलिफ़ोनका चोंगा कानमें लगाकर सुनना आरम्भ किया। आवाज़से उसे मालूम हुआ, कि अमेलियाकी दासी 'अन्ना,' 'हैलो' कहकर उसे बुला रही है।"

स्मिथने कहा,—"मिस-अमेलिया घरपर हैं?"

अन्नाने उत्तर दिया, "हाँ, हैं।"

स्मिथने कहा,—"मिहरबानी करके उनसे कहो, कि एक बहुत जुरूरी बात कहनेके लिये मि० ब्लेक उन्हें टेलिफ़ोनके पास बुला रहे हैं।"

"अच्छा" कहकर अन्ना चली गयी। इधर स्मिथने ब्लेकके पास आकर कहा,—"चलिये, वे शायद टेलिफ़ोनके पास आगयी होंगी।"

मि० ब्लेक तुरतही टेलिफ़ोनके पास चले आये। इतनेमें घण्टी बड़े ज़ोरसे बज उठी। चोंगेको कानके पास लेजाकर मि० ब्लेक उसकी बातें सुनने लगे।

अमेलियाने कहा,—"मुझे कौन बुला रहा है?"

मि० ब्लेकने कहा,—"मैंही हूँ, मिस साहबा! मेरा नाम राबर्ट ब्लेक है! मैंनेही आपको याद किया है।"

अमेलिया खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसकी हँसी उन्हें साफ़ सुनाई दी। अमेलियाने हँसते-ही-हँसते पूछा,—"कहिये, क्या हुक्म है? आज तो आप-आप-आपका बड़ा ख़र्च कर रहे हैं! मुझे 'मिस साहबा' कहकर सम्बोधन कर रहे हैं? आज तो आपने मेरी इज़्ज़त बहुत बढ़ादी। तीसरे पहरतक तो मैं 'अमेलिया' और 'तुम' थी और अभी इतनी बदल गयी? आप होशमें तो हैं?"

मि० ब्लेकने गम्भीर स्वरसे कहा,—"देखो, अमेलिया! इसका कुछ और भाव न समझ लेना। अगर मेरे वैसा कहनेसे तुम्हें दुःख हुआ हो, तो मैं उसके लिये दुःख-प्रकाश करता हूँ। मैं फिर ऐसा कभी न करूँगा। मैं यह जानना चाहता हूँ, कि अभी तुम घरपर रहोगी या नहीं?"

अमेलियाने कहा,—"मैं बाहर जाना चाहती हूँ ; पर यदि आप आयें, तो आपके साथही चलूँगी।"

मि० ब्लेकने कहा,—"मुझे दुःख है, कि मैं कहीं बाहर न जा सकूँगा। मुझे तुमसे मिलकर सिर्फ़ दो-दो बातें करनी हैं।"

थोड़ी देर चुप रहकर अमेलियाने कहा,—"दुःख किस बातका है ? आप कोई नाराज़ीकी बात कहेंगे या ज़रूरतकी ?"

मि० ब्लेकने कहा,—"बात बहुतही ज़रूरी और साथही पोशीदः है। टेलिफ़ोनसे नहीं कह सकता। तुमसे मिलना बहुतही ज़रूरी है।"

अमेलियाने कहा,—"अच्छा, तो आप झटपट चलेही आइये—मैं आपकी राह देखती हुई बैठी हूँ।"

मि० ब्लेकने कहा,—"आठ बजे हैं—तुम साढ़े आठतक ठहर सकती हो न ?"

अमेलियाने कहा,—"ज़रा ठहर जाइये। मैं सोचकर आपको उत्तर देती हूँ।"

क्षणही-भर बाद अमेलियाने कहा,—"अभी मेरे हाथमें कई ज़रूरी काम हैं। आप नौ बजे आइये।"

मि० ब्लेकने कहा,—"बहुत ख़ूब। मैं ठीक नौ बजे तुम्हारे घरपर पहुँचा रहूँगा।"

टेलिफ़ोनका चोंगा रखकर वे अपने बैठकख़ानेमें चले आये और स्मिथसे बोले,—"मिसेस वार्डलसे जाकर कहो, कि मेरा खाना जल्दीही तैयार होना चाहिये। मुझे नौ बजेके पहलेही एक जगह जाना है। इसके पहले मुझे कई ज़रूरी चिट्ठियाँ भी लिखनी हैं। समय बहुतही कम है।"

उधर स्मिथ, मिसेस वार्डलसे मि० ब्लेकका सन्देसा कहने चला और इधर मि० ब्लेक और एक सिगरेट जलाकर फिर चञ्चल-चित्तसे उसी कमरेमें टहलने लगे।

मि० ब्लेकने सोचा,—"क्या अमेलिया यह बात समझ गयी है, कि मैं उससे उसी आदमीके सम्बन्धमें बातें करने जारहा हूं, जिसको उसने मि० राबर्ट्स बतलाया था? मेरी बातोंसे तो इस तरहका भाव नहीं झलकता था। तोभी वह चालाक औरत है—बहुत दूरकी सोचती है, इसलिये सम्भव है, कि उसे इस बातका सन्देह हो।"

इतनेमें स्मिथ लौटकर उनके पास चला आया, इसलिये उनकी चिन्ताका स्रोत मुड़ गया। स्मिथने काग़ज़, क़लम और दावात आदि चिट्ठी लिखनेकी सामग्री मेज़पर रखदी। भोजन बननेमें थोड़ीसी देर है, यह सुनकर वे स्मिथसे पत्र लिखवाने लगे।

मिसेस वार्डल जब खानेकी चीज़ें लेआयीं, तब वे पत्र लिखवाना बन्दकर खाने बैठे। दोनोंने चुपचाप बैठकर खाना खाया। और दिन खाते समय तरह-तरहकी गप्पें उड़तीं, हँसी-दिल्लगी होती, पर आज दोनों एकदम चुप हैं!

आहारके बाद वे फिर अपने बैठकख़ानेमें चले आये और उस पत्रको पूरा कराने लगे, जिसे अधूरा छोड़कर वे खाना खाने चले गये थे।

जब नौ बजनेमें सिर्फ़ २० मिनट बाक़ी रहे, तब मि० ब्लेकने स्मिथसे कहा,—"तुम पोशाक बदल लो। मेरे साथ तुम्हें भी चलना पड़ेगा।"

स्मिथने सोचा था, कि मालिक अकेलेही जायेंगे, पर उनकी बात सुन, वह खुश होता हुआ, पोशाक बदलने चला।

रातको ठीक पौने नौ बजे दोनों घरसे बाहर निकले और सड़कपर आतेही एक टैक्सी ले, 'क्वीन-ऐन्स-गेटमें' अमेलियाके मकानकी ओर चले।

उस मकानके सामने पहुँचकर दोनों आदमी गाड़ीसे नीचे उतर पड़े। टैक्सीवालेको वहीं खड़ा रहनेके लिये कहकर मि० ब्लेक स्मिथको साथ लिये हुए अमेलियाके मकानके अन्दर घुसे। ठीक इसी समय अमेलियाके बैठकखानेकी घड़ीने नौ बजा दिये।

अमेलियाका यह मकान उनका अच्छी तरह देखा-भाला था। यहाँके नौकर-चाकर भी उन्हें भली भाँति पहचानते थे। यहाँ उनके आनेकी रोक नहीं थी। इसीलिये उन्हें अमेलियाके पास अपने आनेकी इत्तिला नहीं भिजवानी पड़ी। वे अपनेही घरकी तरह निस्सङ्कोच भीतर चले गये और अमेलियाके बैठकखानेके बन्द दरवाज़ेको थपथपाने लगे।

दरवाज़ा भीतरसे बन्द था, इसलिये उन्हें दो मिनटतक खड़ा रहना पड़ा। किसीकी आहट न पाकर वे ज़रा घबराये। इसी समय एक सजा-धजा दरबान दरवाज़ा खोलकर उनके सामने आया। उन्हें वह आदमी बिलकुलही नया मालूम पड़ा।

दरवानने उन्हें घरके अन्दर न जाने देकर, उन्हें सिरसे पाँव तक देखनेके बाद कहा,—"रातको नौ बजे जो सज्जन यहाँ आनेवाले थे, वह क्या आपही हैं?"

मि० ब्लेक दरवानके इस सवालसे आश्चर्य और क्रोधमें आकर बोले,—"हाँ, मेरेही यहाँ आनेकी बात थी।"

दरवानने कहा,—"आपका नाम क्या है?"

मि० ब्लेक उसकी ढिठाईपर और भी झुँझलाकर बोले,—"राबर्ट ब्लेक।"

दरवानने, उनकी झुँझलाहट देख, नरमीके साथ कहा,—"माफ़ करेंगे। मैं आपको नहीं जानता था, इसी लिये मैंने आपका नाम पूछा था। आपके नामकी एक चिट्ठी है।"

यह कह उस दरवानने मि० ब्लेकके हाथमें एक बड़ासा मोटे कागज़का लिफ़ाफ़ा दे दिया। पत्र अमेलियाकी प्रिय सुगन्धसे बसा हुआ था। अपने ख़ास-ख़ास मित्रोंको वह जैसे लिफ़ाफ़ेमें चिट्ठी भेजा करती थी, यह लिफ़ाफ़ा वैसाही था। उसके ऊपर मोटे-मोटे अक्षरोंमें मि० ब्लेकका नाम लिखा था। अक्षर अमेलियाकेही थे। ये सुन्दर अक्षर उनके ख़ूब अच्छी तरहसे पहचाने हुए थे!

मामला क्या है, यह समझमें न आनेके कारण वे कौतूहल-भरे-हृदयसे तत्क्षण उस पत्रको खोलकर पढ़ने लगे। चिट्ठी खोलतेही उनकी नाकमें सुमधुर गन्ध पहुँची।

यह पत्र अमेलियाकाही लिखा हुआ था। पत्र बहुत छोटा और व्यर्थके आडम्बरोंसे शून्य था। मि० ब्लेक दम साधे हुए वह पत्र पढ़ने लगे। उसमें लिखा था,—

"अच्छे-भले, साफ़-सुथरे, नीले आकाशमें एकाएक मेघ उठते देखकरही मैं समझ गयी थी, कि बिजली गिराही चाहती

है। इसीसे मैं टल जाती हूँ। मैंने आपके साथ थोड़ी-बहुत धोखा-धड़ी की, इसका मुझे बड़ा भारी खेद है। केवल दुःखही नहीं, लज्जा भी मालूम हो रही है। परन्तु वह चाहे आत्मीय हो या बन्धु—जिसे मैंने शरण दी है, उसीको मुझसे अलग करनेके लिये आप मेरे पास आनेवाले हैं, यह मैं समझ गयी थी। इसीसे मैं चली जा रही हूँ। मैं उसे किसी प्रकार विपद्के मुँहमें न पड़ने दूँगी। मैं उसे बचानेके लिये सब तरहके दुःख, कष्ट अपमान,—यहाँतक, कि आपका असन्तोष भी सिर झुकाकर सह लूँगी। अतीत-कालके किसी मधुर दिवसकी यादकर यदि आजकी मेरी इस हरकतसे आपको दुःख हो, तो आप उन सब पुरानी बातोंको भूलकर चित्तको शान्ति दीजियेगा। बस, बिदाई!

आपकी,

अमेलिया।"

काँपते हाथसे उस चिट्ठीको मोड़ते हुए मि० ब्लेकने रुकते गलेसे कहा,—"स्मिथ? चलो, घर चलें।"

उस आलीशान मकानसे बाहर आ, मि० ब्लेक टैक्सीपर आ सवार हुए और बिना किसी ओर देखे चुपचाप सिर झुकाये हुए न जाने क्या-क्या सोचने लगे। उनका चित्त उस समय ठिकाने नहीं था!
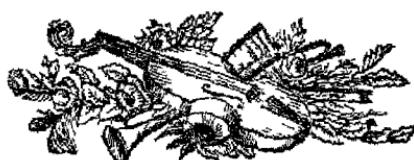
नौवाँ परिच्छेद।

इस समय दो पहर बीते होंगे—स्मिथ गाढ़ी नींदमें पड़ा हुआ है। संसारकी सबसे बड़ी राजधानीकी चहलपहल एकबारही बन्दसी है। सारे दिनकी कड़ी मिहनतके बाद रोशनीसे जगमगाती हुई राजधानी मानों सोरही है। केवल कुछ आमोद-विलासी निशाचरोंकीही आँखोंमें नींद नहीं है—वेही कुछ बेडौलसी सूरत-बनाये, इधर-उधर भटकते नज़र आते हैं। रह-रहकर एकाएक भाड़ेकी मोटर पों-पों करके रातके सन्नाटेको तोड़ देती है। मि० ब्लेकके बैठकखानेका अग्नि-कुण्ड जल रहा है और इसके पास मि० ब्लेकका प्यारा "ब्लैकहाउण्ड" "टाइगर" एक कम्बलपर पड़ा हुआ नींदका मज़ा ले रहा है; पर उसके कान खड़े हैं।

इतनी रात बीत जानेपर भी मि० ब्लेककी आँखोंमें नींद नहीं है। वे गरम कपड़े पहने, डेस्कके पास बैठे हुए, कुछ लिखते और चुरुट पीते जाते हैं। रह-रहकर लिखना बन्द कर कुछ सोचने लग जाते हैं। चिन्तासे उनकी भौंहोंमें बल पड़ जाती हैं! इतनी रात बीते वे क्या लिख रहे हैं?

मि० ब्लेक, अमेलियासे मिलने जा, निराश हो, घर चले आते थे, यह बात पाठक भूले न होंगे। वहाँसे आकर वे-नौ बजेसे अबतक वहीं बैठे हुए हैं। स्मिथ, उनके पास बैठा हुआ, उनके

बतलाये अनुसार चिट्ठी लिख रहा था। दस बजनेपर वह छुट्टी लेकर सोने चला गया।

घर लौटनेपर मि० ब्लेकने अमेलियाके बारेमें एक बात भी स्मिथसे नहीं कही। अमेलियाने मि० ब्लेकको अपने घर बुलाकर उनसे क्यों नहीं भेंट की, उसने पत्रमें उन्हें क्या लिखा था, यह सब जाननेके लिये उसका दिल तड़प रहा था ; पर वह अपने मालिककी चढ़ी हुई भौंहें देख, उनसे कुछ पूछनेका साहस न कर सका। हाँ, इतना वह अवश्य समझ गया, कि मामला बड़ा विकट है!

स्मिथ जब सोने चला गया, तब मि० ब्लेक डिलनके हत्याकाण्डके सम्बन्धमें लिखे हुए अपने नोटोंको पढ़ने और उन्हें पढ़कर जो सब सिद्धान्त निकल सकते थे, उनको काग़ज़पर लिखने लगे। वे इस समय भी यही काम कर रहे थे। मि० ब्लेकके उन नोटोंको पाठक अवश्य देखना चाहते होंगे, यह सोचकर हम नीचे उनकी नक़ल दिये देते हैं:—

"डिलनके ख़ूनीकी खोज—कर्नेलियस-डिलनके नौकरका लाइब्रेरीमें जाकर अग्नि-कुण्डके पास डिलनको लाश देखना। ख़ून तो ज़रूरही हुआ ; पर क्या किसीने उसे जान-बूझकर मारा है या वह आपसे आप मर गया है? लाशकी जगह और उसके ललाटपरके चिह्नकी परीक्षा करनेसे तो यही मालूम होता है, कि जो आदमी उससे मिलने आया, उसने जान-बूझकर डिलनको नहीं मारा ; बल्कि वह एकाएक उस अग्नि-कुण्डपर गिर पड़नेके कारण मर गया है। पर मरनेके पहले दोनोंमें ख़ूब धींगा-मुश्ती

हुई थी; यह बात साफ़ मालूम पड़ जाती है। डिलनसे मिलनेके लिये एक अजनबीका आना ताज्जुब पैदा करता है। उसके आकार-प्रकारका जो विवरण नौकरने बतलाया है, उसमें एकही बात ऐसी है, जिससे खूनीकी शिनाख्त आसानीसे हो सकती है। वह यह, कि उसके बायें कानके नीचे गहरे घावका दाग़ है।

"डिलनका वसीयतनामा पढ़ना—डिलनने मौण्ट-रियलकी मिसेज़ पैट्रिक नामकी एक विधवा स्त्रीको अपनी सब स्थावर-अस्थावर सम्पत्ति दान कर दी है। फ़िलिप्सने मिसेज़ पैट्रिकको ढूँढ़ निकाला और यह भी मालूम कर लिया, कि डिलनकी मृत्युके दूसरेही दिन उसके पास लण्डनसे २०० पौण्ड पहुँचे। भेजनेवालेका नाम कार्टर है। इस रक़मका डिलनकी मृत्युसे कुछ सम्बन्ध है या नहीं? डिलनपर वह बुढ़िया जी-जानसे कुढ़ी हुई है। तोभी डिलनने इस वेसरोकारी(?)औरतको अपना सर्वस्व दान कर दिया! क्या लण्डनसे इन २०० पौण्डोंके आनेकी वह राह देख रही थी या यह सहायता एकदम आकस्मिक और अप्रत्याशित थी?

"विनीशिया-होटलमें अमेलियाके साथ एक अनजान नौजवानका आना उसके बायें कानके नीचे ज़ख्मका दाग़ देखना। अमेलियाका यह कहकर उसका परिचय देना, कि उसका नाम मि० जे० राबर्ट्स है। यह ठीक तौरसे साबित हो गया, कि वह पेलबेनी-जहाज़का मुसाफ़िर जे० राबर्ट्स नहीं है। उसके बायें कानके नीचे ठीक वैसाही दाग़ है, जैसा डिलनके नौकरने

डिलनके खूनीका बतलाया था। डिलनके खूनीकी बोलचाल औपनिवेशकोंकी तरह थी, ऐसा उस नौकरने बतलाया था। अमेलियाके उस दोस्तकी बोलचाल भी ठीक वैसीही थी।

"अमेलियाके मित्रने अपना परिचय छिपाया है, यह ठीक है। लण्डनमें इस तरहके निशानवाले क्या एकसे अधिक आदमी हैं? क्या उन सबको अपना परिचय छिपानेकी आवश्यकता है? क्या किसी अपराधको छिपाने और पुलिसकी आँखोंमें धूल झोंकनेकेही लिये यह उपाय नहीं किया गया है? यदि इसी तरहके ज़ख्मके दाग़वाले दो आदमी मिल जायें, तो अलबत्ता बड़े आश्चर्यकी बात होगी।

"मिस अमेलियाके भी ढङ्ग निराले हैं! मालूम होता है, कि आज शामको मैंने जो उससे टेलिफ़ोन द्वारा मिलनेकी बात कही, उसीसे वह सन्देहमें पड़ गयी और न मालूम कहाँ चल दी। इसके बाद उसका पत्र मिला। उससे मालूम हुआ, कि वह यह सन्देह कर रही है, कि मैं बहुत कुछ जान गया हूँ। हालाँकि, मैं बहुत नहीं जानता। इसीलिये वह अपने मामा और उस दाग़वाले नवयुवकको लेकर भाग गयी है।

"लेकिन भागकर कहाँ गयी? अबके वह कौनसे देशकी यात्रा करेगी? जिस आदमीके द्वारा डिलनकी मृत्यु हुई, वह किस लिये उससे मिलने गया था? उनमें झगड़ा किस लिये हुआ? क्या इसके साथ मिसेज़ पैट्रिकके स्वार्थका भी कोई सम्बन्ध है? डिलनके वसीयतनामेका हाल क्या उसे पहले नहीं मालूम था? खूनी, भागनेके पहले, डिलनके डेस्कसे अमरिका

और हीरे ले गया है, इसमें तो कोई सन्देह नहीं। तो क्या मौण्ट-रियलमें मिसेज़ पैट्रिकके पास जो २०० पौण्ड भेजे गये थे, वे इसी लूटके मालमेंसे थे? यदि यह बात ठीक हो, तो ज़रूर उस युवकके साथ मिसेज़ पैट्रिकका कोई-न-कोई सम्बन्ध होगा। पर वह सम्बन्ध नातेदारीका है या दोस्तीका?

"उस युवकके साथ अमेलियाका क्या सम्बन्ध है? पैट्रिककी विधवा पत्नी समाजकी जिस श्रेणीकी स्त्री है, उस श्रेणीके मनुष्योंके साथ अमेलियाका कोई सम्बन्ध होनेकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। पर एक नाम-धाम छिपाये हुए नवयुवकके साथ अमेलियाका हेल-मेल होना कोई नयी या अद्भुत बात नहीं है। पर वह हेल-मेल कैसा है? क्या प्रेम है? अथवा पहलेकी जान-पहचान या नातेदारी है? उसे अपराधी जानकर भी वह क्यों अपने जीवनको विपदमें डालती और उसे हर सूरतसे बचाना चाहती है? क्या यह उसका निःस्वार्थ परोपकार है?

"और भी एक बात है। फ़िलिप्सने तार भेजा है, कि पैट्रिक-परिवार, अपना घर-द्वार छोड़, कहीं भाग गया है। इस तरह भाग जानेका क्या कारण है? उसे डिलनके वसीयतनामेकी ख़बर मिल चुकी है, इसलिये मुमकिन है, कि वह उसकी सम्पत्तिपर दख़ल-क़ब्ज़ा जमानेके लिये लण्डन आ रही हो। तो क्या कार्टरने ये २०० पौण्ड उसे राह-ख़र्चकेही लिये भेजे थे? यदि यह अनुमान ठीक हो, तो ज़रूरही उसे डिलनके वसी

विधवा पत्नी जैसी दरिद्र है, उससे तो यही ठीक मालूम होता है, कि, ये २०० पौण्ड उसके मित्रने उसका अर्थ-कष्ट दूर करनेके लियेही भेजे थे।

"लेकिन सब बातोंका विचार करनेसे, तो यही मालूम होता है, कि इस घटनाके साथ विधवा पैट्रिक-पत्नीका ज़रूर कुछ लगाव है। मैंने अमेलियाके जिस बन्धुके कानके नीचे ज़ख्मका दाग़ देखा है, वही यदि डिलनके ख़ूनके लिये ज़िम्मेदार हो, यदि उसीने ये २०० पौण्ड विधवा पैट्रिक-पत्नीके पास भेजे हों और डिलनकी मृत्युसे विधवा पैट्रिक-पत्नीके सिवा इस युवकका भी कुछ स्वार्थ हो, तो यह युवक ज़रूरही यहाँसे मौण्ट-रियलकी यात्रा करेगा। अवश्यही अमेलिया और ग्रे विस उसे लिये हुए लण्डनसे चल दिये हैं। तीनोंही मौण्ट-रियल जायेंगे, इसमें सन्देह नहीं। मेरा एजेण्ट, फ़िलिप्स, उसके घर जाकर लौट आया—वह उस घरमें न मिली, वहाँसे भाग गयी है; पर उसके शहर छोड़ देनेका तो कोई प्रमाण नहीं मिला। यदि अमेलियाका जहाज़ 'फ्लोर-डि-लीज़' अबतक बन्दरसे रवाना न हुआ हो, तो ज़रूरही यह समझना होगा, कि वे उसी जहाज़पर सवार हो शीघ्रही लण्डनसे हवा हो जायेंगे।"

"इसलिये मैं कल सवेरेही जाकर उस जहाजकी जोह-टोह लूँगा। अगर वह बन्दरगाहमेंही मिला, तो उसपर हमलोग निगाह रखेंगे और यदि रवाना होगया होगा, तो मैं शीघ्रही स्मिथको साथ लेकर उनकी खोजमें मौण्ट रियलकी यात्रा-

करूँगा। किन्तु इसके पहले फ़िलिप्सको तार दे देना चाहिये, कि हमलोग यहांसे रवाना होरहे हैं—हमारे आनेके पहलेही तुम पैट्रिक-पत्नीका नया मकान खोज निकालो।"

मि० ब्लेक, अपने लिखे नोटोंके आधारपर उपर्युक्त सिद्धान्त कर, धीरे-धीरे कुरसीसे उठे और एक गिलास सोडा-ह्विस्की पीकर सोने चले गये।

* * * * *

दूसरे दिन सवेरेही नाश्ता-पानी करके कुरसीपर बैठे हुए वे स्मिथको अपने इरादेकी बात बतला रहे थे। इसी समय मिसेज़ वार्डेल आजकी डाककी चिट्ठियाँ लिये आ पहुँची। सबके ऊपरही उन्हें एक नीले रङ्गका लिफ़ाफ़ा मिला, जो 'केबुलग्राम'—का लिफ़ाफ़ा था।"

मिसेज़ वार्डेलने कहा,—"ज्योंही डाकिया इन चिट्ठियोंको देकर चला जारहा था, त्योंही तारके पियनने आकर यह नीला लिफ़ाफ़ा मेरे हाथमें दिया—कृपाकर इसपर दस्तख़त करके इसकी रसीद दे दीजिये।"

मिसेस वार्डेलके रसीद लेकर चले जानेके बाद मि० ब्लेकने चिट्ठियोंको स्मिथको देखनेके लिये देदिया और आप उस तारको पढ़ने लगे। उसमें लिखा था,—

"ब्लेक—लण्डन।

"पैट्रिककी विधवा पत्नीका नया मकान मिल गया। मैं इस-पर नज़र रखे हुए हूँ। मुझे पता लगानेपर मालूम हुआ है, कि गत २४ घण्टोंके भीतर उसके पास दो तार आये हैं मैंने अभी

तक पुलिसको कोई ख़बर नहीं दी है। अब क्या करना होगा, यह बतलाइयेगा।

फ़िलिप्स।"

इस तारको पढ़कर मि० ब्लेकने स्मिथके हाथमें दे दिया और बोले,—"इस मामलेमें तो फ़िलिप्सने बड़ी बुद्धिमानी और मुस्तैदी दिखलायी। अगले महीनेसे उसकी तनख़्वाह बढ़ा देनी चाहिये। यह बात तुम अपनी नोट-बुकमें लिख रखो। जाओ, जाकर यह बात दर्याफ़्त कर आओ, कि 'फ्लोर-डि-लीज़' नामका जहाज़ कल बन्दरमें था या नहीं? अगर रवानः होचुका है, तो कब हुआ है, यह भी पूछते आना।"

कुछही मिनटोंमें मि० ब्लेककी मोटर उनके दरवाजेपर आ लगी। स्मिथ झटपट कपड़े पहनकर उसपर जा सवार हुआ और पलके मारते अदृश्य होगया। मि० ब्लेक अपने कमरेमें बैठे हुए चुपचाप आजकी चिट्ठियाँ पढ़ने लगे!

लगभग एक घण्टे बाद स्मिथ लौट आया। उसने मि० ब्लेकके सामने आकर कहा,—"ख़बर ले आया, सरकार!"

मि० ब्लेक,—"बड़ी जल्दी लौटे। कहो, क्या ख़बर लाये?"

स्मिथ,—"फ्लोर-डि-लीज़ 'प्लाइमाउथ-बन्दरसे' न्यू-यार्कको रवानः होगया है।"

मि० ब्लेक,—"मैंने विदेश जानेवाले जहाज़ोंकी सूचीमें देखा है, कि 'मेरिटोनिया' नामक जहाज़ आजही तीसरे पहर लिवरपुलसे न्यू-यार्क जायेगा। हमलोग भी उसी जहाज़पर चढ़कर न्यू-यार्क चलें, तो ठीक हो। तुम जल्दी-जल्दी स

चीजें बाँध-बूँध लो। इतनेही समयके अन्दर सब तैयारी कर लेनी होगी। लिवरपुल पहुँचनेमें देर होनेसे जहाज़ नहीं मिलेगा। विदेशसे हमलोगोंके आनेमें बड़ी देर होगी, यही सोचकर चीज़-वस्तु लेना, तबतक मैं एक जगहसे लौट आता हूँ। दो टिकटों-का भी प्रबन्ध करना होगा। अभी लिवरपुलमें तार नहीं करनेसे वहाँ पहुँचकर टिकट पाना, बड़ा कठिन हो जायेगा।"

इधर स्मिथ चीज-वस्तु समेटने लगा, उधर मि० ब्लेक, मोटरपर सवार हो बाहर चले गये।

यथासमय मि० ब्लेक, स्मिथको साथ लिये हुए, 'यूस्टन' नामक रेलवे-स्टेशनपर पहुँचकर लिवरपुलकी गाड़ीमें सवार हुए ट्रेन जब लिवरपुल-डकके पास पहुँची, तब 'मेरिटोनिया' जहाज़के खुलनेमें केवल २० मिनटकी देर थी। चारों ओर भयानक भीड़ थी, मुसाफ़िर घबराये हुए जहाज़की ओर लपके चले आरहे थे। मि० ब्लेक और स्मिथ भी उन्हींके दलमें जा मिले। मि० ब्लेकको पूछनेपर मालूम हुआ, कि उनका तार उनके लिवरपुलके एजेण्टको चार घण्टे पहले मिला था, इसी-लिये उसने उनके लिये एक बड़ासा 'केबिन' भाड़ेपर लेलिया है। यह संवाद पाकर वे निश्चिन्त होगये।

उनके जहाज़पर सवार होनेके कुछ ही देर बाद जहाज़ खुल गया और बड़ी तेज़ीसे समुद्रकी चौड़ी छातीपर तैरने लगा। पर मि० ब्लेकको ऐसा मालूम होता था, मानों जहाज़ बहुत धीरे-धीरे चल रहा है।

दिन-रात चलकर 'मेरिटोनिया' जहाज नियमित समयपर

थोड़ी देरके लिये 'कीन्सटाउन' नामक बन्दरगाहपर ठहर गया। यहाँसे डाक लेकर वह फिर चलने लगा। देखते-देखते 'कीन्सटाउन' का बन्दरगाह निगाहोंके बाहर होगया। सामने केवल अटलाण्टिक-महासागरकी दिगन्ततक फैली हुई अनन्त नीलाम्बु-राशिही नज़र आती थी। कहीं कूल-किनारा नहीं दिखाई देता था। इस विशाल वारिधि-वक्षको चीरता हुआ जहाज़ पाँच दिनतक लगातार चलता रहा। छठें दिन उसने 'सैण्डिहुक' नामक बन्दरगाहमें लङ्गर डाला। यही तो अटलाण्टिक-महासागर है, इसी रास्ते तो न्यू-यार्क जाना होता है? किन्तु फ्लोर-डि-लीज़ कहाँ गया? वह तो कहीं नहीं नज़र आता!

मि० ब्लेक बहुत दफ़े समुद्रकी सैर कर चुके हैं। वे जानते हैं, कि सब जहाज़ोंकी चाल एकसी नहीं होती। वे बहुत दफ़े तेज़ जहाज़ोंपर सवार होकर अटलाण्टिकको पार कर चुके हैं। तेज़ीमें यह जहाज़ किसीसे कम नहीं, बल्कि बढ़ाही हुआ है। इसलिये उन्हें उम्मीद थी, कि अमेलियाका जहाज़, फ्लोर-डि-लीज़, मेरिटोनियाके लिवरपुलसे रवानः होनेके चाहे कितनेही पहले क्यों न रवानः हुआ हो, पर दो-चार दिनमें हम उसको अवश्य देख सकेंगे। पर उनकी यह आशा पूरी न हुई।

अमेलियाकी यह ख़ास आदत थी, कि वह ख़र्चके डरसे किसी काममें पीछे पैर नहीं देती थी। इसीलिये उसने अपने जहाज़ फ्लोर-डि-लीज़में आजकलकी वैज्ञानिक प्रणालीका अनुमोदित, सर्वाङ्ग-सुन्दर और खूब तेज़ इञ्जिन लगाया था।

जल्दी चलनेमें संसारका कोई जहाज़ उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। विशेषतः उसके जहाज़का कप्तान 'वेगहौन' बड़ा ही होशियार और दूरन्देश कप्तान था। उसकी तुलनाका कप्तान भी शायदही किसी सभ्य देशके जहाज़में हो। एक दफ़े नज़रसे ग़ायब होजानेपर फिर कोई उस जहाजको नहीं पा सकता था। यह सब बातें मि० ब्लेकको मालूम थीं। इसीलिये वे अपनी आशा पूर्ण न होनेसे विस्मयमें न पड़े। वे समझ गये, कि यदि सचमुच फ्लोर-डि-लीज़-न्यू-यार्कही गया है, तो अबबिना इस जहाज़के न्यू-यार्क पहुँचे, उसका पता लगाना कठिन है।

पर क्या सचमुच अमेलियाका जहाज़ न्यू-यार्ककीही ओर गया है? न्यू-यार्क जानेसे उसका क्या मतलब है? क्या उसने न्यू-यार्कमेंही पैट्रिककी पत्नीको बुलवा भेजा है? अथवा यही सोचकर वह न्यू-यार्क गयी है, कि किसी अँगरेज़ी बन्दरमें उतरना भयसे ख़ाली नहीं है?—परन्तु मि० ब्लेक इन प्रश्नोंके समाधानके लिये बहुत उत्कण्ठित नहीं हुए। फ़िलिप्सने उन्हें ख़बर दी थी, कि पैट्रिककी विधवा स्त्री मौण्ट-रियलमें ही है और वह उसपर कड़ी निगाह रखे हुए है। यदि वह न भागसकी तो फिर अमेलिया और उसके साथियोंका पता लगाना, कुछ भी कठिन न होगा। पैट्रिक-पत्नी अगर न्यूयार्क जाने लगेगी, तो मेरे पास जरूरही ख़बर पहुँचेगी।

मि० ब्लेकने फ्लोर-डि-लीज़का पता लगानेकी भी पूरी-पूरी कोशिश करनेमें कोई कसर नहीं रखी। उन्होंने बिना तारके ——— यन्त्रके सहारे ——— सफर करनेवाले कई एक

जहाज़ोंमें फ्लोर-डि-लीज़के बारेमें तार देकर पूछा, पर किसी जहाज़का कप्तान कुछ न बतला सका।

"सैण्डिहुक"से रवाना होनेके बाद कुछ ही समयके अनन्तर 'मेरिटोनिया' न्यू-यार्कके उपसागर-तटपर आपहुँचा। उसके मुसाफ़िरोंको अमेरिकाकी स्वाधीनताकी विजय-वैजयन्ती-स्वाधीनताकी विराट् मूर्त्ति-अभ्रभेदी गिरि-शिखरकी भाँति शोभायमान दिखाई दी।

मेरिटोनिया जहाज़ बन्दरगाहमें आकर बहुतसी जेटियोंको पारकर जाने लगा। उन जेटियोंमें अनेक देशोंसे आये हुए अनेक जहाज़ पड़े हुए थे। मि० ब्लेक और स्मिथ नजर गड़ा-गड़ाकर उन जहाज़ोंमें फ्लोर-डि-लीज़को ढूँढ़ने लगे ; पर कहीं उसका पता न लगा !

जब 'मेरिटोनिया' जेटीमें आ लगा ; तब बड़ी गड़बड़ मची। रेलारेली, धक्कामुक्की होने लगी। बड़ी धक्कापेल मची हुई देख, मि० ब्लेक स्मिथको लिये पीछे खड़े हुए और भीड़ छँटनेकी राह देखने लगे। बहुतसे मुसाफ़िरोंके जहाज़से उतरनेपर वे दोनों भी उतरे और क़ायदेके मुताबिक़ 'कस्टमआफ़िस'की ओर चले।

प्रायः घण्टेभर बाद 'कस्टम' आफ़िसके' कर्मचारियोंके चङ्गुलसे छुटकारा पाकर वे रास्तेमें आये और भाड़ेकी मोटर ले, कुलीके सिरसे अपना बड़ासा गट्ठर उतरवाकर गाड़ीमें रखवाने लगे। 'न्यू-यार्क' शहरकी ४२ नम्बरकी सड़कमें 'बेलमण्ट होटल' है, मि० ब्लेक यहाँ आकर प्रायः उसीमें ठहरा

करते थे। अतएव उन्होंने मोटरवालेको वहीं ले चलनेका हुक्म दिया।

होटलमें आ, एक कमरेमें अपना सब माल असबाब रखवा-कर वे होटलके आफ़िसमें आये और एक कर्मचारीसे पूछने लगे, कि मेरे नामकी कोई चिट्ठी-पत्री है या नहीं?

मि० ब्लेकने जहाज़परसेही एक बिना तारका तार फ़िलिप्स-के पास भेजा था। इसीलिये वे उम्मीद कर रहे थे, कि न्यू-यार्कमें पहुँचतेही उनके पास उसका जवाब आ जायेगा।

मि० ब्लेककी बात सुन, उस कर्मचारीने उन्हें दो तार लाकर दिये। उन्होंने घबराहटके साथ दोनोंको खोलकर देखा, दोनों फ़िलिप्सकेही भेजे हुए थे। उनके मेरिटोनिया जहाज़से भेजे हुए बिना तारके जवाबमें उसने जो तार भेजा था, उसमें लिखा था,——

"आपका तार मिला। हुक्मके मुताबिक़ काम किया जायेगा। खूब कड़ी नज़र रखूँगा—फ़िलिप्स।"

दूसरा तार कुछ लम्बा था। उसमें लिखा था,—

"ब्लेक—होटल बेलमण्ट, स्ट्रीट नं० ४२, न्यू-यार्क सटी। घटना कुछ औरही रङ्ग पकड़ रही है। विधवाने एक और चाल खेली है। उसके पास लण्डनसे और एक तार आया है। वह अपने दोनों पोतोंके साथ, सब माल-असबाब लिये-दिये न्यू-यार्क आ रही है। मैंने भी उसके पीछे-पीछे जहाज़के आफ़ि-समें आकर न्यू-यार्कका टिकट ख़रीद लिया है। वह मेरी नजर बचाकर भला कहाँ जा सकती है? मैं शीघ्रही न्यू-यार्क

पहुँचकर आपसे होटलमें मिलूँगा। आशा है, कि उस समय आपको और भी कुछ नयी ख़बर सुना सकूँगा।—फ़िलिप्स।"

मि० ब्लेक, इन दोनों तारोंको स्मिथके हाथमें दे, कुछ दूर-पर बैठी हुई एक युवतीके पास, सिगरेट ख़रीदने चले गये। वह युवती इस होटलमें सिगरेट बेचा करती थी।

मि० ब्लेकके माँगनेपर उस युवतीने उनके हाथमें सिगरेटका एक बकुस दे दिया। वे उसे खोलकर उसमेंसे सिगरेट निकालनाही चाहते थे, कि इतनेमें उन्होंने सुना, कि स्मिथ, बड़े आनन्दके साथ, न जाने किसका स्वागत कर रहा है! यह सुन, उन्होंने उधर मुँह फेरकर देखा, कि आगन्तुक और कोई नहीं, उनका मौण्ट-रियलवाला एजेण्ट फ़िलिप्स है।

उस युवतीको सिगरेटके दाम देकर, सिगरेटका डिब्बा जेबमें रखते हुए मि० ब्लेक झटपट फ़िलिप्सके पास चले आये और बड़े आग्रहसे उसका हाथ अपने हाथमें लेकर बोले,—"तुम्हें देखकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई। मेरी इच्छा थी, कि तुम्हारे साथ मौण्ट-रियल आऊँ; पर शायद तुम अकेले नहीं आये हो, पैट्रिकको विधवा स्त्रीको भी साथ लेते आये हो। क्या वह यहीं आयी है?"

फ़िलिप्सने हँसकर कहा,—"आपको देखकर मुझे भी बड़ी भारी ख़ुशी हुई। चलिये सिगरेट पीनेवाले कमरेमें चलें, वहीं बहुतसी बातें कहनी हैं।"

पासही सिगरेट पीनेका कमरा था। मि० ब्लेक, फ़िलिप्स को लिये हुए, उसी कमरेमें घुस पड़े उस समय वहाँ और

कोई न था। एक बड़ी भारी मेज़के चारों तरफ़ चमड़ेकी गद्दियोंवाली कुरसियाँ पड़ी हुई थीं। दोनों आमने-सामने दो कुरसियोंपर बैठ रहे, फ़िलिप्सने सिगरेटका धुआँ छोड़ते हुए कहा,—"पहलेका हाल तो आपको मालूमही है। इस समय मैं वही सब बातें बतलाऊँगा, जो मैं अबतक आपको नहीं लिख सका। पैट्रिककी विधवा पत्नी अपना 'ब्लुयेरी स्ट्रीट' वाला मकान छोड़कर एकाएक लापता हो गयी थी, यह मैंने आपको लिखाही था। उसका नया मकान ढूँढ़नेमें मुझे बड़ी दिक़तें हुईं। उसने साफ़ मेरी आँखोंमें धूल डाली थी। पहले तो मैं यह नहीं समझा, कि वह क्यों घर छोड़ भागी है—यही अनुमान किया था, कि पुलिसके डरसे भाग गयी होगी। आपका तार पाकर मुझे सन्देह हुआ था, कि डिलनके ख़ूनके मामलेमें इस बुढ़ियाका भी कुछ हाथ है। इसके बाद जब अख़बारोंमें छपा, कि डिलन उसेही अपनी सारी सम्पत्ति दे गया है, तब दल-के-दल अख़बारोंके रिपोर्टर उससे मिलनेके लिये उसके घर आने लगे। पर चिड़िया तो पहलेही उड़ गयी थी, इसीसे कोई उससे न मिल सका। मैंने एक दिन एक-ब-एक उसके नये मकानका पता पा लिया।

"आपको याद होगा, मैंने आपको लिखा था, कि बुढ़ियाके एक पोता और एक पोती है। एक दिन मैं नौटरडम-स्ट्रीट होकर चला जा रहा था, इतनेमें मुझे एकाएक उसकी पोती दिखाई दी।

"वे सब भागे थे—मैं उन्हें ढूँढते-ढूँढते हैरान हो गया था

ऐसी हालतमें उस लड़कीको देखकर मुझे इतनी खुशी हुई, जितनी शायद आसमानका चाँद पा जानेपर भी न होती। मैं उसके पीछे लगा और साँझ होते-होते उसके घर पहुँच गया। मुझे पूछनेपर मालूम हुआ, कि उसने यह मकान किरायेपर लिया है। कहीं फिर भी वह इधर-उधर न चली जाये, इसी लिये मैंने अपने दो नौकरोंको वहीं पहरेपर बैठा दिया।

"एक दिन मैंने सुना, कि उसके पास दो तार आये हैं। यह खबर भी मैं आपके पास पहलेही भेज चुका था। पर मुझे यह न मालूम हो सका, कि उनमें क्या लिखा था। इसके बाद ही मुझे 'मेरिटोनिया' जहाजसे भेजा हुआ आपका तार मिला, जिससे मुझे मालूम हुआ, कि आप यहाँ आ रहे हैं। तबतक मेरी समझमें कुछ भी नहीं आ सका था। इतनेमें उस बुढ़ियाने एक और चाल खेली। वह एक किरायेकी गाड़ीमें बैठकर एकाएक घरसे बाहर निकली। मैं भी उसके पीछे लगा। इसके बादही उसने अपने दोनों पोती-पोतेके साथ न्यू-यार्ककी यात्रा कर दी। मैं भी उसी जहाज़पर आ सवार हुआ। आपको खबर भी दे दी, कि मैं आ रहा हूँ। यहाँ आकर वे सब स्ट्रीट नं० १८ में एक छोटासा मकान भाड़ेपर लेकर वहीं ठहरे हुए हैं। मौण्ट-रियलसे मैं एक नौकरको साथ लेता आया हूँ। उसेही उनलोगोंके पहरेपर बैठाकर मैं आपसे मिलने चला आया हूँ। अभीतक वे सब वहीं हैं।"

फ़िलिप्सकी बातें सुन, मि० ब्लेकको बड़ाही आनन्द हुआ। वे उसकी चुस्ती, चालाकी और मुस्तैदीकी तारीफ कर कहने

लगे,—"जबसे मैंने डिलनके खूनवाले मामलेकी जाँचका भार अपने हाथमें लिया है, तबसे मुझे जो-जो बातें मालूम हुई हैं, उन्हें पीछे बतलाऊँगा। इस समय मैं स्मिथको मलबरी-स्ट्रीटमें पुलिसके अध्यक्ष, मि० केलीके पास भेजना चाहता हूँ। मुझे जे० राबर्ट्स नामवाले एक फ़रारी असामीको गिरफ़्तार करनेका 'वारण्ट' चाहिये। मुझे सन्देह होता है, कि इसी आदमीने डिलनकी हत्या की है। स्मिथ! तुम मि० केलीसे कहना, कि मैं तुरतही उनसे आकर मिलूँगा और उसी समय सब बातें बतलाऊँगा। तुम बहुत जल्दी लौटना।"

मि० ब्लेककी आज्ञा पाकर स्मिथ, तुरतही मलबरी-स्ट्रीटकी ओर चल पड़ा। तबतक मि० ब्लेक फ़िलिप्सको डिनलकी हत्याके सम्बन्धमें सारी बातें सुनाने लगे। पर इस मामलेमें अमेलियाका भी हाथ है, यह उन्होंने फ़िलिप्सको नहीं बतलाया।

अपराह्न-कालके पाँच बजे, स्मिथ न्यू-यार्क-शहरकी पुलिसके सबसे बड़े अफ़सर मि० केलीके यहाँ जाकर उनसे 'वारण्ट' माँग ले आया। मि० केलीने 'वारण्ट'के साथ-ही-साथ एक पत्र लिखकर मि० ब्लेकका स्वागत किया।

मि० ब्लेक, फ़िलिप्स और स्मिथको साथ लिये हुए एक टैक्सीपर सवार हो, पैट्रिक-परिवारकी खोजमें नं० १८ वाली

स्ट्रीटके होटलके सामने जा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर वे, टैक्सीसे नीचे उतरे। फ़िलिप्स, अपने जिस नौकरको पैट्रिक-परिवारके पहरेपर तैनात कर गया था, उसे न देख, बड़े अचम्भेमें पड़ा। पर दोही मिनट बाद एक टैक्सी दनदनाती-हुई वहाँ आ पहुँची। फ़िलिप्सका नौकर उसपरसे उतरकर उससे मिला और बोला, —"आपके यहाँसे जानेके थोड़ीही देर बाद मिसेज़ पैट्रिकका-पोता एक टैक्सीपर सवार हो, बाहर निकला। मैं भी उसके पीछे लगा। जाते-जाते वह ईस्ट-रिवरकी बेण्टली-जेटीमें जा पहुँचा।"

मि० ब्लेकने यह जेटी पहले भी कई बार देखी थी। यह जेटी विलियम्सबर्ग नामक पुलके पास है। पैट्रिकका पोताही अकेला बाहर गया है, उसकी बहन और दादी घरके भीतरही हैं, यह जानकर फ़िलिप्सके चित्तको शान्ति हुई। उसने कहा,— "तब कोई फ़िक्रकी बात नहीं है। अब यह सोचना चाहिये, कि इस समय क्या कर्त्तव्य है?"

मि० ब्लेकने कहा,—"वह छोकरा ज़रूर फ्लोर-डि-लीज़के मुसाफ़िरोंकी अगवानीके लिये गया हुआ है। हमलोग भी वहीं चलें। यहाँ देर करना ठीक नहीं।"

इसके बाद वे झटपट टैक्सीपर जा सवार हुए और 'ईस्ट-हाउस्टन' स्ट्रीट होते हुए बेण्टली-जेटीकी ओर चल पड़े।

बेण्टली-जेटी न्यू-यार्कके बन्दरगाहकी सबसे बड़ी जेटी है। जो जहाज़ किसी तिजारती कम्पनीके नहीं होते, वे यहाँ ठहरते हैं। मि० ब्लेक बेपडर-स्ट्रीटमें आकर टैक्सीसे नीचे उतर पड़े फिलिप्स और स्मिथ भी उनके पीछे-पीछे चले।

जेटीमें आतेही उन्होंने देखा, कि अभी-अभी एक जहाज़ जेटीमें पहुँचा है। मि० ब्लेक उसे देखतेही पहचान गये। वही अमेलियाकी प्रसिद्ध जहाज़ 'फ्लोर-डि-लीज़' था!

मि० ब्लेकने जहाज़के डेकपर माँझी-मल्लाहोंको तो देखा; परन्तु अमेलिया, ग्रेविस या उनका साथी 'मि० रावर्ट्स' नहीं दिखाई दिये। उस समयतक जहाज़परसे जेटीके ऊपर सीढ़ी नहीं उतारी गयी थी। इसलिये वे बड़ी उत्सुकतासे मुसाफ़िरोंके आनेकी राह देखने लगे। कुछही मिनट बाद जहाज़परसे एक पतली सीढ़ी नीचे उतारी गयी। उसी समय एक तरफ़से एक युवक आ पहुँचा और उसी सीढ़ीपर चढ़कर जहाज़पर चला गया। फ़िलिप्सने इशारेसे मि० ब्लेकको बतला दिया, कि यही युवक मिसेज़ पैट्रिकका पोता है।

मि० ब्लेक चिन्तित चित्तसे कुछ देरतक वहीं खड़े रहे; परन्तु थोड़ीही देरमें उनकी वह चञ्चलता दूर हो गयी। उन्होंने मनको स्थिर कर लिया। इसके बाद वे फ़िलिप्ससे बोले,—"बाज़ाता वारण्ट है। चलो, जहाज़परही असामीको गिरफ़्तार करेंगे।"

मि० ब्लेकने मुँहसे तो यह बात कह दी; पर दिल-ही-दिलमें वे खूब समझ गये थे, कि यह काम आसान नहीं है। सिंहिनीकी माँदमें घुसकर उसके बच्चेको पकड़ लाना शायद सम्भव भी है, पर अमेलियाके जहाज़में घुसकर उसके आश्रित व्यक्तिको गिरफ़्तार कर लेना, उसकी अपेक्षा हज़ार गुना मुश्किल और ख़तरनाक है। परन्तु जो कभी प्राणोंके भयसे भीत न हुए, क्या उनके लिये भी यह काम बड़ा कठिन है?

इसमें शक नहीं, कि मि० ब्लेकको प्राणोंका भय नहीं है, परन्तु सवाल यह है, कि उनके प्राण जिसे प्यार करते हैं, उसेही वे किस कलेजेसे तकलीफ़ पहुँचायें? क्षण-भरमें अमेलियाके सैकड़ों स्नेह-भरे व्यवहार उन्हें स्मरण हो आये—प्राणोंपर सङ्कट आ जानेपर कितनी बार अमेलियाने उनके प्राण बचाये थे, यह भी याद आया। वे यह सोचकर सहम गये, कि जिसने मुझे बार-बार मौतके मुँहसे बचाया है, आज मैं उसीके आश्रित व्यक्तिको उससे छीनने चला हूँ!

पर अब इन बातोंका विचार करनेसे कोई लाभ नहीं,—वे बहुत दूर चले आये हैं,—इतनी दूर, कि अब लौटना मुश्किल है। इच्छा न होनेपर भी जिस कर्त्तव्यका भार उन्होंने सिरपर ले रखा है, उसे तो पूरा करनाही पड़ेगा। मि० ब्लेक जी कड़ाकर अमेलियाके जहाज़पर चढ़ गये। साथ-ही-साथ उनके दोनों अनुचर भी चले।

'फ्लोर-डि-लीज़'का कप्तान 'वेगहौन' जहाज़के ऊपरही खड़ा था। वह मि० ब्लेकको जहाज़पर सवार होते देख, अचम्भेमें आ गया। मि० ब्लेक न्यू-यार्कमें मिलेंगे, यह उसने सपनेमें भी नहीं सोचा था। पर कप्तानको यह नहीं मालूम था, कि इस समय वे यहाँ शत्रु-भावसे जहाज़पर आ रहे हैं। वह यही जानता था, कि वे अमेलियाके हितैषी और बन्धु हैं, इसीलिये अमेलिया उन्हें कितनी दफ़े मौतके मुँहसे बचा लायी है। उसके इस सीधेपन और विश्वासको देखकर, मि० ब्लेक मन-ही-मन बहुत सकुचाये।

मि० ब्लेकको जहाज़पर चढ़ते देख, और-और कर्मचारियोंको भी बड़ा अचम्भा हुआ। जो जहाँ था, वह वहीं खड़ा-खड़ा अचरज-भरी आँखोंसे उन्हें और उनके साथियोंको देखता रह गया। परन्तु मि० ब्लेक बिना किसीको देखे-सुने डेकपर आकर अमेलियाके 'सैलून'में आ पहुँचे। उनकी छाती बड़े ज़ोरसे धड़कने लगी।

मि० ब्लेकने सोचा था, कि वे उसी सैलूनमें अमेलिया, ग्रेविस, मि० राबर्ट्स और मिसेज़ पेट्रिकके पोतेको पायेंगे और वहीं अमेलियासे सारा हाल सुना, वारण्ट दिखलाकर मि० राबर्ट्सको गिरफ्तार कर लेंगे, अमेलियाको ज़रा भी सोचने सम्हलनेका मौका न देंगे और जबतक वह कुछ सोचे-समझे तबतक वह असामीको लेकर जहाजसे नीचे उतर पड़ेंगे।

पर उस सैलूनमें किसीको न देखकर वे बड़े विस्मयमें पड़े। सैलूनकी एक ओर परदा पड़ा हुआ था। उन्होंने उस परदेको हटाकर देखा, कि दो आदमी बैठे हुए हैं, जिनमें एक तो वारण्ट का असामी मि० राबर्ट्स और दूसरा मिसेज पैट्रिकका पोता है। वहाँ भी उन्हें अमेलिया या ग्रेविसकी सूरत नहीं दिखाई दी।

दोनों युवक एक लम्बीसी मेजके पास बैठे हुए थे। उन दोनोंने भी मि० ब्लेकको परदा हटाकर झाँकते देखा। साँझकी धीमी रोशनीमें राबर्ट-कार्टरने मि० ब्लेकको देखतेही पहचान लिया। वह आतङ्क-विह्वल दृष्टिसे उनकी ओर देखता हुआ दबी जबानसे बोल उठा,—"यह क्या ? ये तो मि० ब्लेक हैं !"

तुरतही उसके सामने आकर मि० ब्लेकने कड़ककर कहा,—"हाँ, मि० जे० रावर्ट्स! मैं ब्लेकही हूँ। तुमने मुझे ठीक पहचाना है मैं तो यह पहलेही समझ गया थाँ, कि तुम भाग गये हो; इसीसे मैं एक बड़ेही तेज जहाजपर सवार हो, यहाँ चला आया। जो हो, मि० रावर्ट्स! मुझे यह बात बड़े दुःखके साथ कहनी पड़ती है, कि मैं तुम्हारे नामका वारण्ट लेकर आया हूँ और तुम्हें मैंने कर्नेलियस-डिनलके खूनके जुर्ममें गिरफ्तार किया। यदि कुशल चाहते हो, तो सीधी तरहँसे जहाजसे नीचे उतरो और मेरे साथ-साथ चलो मैं यह बिलकुल नहीं चाहता, कि इस मामलेमें मिस अमेलियाको लपेटूँ। मैं उनके अनजानतेमें ही तुम्हें यहाँसे ले जाना चाहता हूँ।

मि० ब्लेककी बात सुनकर रावर्ट-कार्टर भौंचकसा हो रहा- उसके मुँहसे कोई बात न निकली। उसे इस तरहँ अचल, अटल बैठा हुआ देख, मि० ब्लेक उसे पकड़नेके लिये उसकी कुरसीके पास आये।

इतनी देर बाद रावर्ट-कार्टरको अपनी सङ्कट जनक अवस्था-का ज्ञान हुआ। वह जानता था, कि मैंने डिलनको नहीं मारा, तोभी अपनी सफ़ाईका सुबूत मेरे पास नहीं है। उसे यह बात समझते भी देर न लगी, कि यदि मि० ब्लेक मुझे जहाज़से नीचे उतार ले जायेंगे, तो फिर मेरी क्या दुर्गति होगी! बिना अपराध-के फाँसी पड़ना उसे मंजूर नहीं था। उस क्षणभरमें उसने स्थिर कर लिया, कि बिना लड़े, मैं सीधे-सादे बच्चेकी तरह, चुपचाप

मि० ब्लेकके पीछे-पीछे न चला जाऊँगा। डिलनने मेरे साथ जैसा बुरा बर्त्ताव किया था, उसका सौवाँ हिस्सा भी मैंने न किया, मैंने उसकी जान नहीं ली, तोभी ये झूठमूठ मेरे ऊपर सन्देह कर मेरी बहनके जहाज़पर ही मुझे गिरफ़्तार करने आये हैं। राबर्ट-कार्टर मि० ब्लेकके इस अन्यायको देख क्रोध और दुःखसे उत्तेजित हो उठा। फिर तो ज्योंही मि० ब्लेकने उसे पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाया, त्यों ही वह उनपर सिंहकी तरह टूट पड़ा।

मि० ब्लेक इस हमलेके लिये पहलेसे ही तैयार थे। दोनों-की देहमें असुरका सा बल था, युद्ध-विद्यामें कोई किसीसे कम नहीं था। इसलिये उस सन्ध्याकी उँजियाली मिली हुई अँधियारीमें दोनोंकी खूब गुत्थमगुत्था होने लगी।

पहले तो पैट्रिककी समझमें नहीं आया, कि यह क्या माजरा है? अतएव वह कुछ देरतक घबराहटकी सूरत बनाये दोनोंकी लड़ाई देखता रहा। उसकी आँखोंसे भय और विस्मयका भाव प्रकट होने लगा। इसके बाद, यह देखकर, कि एक अनजान आदमी बेजा तौरसे जहाज़में घुसकर उसके सबसे बड़े हितैषीको गिर-फ़्तार करने आया है, वह चुप न रह सका और राबर्ट-कार्टरकी सहायता करनेके लिये मि० ब्लेकपर आप भी आक्रमण करने लगा। मि० ब्लेक अकेलेही उन दोनों दोस्तोंसे भिड़ते रहे। उनकी जवाँमर्दी देखने लायक़ थी!

युवक पैट्रिकने ज्योंही मि० ब्लेकके सिरपर मारनेके लिये घूँसा ताना, त्योंही एक ओरसे स्मिथने आकर उसके मुँहमें इस ज़ोरका थप्पड़ मारा, कि पैट्रिक पलक मारते ज़मीनमें गिर पड़ा

इसके बाद अपनेको कुछ सम्हालकर विस्मय-भरी आँखोंसे स्मिथकी ओर देखता रह गया। इतनेमें फ़िलिप्स भी मि० ब्लेककी सहायताके लिये वहाँ आ पहुँचा। मि० ब्लेक, स्मिथ और फ़िलिप्सकी सहायतासे राबर्ट-कार्टरको गिरफ़्तार कर लिये जारहे हैं, यह देखकर पैट्रिकने फिर उनपर हमला किया। फिर उन दोनोंकी इन तीनों आदमियोंसे लड़ाई होने लगी।

फ्लोर-डि-लीज़का 'मेट' हैपिंडुक बड़ा बलवान युवक था। वह अमेलियाके लिये जानतक देनेको तैयार रहता था। उसे यह मालूम था, कि राबर्ट अमेलियाका भाई है। अतएव यद्यपि वह मि० ब्लेकको पहचानता था और यह जानता था, कि वे अमेलियाके दोस्तोंमें हैं, साथ ही उसकी—उनपर श्रद्धा भी कम न थी, तथापि वह इस बातको बरदाश्त न कर सका, कि मि० ब्लेक उसकी मालिकिनके भाईको गिरफ़्तार कर लिये जा रहे हैं। वह क्रोधित सिंहकी तरह सैलूनमें घुस पड़ा और राबर्टके तीनों शत्रुओंको मारने-पीटने लगा। उसके जीमें आया, कि एक-एक करके तीनोंको उठाकर नदीमें फेंक दूँ।

अबके तीन-तीन आदमी दोनों ओर हो गये—बराबरका जोड़ हो गया। स्मिथने ही सबसे पहले पैट्रिकपर हमला किया था, अतएव वह शेष दोनोंको छोड़कर उसीपर घूँसे-थप्पड़ चलाने लगा। उसके घूँसोंकी मारसे स्मिथ घबरा उठा-उसे चारों ओर अँधेरा दिखाई देने लगा। वह समझ गया, मैं हज़ार ज़ोरावर होनेपर भी इस कैनेडियन युवककी बराबरी नहीं कर सकता। अतएव वह हमला करनेका विचार छोड़, बराबर अपना बचावही

करने लगा। पर यह भी उससे न बन पड़ा। मारे थप्पड़ घूँसोंके उसका नाकों दम आ गया। उधर फ़िलिप्स उस जहाज़ी गोरेसे पार न पाकर मैदानसे भागने लगा।

उधर मि० ब्लेक बराबर इस बातकी चेष्टा कर रहे थे, जिसमें शिकार भागने न पाये। वे बराबर राबर्टको फँसाये रहे। राबर्टकी देहमें भी कम बल नहीं था। मि० ब्लेक उसे पकड़े हुए थे, तोभी वह उन्हें खूब मार-पीट रहा था। जासूसी करते उनकी उमर बीती, तोभी आजतक इतने घूँसे-थप्पड़ उन्होंने कभी नहीं खाये थे। अब यह बात उनके चित्तसे उतर गयी, कि वे असामीको गिरफ्तार करने आये हैं। उन्हें यही ख़याल हुआ, कि राबर्ट उनके प्रेमके रास्तेमें प्रतिद्वन्द्वी है! अमेलियाके मनमें मेरे प्रति जो प्रेम था, उसे इस पापीने छीन लिया है। इसी विचारसे उनके हृदयमें व्यक्तिगत क्रोधका उदय हो आया। वे अपने 'रक़ीब'को अच्छी शिक्षा देनेके विचारसे खूब जी-जानसे युद्ध करने लगे। इधर राबर्ट-कार्टर इस हैरतमें था, कि मि० ब्लेक मेरी बहनके दोस्त हैं, तोभी मुझसे क्यों ऐसे जले हुए हैं? वह मि० ब्लेकको परास्त करनेके लिये उन्मत्त दानवकी तरह युद्ध करने लगा। राबर्ट-कार्टर अबके मि० ब्लेकका आक्रमण न रोक सकनेके कारण एक-दो पग पीछे हट गया। इतनेमें अमेलिया तेज़ीसे दौड़ी हुई आ पहुँची और दोनोंके बीचमें खड़ी होगयी। उसने दोनोंको दो तरफ़कर लड़ाई रोकनेकी चेष्टाकी।

मि० ब्लेक विस्मयके साथ अमेलियाके चेहरेकी ओर देखने लगे। उस समय भी पहलेकी तरह मासूम

चढ़ाये लड़नेको मुस्तैद खड़ा था। अमेलियाने दोनोंकी ओर देखते हुए कहा,—"तुमलोग यह क्या कर रहे हो। ज़रा ठहर जाओ। राबर्ट! तुम मेरी यह बात न मानोगे, तो मैं तुम्हारी ढिठाई कभी माफ़ न करूँगी। मैं तुमसे कहती हूँ, कि तुम उधर हट जाओ। और मि० ब्लेक! आप अभी उसे छोड़ दें—स्थिर होकर मेरी बात सुनें।

उन लोगोंके उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिनाही अमेलियाने राबर्ट कार्टरको धक्का देकर थोड़ी दूर हटा दिया। लाचार, मि० ब्लेक भी चुपचाप खड़े होरहे; पर उस समय भी उनकी आँखोंसे आगकी सी चिनगारी निकल रही थी।

राबर्टकार्टर, मि० ब्लेक द्वारा इस प्रकार अपमानित हो, बड़ाही क्रोधित होरहा था। इसलिये वह अमेलियाकी बात न मान, फिर मि० ब्लेकपर घूँसा तान, उन्हें मारने चला। यह देख, मि० ब्लेक भी उससे लड़नेको तैयार हो गये। यह देख, अमेलियाने उन्हें अपने दोनों हाथोंसे पकड़कर हृदयसे लगा लिया। अब तो उनमें हाथ उठानेकी भी शक्ति न रही। अमेलियाके खुले बाल उनके चेहरेपर लोटने लगे, उसके मुँहसे निकलनेवाली गरम-गरम सांस उनकी नाकमें प्रवेश करने लगी, उन्होंने अपनी छातीमें सटी हुई अमेलियाकी छातीका धड़कना अच्छी तरह अनुभव किया।

अमेलिया, उनके चेहरेकी ओर व्याकुलभावसे देखती हुई बोली,—"मि० ब्लेक! आप उसे माफ़ कर दें—वह मेरा भाई है। हम दोनों एकही माँ-बापकी सन्तानें हैं।"

जैसे एकाएक चोट आजानेके कारण आदमी घबराकर दो पग पीछे हट जाता है, वैसेही मि० ब्लेक यह बात सुन, दो क़दम पीछे हट गये और विस्मयभरे नेत्रोंसे अमेलियाके मुँहकी ओर देखते हुए बोले,—"एँ! यह युवक तुम्हारा भाई है? कैसे आश्चर्यकी बात है! मैंने बड़ी भारी भूल की। पर एकाएक तुम्हारे यह भाई कहाँसे निकल पड़ा? मैंने तो आजतक तुम्हारे मुँहसे यह कभी नहीं सुना था, कि तुम्हारे कोई भाई भी है। यह क्या मामला है, वह मेरी समझमें नहीं आता।"

तुरतही उनके इस सवालका कोई जवाब न दे, अमेलिया, हाँपती हुई, कुछ दूरपर रखी हुई एक बेंचपर जा बैठी और राबर्ट-कार्टरसे बोली, कि उधर जो लोग अभीतक लड़ रहे हैं, उनको भी लड़ाई बन्द करनेको कहो।

पर राबर्ट-कार्टरको इसके लिये कुछ चेष्टा नहीं करनी पड़ी। वे अमेलियाके यों एकाएक पहुँचकर मि० ब्लेक और राबर्ट-कार्टर युद्ध की लड़ाई बन्द करा देनेसे वे लोग भी अचम्भेमें आगये और ब्लेक मे तही एक दूसरेको छोड़कर अलग होगये। इसके बाद वे वह मि० भलेमानसोंकी तरह चुपचाप खड़े देखते रह गये।

युद्ध करने लगी समय अमेलियाका मामा ग्रेविल भी घबराया हुआ न रोक सकनेके। उसके पीछे-पीछे फ्लोर-डि-लीजका कप्तान, लम्बे-अमेलिया तेजीसे दौलवाला बैगहोन भी था।

होगयी। उसने दोनोंको कमरेमें आते देख, अमेलियाने उन्हें शीघ्रही चले मि० ब्लेक विस्मयके या। इसपर वे दुम दबाये चुपचाप वहाँसे लगे। राबर्ट-कार्टर उस सम

इसके बाद अमेलियाने उस कमरेमें बैठे हुए लोगोंसे कहा—"रावर्ट और मि० ब्लेकके सिवा और सभी लोग यहाँसे चले जायें। यहाँ रहनेकी कुछ ज़रूरत नहीं है।"

यह सुन, स्मिथ, पेट्रिक, फ़िलिप्स और हैपिड्रक—ये चारों उस कमरेसे बाहर चले गये। मि० ब्लेक, चुपचाप सिर झुकाये, खड़े रहे। उनके हृदयमें विस्मयकी तरङ्गें उठ रही थीं। रावर्ट-कार्टर, इस विचित्र मामलेको न समझ सकनेके कारण, उस कमरेके एक कोनेमें चुपचाप खड़ा रह गया।

सामनेवाली कुरसीपर मि० ब्लेकको बैठाकर अमेलियाने धीरे-धीरे कहना आरम्भ किया,—"मैं यह समझ रही थी, कि कि एक-न-एक दिन यह घटना अवश्य होगी। इसे न होने देनेके लिये मैंने भरपूर चेष्टा की; पर आपकी आँखोंमें धूल न झोंक सकी। मैं लण्डनसे चलनेके पहलेही समझ गयी थी, कि आप रावर्टपर सन्देह करते और उसे गिरफ़ार करना चाहते हैं; पर मैंने भी सङ्कल्प कर लिया था, कि अपनी जान देकर भी मैं उसको बचाऊँगी। अब भी मेरा सङ्कल्प बना हुआ है। यदि कोई मनुष्य विपद्में पड़कर मेरी शरणमें आजाता है, तो मैं उसे अलग करना बड़ीही नीचताकी बात समझती हूँ। ख़ासकर, यह तो मेरा भाई है, तिसपर बेचारा बिलकुल बेक़ुसूर है। झूठमूठके अपराधपर इसे फाँसी हो, यह भला मुझसे कैसे देखा जा सकता है?"

मि० ब्लेकने अचम्भेमें आकर पूछा,—"क्या यह निरपराध है? ख़ूनीको भी तुम निरपराध समझती हो?"

अमेलियाने दृढ़ताके साथ कहा,—"हाँ, यह निरपराध है। इसने डिलनको नहीं मारा। यह उसे मारनेके इरादेसे वहाँ नहीं गया था। वह अभागा आपही अपने दोषसे अपनी जान गवाँ बैठा है। उसने अपने पापका फल भगवान्‌के हाथसे पाया है। आप पहले मेरी कुल बातें सुन जाइये, तब सब आपकी समझमें आ जायेगा। इसके बाद विश्वास करना, न करना, आपकी इच्छापर है।"

अमेलियाने धीरे-धीरे सब बातें मि० ब्लेकको कह सुनायीं। राबर्ट-कार्टरके अतीत जीवनकी कथा, डिलनका उसके साथ पैशाचिक व्यवहार, चुरायी हुई सम्पत्ति पाकर डिलनका बड़ा आदमी बन जाना, राबर्ट-कार्टरका उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते लण्डनमें आना, रास्तेमें एकाएक राबर्ट-कार्टरकी अमेलियासे मुलाक़ात होना,—इत्यादि सारी बातें अमेलियाने मि० ब्लेकसे कह सुनायीं। अन्तमें उसने राबर्ट-कार्टरसे कहा,—"अब डिनलसे मिलनेपर तुम्हारी-उसकी जो-जो बातें हुईं और उनका जो नतीजा हुआ, उसका हाल तुम स्वयं इन्हें कह सुनाओ। कोई बात न छिपाना। सब सच-सच कह देना।"

फिर तो राबर्ट-कार्टरने मि० ब्लेकको सारी कथा कह सुनायी। कैसे वह लण्डन आया और डिलनसे मिला, लाइ-ब्रेरीमें उन दोनोंकी क्या-क्या बातें हुईं, दोनोंमें कैसी धींगा-मुश्ती हुई और अन्तमें, डिलन क्योंकर अग्नि-कुण्डके लोहेपर गिरकर मर गया—यह सब उसने सरल चित्तसे साफ़-साफ़ कह सुनाया। डिलनने किस प्रकार उसे निकोलसन-पोस्टके

एकान्त जङ्गलमें गोली मारी थी और कानके नीचे गहरा ज़ख़्म कर दिया था, इसका हाल सुनाते हुए उसने कपड़ा खोलकर अपना वह दाग़ भी उन्हें दिखला दिया। इसके बाद उसने पैद्रिक-की विधवासे मिलकर उसकी दुर्दशा देख, उससे कैसी प्रतिज्ञा की थी और उसका कैसा पालन किया, यह भी कह सुनाया। उसने उनसे यह बात शपथ खाकर कही, कि मैं डिलनको मारने नहीं, बल्कि उससे पैद्रिककी विधवा पत्नीका प्राप्य धन दिल-वाने गया था। उसने डिलनकी मृत्युके बाद उसके दराज़से मुहरें और हीरे निकाल लेनेकी बात भी उनसे नहीं छिपायी और यह भी निस्सङ्कोच स्वीकार किया, कि उसीने मौण्टरियलसे पैद्रिककी पत्नीके पास २०० पौण्ड भेजे थे। अन्तमें उसने कहा,—"मुझे डिलनके वसीयतनामेकी बात नहीं मालूम थी। जब अख़बारोंमें मैंने यह ख़बर पढ़ी, तब तो मेरे आश्चर्यका कोई ठिकानाही न रहा। वह अपने पापका इस प्रकार प्रायश्चित्त कर जायेगा, यह मैंने सपनेमें भी नहीं सोचा था।"

यह सब बातें कहनेके बाद वह मि० ब्लेकके सामने आ, दृढ़ता-भरे शब्दोंमें कहने लगा,—"मेरी ये बातें सोलहों आने सच हैं। मैंने इनमें ज़रा भी नोन-मिर्च नहीं लगाया। मैंने न तो कोई बात बढ़ाकर कही है, न घटाकर—आपसे मैंने कुछ भी नहीं छिपाया। आप लण्डनसे मुझे गिरफ़्तार करने आये हैं; पर सच जानिये, मैं बेक़ुसूर हूँ। शाही अदालतमें विचार होनेपर मुझे फाँसीकीही सज़ा दी जायेगी, यह मैं जानता हूँ; इसीलिये मैं आसानीसे गिरफ़्तार न होकर आपसे लड़ रहा

था। मैं नहीं कह सकता, कि अन्तमें इस युद्धका क्या परिणाम होता ; पर मुझे अमेलियाके कहनेसे हाथ खींच लेना पड़ा। अमेलिया यदि मुझे आश्रय न देती और अपने जीवनको विपद्‌में डालकर भी मुझे बचानेकी चेष्टा न करती, तो मेरा क्या हाल होता, यह मैं भलीभाँति जानता हूँ। मैं उसका सदा ऋणी बना रहूँगा। मैं अपने इस निकम्मे जीवनके लिये उसे फन्देमें डालना नहीं चाहता। वह यदि कहे, तो मैं अभी आपके साथ चला जा सकता हूँ। फिर मेरी जो सज़ा होगी, उसे मैं सिर झुकाकर कुबूल कर लूँगा। पर यदि अमेलिया मुझे आत्म-रक्षा करनेकी सलाह देगी, तो सच जानिये, मि० ब्लेक ! आप मुझे न्यू-यार्क-शहरकी सारी पुलिस-फ़ौज लाकर भी नहीं पकड़ सकते। मैं प्राण रहते, अन्ततक युद्ध करता हुआ अपनेको बचानेकी चेष्टा करूँगा। आप मेरी लाशको भलेही फाँसीपर लटका दें, पर जीते-जी तो मैं इस जहाज़से उतरकर नीचे नहीं आनेका।"

काठके पुतलेकी तरह चुपचाप खड़े-खड़े मि० ब्लेक, राबर्ट-कार्टरकी बातें सुनते रहे। इसके बाद कुरसीसे उठकर वे उसी कमरेमें टहलने लगे। उनके हृदयमें उस समय कैसा तूफ़ान जारी था, यह कोई नहीं समझ सकता।

पाँच मिनटतक वे इसी तरह टहलते रहे। अमेलिया, उनकी चिन्तामें बाधा न दे, चुपचाप बैठी रही।

पाँच मिनट बाद मि० ब्लेक एकाएक अमेलियाके पास चले आये और बड़ी शान्त दृष्टिसे अमेलियाका मुँह निहारते हुए बड़े

प्रेमभरे स्वरमें बोले,—"अमेलिया! अब इस बारेमें तुम्हारी क्या राय है, सो कहो।"

अमेलिया सिर ऊपर उठाकर उनसे आँखें न मिला सकी। उसके हृदयमें भी उस समय तरह-तरहकी चिन्ताएँ लहरें मार रही थीं। वह पहलेहीकी तरह सिर झुकाये बैठी रही और धीरे-धीरे बोली,—"मैं अपने भाईको बिना लड़े, चुपचाप, आपके हाथोंमें अपनेको सौंप देनेका कभी उपदेश न दूँगी। वह मेरा आश्रित है, इसलिये मैं कदापि उसे आत्म-रक्षा करनेसे नहीं रोक सकती। यह बात मेरे लिये बड़ीही अनुचित होगी। वह साहसी युवक है। जबतक उससे बन पड़ेगा, तबतक अपना बचाव करेगा। जब बचाव न कर सकेगा, तब लड़ते-ही-लड़ते प्राण दे देगा। मैं यह नहीं देखना चाहती, कि मेरा सहोदर भाई, बिना अपराधके, खूनी बनाया जाये और फाँसीपर लटके। यह बात मेरे खानदानमें कलङ्क लगानेवाली होगी। इसकी अपेक्षा तो अपना बचाव करते हुए उसका मर जाना, लाख दर्जे अच्छा है। इसमें कहीं अधिक गौरव है।"

मि० ब्लेक, अमेलियाकी बातें सुनकर, हँसपड़े—वह हँसी उदासीकी थी! उन्होंने कुछ कहा तो नहीं, पर अपनी जेबसे रॉबर्ट-कार्टरकी गिरफ्तारीका वारन्ट निकाल, उसे फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। इसके बाद अचम्भेमें डूबी अमेलिया और रॉबर्ट-कार्टरसे बिना कुछ कहे-सुने, वे चुपचाप उस कमरेसे बाहर चले आये।

अमेलियाने उस फटे हुए वारन्टके टुकड़ोंको देख, ज्योंहि

सिर उठाया, त्योंही देखा, कि मि० ब्लेक तो चले गये हैं। वे यों झटपट चले जायेंगे, यह अमेलियाने नहीं सोचा था। उसे उनसे बहुतसी बातें कहनी थीं; पर उन्होंने उसे बातें करनेका मौक़ाही न दिया, यह देख, उसे बड़ा दुःख हुआ। वह झटपट रावर्ट-कार्टरके साथ-साथ उनको ढूंढ़नेके लिये सैलूनके बाहर आयी; पर उस समय तो मि० ब्लेक फ़िलिप्स और स्मिथके साथ 'वैंड-स्ट्रीट'की ओर लपके जा रहे थे!

गोधूलिके अस्फुट आलोकमें जहाज़के डेकपर खड़ी-खड़ी अमेलिया बड़ी देरतक मि० ब्लेककी ओर देखती रही। उसके कलेजेमें ऐसा तीरसा चुभा जाता था, कि वह बड़ी बेचैनीसे दोनों हाथोंसे कलेजा दाबे खड़ी होरही—उसकी सारी देहका रक्त आँसू बनकर आँखोंकी राह निकला पड़ता था!

अमेलिया दो मिनटतक इसी प्रकार चित्रमें लिखे हुएकी तरह चुपचाप खड़ी-खड़ी न जाने क्या-क्या सोचती रही। जब मि० ब्लेक उसकी नज़रोंसे बाहर चले गये, तब वह बड़ी कठिनाईसे अपने दिलको रोक, दूसरी ओर देखने लगी। उसने देखा, कि थोड़ीही दूरपर खड़ा हुआ रावर्ट-कार्टर, बड़ी बेचैनीके साथ, रास्तेकी ओर देख रहा है। उसे देख, अमेलियाने नीरस स्वरमें कहा,—"रावर्ट! तुम्हें पैट्रिक-परिवारसे जो बातें करनी हों, उन्हें झटपट कर-धर लो। मैं शीघ्रही न्यू-यार्कसे रवाना हो जाना चाहती हूँ। अब मि० ब्लेक तुम्हें गिरफ़तार न करेंगे। वे तुम्हें छोड़कर चले गये। पर न्यू-यार्ककी पुलिस तुम्हें सहजही न छोड़ेगी। वहीं तुम्हें कब गिरफ्तार करने चली आयेगी,

यह अनुमान करना भी असम्भव है। तुम्हारी जानको न्यू-यार्क-में भी बड़ी आफ़त है।"

इसके बाद अपने जहाज़के कप्तानको उचित उपदेश दे, वह लड़खड़ाते पैरोंसे अपने केबिनमें चली आयी। वहाँ आ, वह एक सोफ़ापर लेटी हुई बेरोक आँसू बहाने लगी। आज उसे साफ़-साफ़ मालूम हो गया, कि उसके हृदयपर मि० ब्लेकने कितना अधिकार जमा लिया है! आज उन्होंने उसीके मुँहकी ओर देखकर किस प्रकार अपनी आत्माको धोखा दिया है! मि० ब्लेकका क्रोध वह अनायास सहन कर ले सकती है, उनकी निष्ठुरताकी वह अविचलित हृदयसे उपेक्षा कर सकती है, किन्तु उनकी इस बिना माँगी उदारतासे तो उसका हृदय एक-बारही अभिभूत हो उठा! उसे बार-बार इच्छा होती, कि जा-कर उनके चरण पकड़, रोते-रोते कहूँ, कि तुम देवता हो, मैं तुम्हारी दासी होने योग्य भी नहीं हूँ!

पर हाय, उन्होंने अमेलियाको एक बात भी कहनेका अवसर नहीं दिया!

इस घटनाके दस-बारह दिन बाद, 'कैनोडियन-मार्बल-डाय्मण्ड कम्पनी'के सेक्रेटरी मि० डिक्सनके पास मि० ब्लेकका भेजा हुआ एक पत्र पहुँचा। अबतक मि० डिलनके खूनीका पता न लगनेके कारण मि० डिक्सन बहुत घबरा रहे थे। इस पत्रमें उस सम्बन्धमें कोई बढ़िया और अनुकूल समाचार लिखा होगा, येही सोचकर उन्होंने झटपट उसे खोलकर पढ़ना आरंभ किया। उसमें लिखा था,—

"प्रिय मि० डिक्सन!

इस पत्रके द्वारा मैं आपको बतला देना चाहता हूँ, कि उस दिन रातको जो युवक मि० डिलनसे मिलने आया था, उसे मैं उनका ख़ूनी नहीं समझता। मैंने उस आदमीका पता लगाया और उससे बातें भी कीं। इससे मुझे मालूम हो गया, कि वह उनका ख़ून करनेके इरादेसे नहीं गया था। मि० डिलनके ख़ूनका दोष उसपर नहीं मढ़ा जा सकता। इस मामलेमें वह मेरी-आपकी तरह निर्दोष है। ऐसी अवस्थामें मैं उसे गिरफ़्तार नहीं कर सकता। मुझे इस बातके पूरे-पूरे प्रमाण मिल गये हैं, कि उसने जो कुछ कहा, वह सब सच कहा है। इसी लिये मैं आप लोगोंसे मिलनेवाले पन्द्रह हज़ार पौण्डोंका दावा एकदम छोड़े देता हूँ।

"मैंने स्काटलैण्ड-यार्डके डिटेक्टिव-इन्स्पेक्टर टामसको लिखा था, कि मैंने इस मामलेकी जाँच-पड़ताल करनी छोड़ दी है। इसके उत्तरमें उन्होंने मुझे लिखा है, कि उन्होंने उस कानके नीचे ज़ख्मके दागवाले युवकका हुलिया तमाम भेजदिया है और उन्हें उम्मीद है, कि वे जल्दीही उसे गिरफ़्तार कर अदालतके सामने हाज़िर कर सकेंगे।

"मुझे अपने देशके क़ायदे-क़ानूनके प्रति यथेष्ट श्रद्धा और विश्वास है; पर मैं किसी मामलेमें अपनी आत्माके विरुद्ध कार्य नहीं करता। इसलिये मैं आप लोगोंकी आशा पूर्ण न कर सका।

"मैंने अपराधीको गिरफ़्तार करनेके लिये आरोपित हत्याके सम्बन्धमें जो सब नोट लिखे थे, उन्हें जलाकर फेंक दिया है।

"आपका विश्वासी,—राबर्ट ब्लेक।"

यह पत्र पढ़कर मि० डिक्सनने बड़ी उदासीके साथ उसे मेज़पर फेंक दिया और बोले,—"जाओ! सब मिहनत बेकार हो गयी। जब मि० ब्लेकने इस मामलेसे हाथ खींच लिया, तब किसकी सामर्थ्य है, जो अपराधीको गिरफ़्तार कर सके?"

मि० ब्लेकने अपराधीको हाथमें पाकर भी क्यों छोड़ दिया, इस बातको स्मिथ तो थोड़ा-थोड़ा समझ गया, पर उनका मीएट-रियलवाला एजेन्ट, फ़िलिप्स, कुछ न समझ सका। बड़ा मग़ज़ मारकर भी वह इस भेदका भण्डाफोड़ न कर सका। विशेषतः उसने जब सुना, कि पैट्रिककी विधवा पत्नीने बेशुमार दौलत लेकर बदलेमें अपना दावा छोड़ दिया है, तब उसे और भी अचम्भा हुआ। पर मि० ब्लेक इससे ज़रा भी विस्मित न हुए। उन्हें जिस बातका अचम्भा हुआ, वह बात शायद किसीके दिमाग़में न आयी होगी!

इस घटनाके बहुत दिन बादतक वे रातको सोयेही-सोये बर्रा उठते थे,—"क्या वह युवक सचमुच उसका भाई है?"

जो हो, न्यू-यार्ककी पुलिसको जब दूसरे दिन यह संवाद मिला, कि मि० ब्लेक फ्लोर-डि-लीज़पर जाकर भी असामीको गिरफ्तार न कर सके, तब दलके-दल सिपाही उस जहाज़की तलाशी और असामीकी गिरफ्तारीके लिये आ इकट्ठे हुए; पर कहीं उस जहाज़का पतातक न मिला। अमेलियाने अपने भाईको क़ानूनके पञ्जेसे बचानेके लिये उसे कहाँ लेजाकर छिपा दिया, यह कोई न जान सका। अमेलिया उसें सब तरहकी विपदसे बचानेके लिये ऐसे गुप्त टापूमें ले गयी, जहाँ युरोपवालों

अमेरिकाकी सरकारोंकी कोई दालही नहीं गल सकती थी। वह टापू सुविशाल समुद्रके किस भागमें था और वहाँ जाकर अमेलियाने कैसे-कैसे लोमहर्षण और असाधारण दुस्साहसके कार्य किये तथा किस प्रकार उसने अपने बहुत दिनोंके सोचे हुए सङ्कल्पोंको पूराकर सारे सभ्य-जगत्में हलचलसी मचादी, वह इसके बादवाले—

—या—

हवाई जहाज़

नामक सचित्र उपन्यासको पढ़नेपर पाठकगण आपही जान जायेंगे।